मुक्तिदाता येशु की जीवन-कहानी

का शिष्य योहन द्वारा वर्णन

1

शब्द से सभी को मोक्ष और प्रकाश मिल सकता है

1 आरंभ में शब्द था* और शब्द परमात्मा* के साथ था और शब्द
परमात्मा था*। 2 यही शब्द आरंभ से परमात्मा के साथ था। 3-4 शब्द के
द्वारा सब कुछ बना और शब्द के बिना एक भी चीज़ नहीं बनी। शब्द से
मोक्ष* की धारा बहती थी, और इस मोक्ष की धारा का प्रकाश पूरी
मानवजाति के लिए था। 5 ज्योति अंधकार में प्रकाश देती रही, और

---

*1:1 ***आरंभ में शब्द था*** -- यहूदी पवित्र शास्त्र में लिखा है कि परमात्मा ने अपने शब्द द्वारा और अपनी सनातन बुद्धि द्वारा इस सृष्टि की रचना की (उत्पत्ति 1; बुद्धि 8:22-31)। इसी मुक्तिदाता येशु ग्रंथ में, परमात्मा के शब्द और सनातन बुद्धि प्रभु येशु के मानवीय रूप में प्रकट होते हैं (योहन 1:14-18; दिव्य प्रकाशन 19:13;1 कुरिंथियों 1:24) प्रभु येशु की मृत्यु के बाद, उनके जीवित होने और परमात्मा के दाहिने हाथ पर सम्मान के स्थान पर उनकी पदोन्नति के बाद, उनके शिष्यों को समझ में आया कि वह शुरू से ही वहां थे, और एक जिनके माध्यम से परमात्मा ने सब चीज़ों को बनाया (योहन 1:15, 30; 17:21; कुलुसियों 1:15-16; 1कुरिंथियों 8:6; इब्रानी 1:1-3)।

*1:1 ***परमात्मा*** -- परमात्मा और परमेश्वर -- ये दो शब्द एकमात्र अदृश्य, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के लिए कहे गए हैं।

*1:1 ***शब्द परमात्मा था*** -- या “शब्द दिव्य था” या “शब्द पूरी तरह से परमात्मा था”

*1:3-4 ***मोक्ष*** -– यथाशब्द “ज़ोई” है, जिसे अक्सर “जीवन” के रूप में अनुवादित किया जाता है। लेकिन शिष्य योहन द्वारा इस संदर्भ में और इस पूरे विवरण में इस शब्द का अर्थ “अनंत जीवन” या “मोक्ष” है।”

अंधकार की शक्तियाँ उसे बुझा न सकीं।*

परमात्मा का गुरु योहन को एक काम सौंपा

6 परमात्मा ने एक मनुष्य को भेजा जिसका नाम योहन* था। 7 गुरु योहन
प्रकाश के बारे में दूसरों को गवाही देने आए थे ताकि उनकी गवाही द्वारा
सब लोग प्रकाश पर विश्वास करें। 8 वह स्वयं ज्योति नहीं थे, किंतु
ज्योति के बारे में गवाही देने आए थे।

मुक्तिदाता येशु की महानता

9 सच्ची ज्योति, जो हर एक व्यक्ति को प्रकाशित करती है, संसार में आ
रही थी। 10 वह संसार में थे और संसार उसके द्वारा बनाया गया, किंतु
संसार के लोगों ने उसको नहीं पहचाना। 11 वह अपनी जगह में आए,
परंतु उनके अपनों ने ही उनको नहीं अपनाया। 12 फिर भी कुछ लोगों ने
उन्हें स्वीकार किया और उन पर आस्था प्रकट की। इसलिए उन्होंने उन्हें
परमात्मा के बेटे-बेटियाँ बनने की योग्यता दी। 13 इनका जन्म न तो
माता-पिता के शारीरिक संबंध से* हुआ और न ही किसी मानवीय इच्छा

---

*1:5 *उसे बुझा न सकीं* -- या, “उसको समझ नहीं पाए”

*1:6 *योहन* -- यह गुरु योहन, “जल-संस्कार दाता योहन” भी कहलाए जाते हैं। गुरु योहन और प्रभु येशु के शिष्य और राजदूत योहन दो अलग-अलग व्यक्ति थे -- राजदूत योहन इस पुस्तक के लेखक है, पर गुरु योहन एक शक्तिशाली यहूदी गुरु और दिव्य ज्ञानी थे। गुरु योहन साधु के समान कपड़े पहनते थे और बंजर स्थान में रहते थे। वह उन लोगों को जल-संस्कार दिया करते थे जो पाप का मार्ग छोड़ना चाहते थे। वह मुक्तिदाता येशु के रिश्तेदार थे और उनसे छ: महीने बड़े थे। राजा हेरोदेस की अनैतिकता के विरुद्ध बोलने के कारण राजा हेरोदेस ने उनका सर कटवा दिया (मत्तिया 14:1-11)।

*1:13 *न तो माता-पिता के शारीरिक संबंध से*- मूल ग्रन्थ के यथाशब्द अनुवाद में, “न तो खून से” जो प्राचीन मान्यता से आ सकता है कि भ्रूण पिता और माता के खून से बनाया गया था।

से, परंतु परमात्मा ने इन बेटे-बेटियों को आत्मिक जन्म दिया।
14 शब्द ने मनुष्य बन कर हमारे बीच निवास किया।* हमने उनका तेज
देखा -- पिता परमात्मा के अनोखे दिव्य* पुत्र का तेज। यह पुत्र कृपा और
सत्य का सागर है।
15 गुरु योहन ने उनके बारे में गवाही दी और ऊँची आवाज़ में कहा,
“यह वही है जिनके बारे में मैंने बताया था कि वह आएँगे! वह मुझ से
महान हैं, क्योंकि जब मेरा जन्म भी नहीं हुआ था वह मौजूद थे।”
16 हम सबने उनके दया के सागर से एक के बाद एक कृपा प्राप्त की।
17 जैसे कि परमात्मा ने गुरु मोशे द्वारा नियम-शास्त्र दी,* उसी प्रकार
परमात्मा ने मुक्तिदाता येशु* द्वारा कृपा और सत्य दिए। 18 परमात्मा को

---

*1:14 *शब्द ने मनुष्य बन कर हमारे बीच निवास किया* -- परमात्मा-शब्द (अर्थात् गुरु येशु) ने आज से लगभग 2000 साल पहले इस पृथ्वी पर “अस्थाई निवास” बनाया। उन्होंने इस्राएल देश की भूमि पर 33 साल तक अपना शरीर-रुपी तंबू लगाया। इससे बहुत साल पहले (गुरु मोशे के समय में) तंबू से बना मंदिर यहूदी लोगों के लिए बहुत विशेष था। तंबू का मंदिर समुदाय का केंद्र था, इससे परमात्मा के तेज को प्रकाश मिलता और यह ऐसा स्थान था जहाँ लोग परमात्मा से मिल सकते थे। इसी प्रकार जब प्रभु येशु इस पृथ्वी पर आए, वह परमात्मा के लोगों का केंद्र बन गए और उनसे मिलना परमात्मा से मिलना जैसा था।

*1:14 *पिता परमात्मा के अनोखे दिव्य पुत्र* -- (या “परमात्मा के एकमात्र पुत्र”)। यहूदी लोगों ने परमात्मा-पुत्र शब्द अपने अभिषिक्त राजा के लिए उपयोग किया। राजा मसीहा प्रभु येशु अनोखे और दिव्य हैं, क्योंकि परमात्मा ने पूरा अधिकार उनको दे दिया है। वह सनातन हैं और हमेशा तक रहेंगे और शासन करेंगे। (भजन 2:7, लूकस 1:32, योहन 5:22, 8:58, 12:34,17:5)

*1:17 *गुरु मोशे वारा नियम-शास्त्र दी*-- गुरु मोशे के काल में (1500 बी.सी.ई.) यहूदी लोगों को मिस्र देश की गुलामी से मुक्त करने के बाद परमात्मा ने अपनी कृपा से यहूदी लोगों को आज़ाद जीवन बिताने के लिए नियम-शास्त्र दी।

*1:17 *मुक्तिदाता येशु*-- (या, येशु जो राजा-मसिहा हैं) मुक्तिदाता येशु का जन्म 2025 साल पहले (4 BCE) इस्राएल देश में हुआ था। परमात्मा ने उन्हें दुनिया के सभी लोगों पर कृपा,

किसी ने कभी नहीं देखा है, परंतु अनोखे दिव्य पुत्र* ने जो पिता परमात्मा के कलेजे का टुकड़ा है, उन्होंने परमात्मा को प्रकट किया है।

"मैं वह नहीं जिसका तुम्हें इंतजार था"

मत्तिया 3:1-12; मरकस 1:1-8; लूकस 3:1-20

19 गुरु योहन की गवाही यह है जब यरूशलेम महानगर से यहूदी
धर्मगुरुओं ने पुरोहित और लेवी-वंश के मंदिर-सेवादार भेजे कि उनसे
पूछें, "आप कौन हैं?" 20 तब गुरु योहन ने स्पष्ट रूप से कहा, "मैं राजा
मसीहा* नहीं हूँ।"
21 उन लोगों ने गुरु योहन से पूछा, "तो फिर आप कौन हैं? क्या आप
दिव्य ज्ञानी* एलिया* हैं?"

सच्चाई, मुक्ति और मोक्ष की छाया करने के लिए भेजा।

*1:18 *अनोखे दिव्य पुत्र* -- कुछ हस्तलिपियों में "अनोखे पुत्र" लिखा है और कुछ हस्तलिपियों में "अनोखे परमात्मा" लिखा है।

*1:20 *राजा मसीहा* -- (या, मुक्तिदाता) यहूदी पवित्र शास्त्र और सारा यहूदी इतिहास भविष्य के राजा मसीहा से आस लगाए हुए हैं। यह राजा मसीहा जो परमात्मा से मुक्ति, आशीष देने और दुनिया पर शासन करने का अभिषेक और शक्ति प्राप्त करेंगे। केवल मुक्तिदाता येशु ही इस उपाधि के योग्य हैं।

*1:21 *दिव्य ज्ञानी* -- ("नबी," "भविष्यवक्ता" और "ऋषि" के नाम से भी जाने जाते हैं)। इन यहूदी पुरूषों और महिलाएँ को परमात्मा ने विशिष्ट रूप से प्रेरित किया और दिव्य दर्शन दिखाया कि उनका सत्य संदेश लोगों को सुनाएँ। यहूदी पवित्र शास्त्र में गुरु मोशे और एलिया दो मुख्य यहूदी दिव्य ज्ञानी थे। पवित्र शास्त्र और मुक्तिदाता येशु ग्रंथ में 55 से ज़्यादा दिव्य ज्ञानी पाए जाते हैं।

*1:21 *एलिया* -- प्रभु येशु के जन्म से 800 साल पहले यहूदी दिव्य ज्ञानी एलिया अधर्म को बढ़ावा देने वाले राजा को निर्भीक रूप से फटकारने के लिए जाने जाते थे। इसके साथ-साथ उनकी शक्तिशाली प्रार्थना सुनकर परमात्मा ने एक मृत व्यक्ति को जीवित कर दिया था। एलिया का जब मरने का समय आया तो परमात्मा-लोक से एक अग्नि रथ आया और वह उसमें बैठ कर चले गए। यहूदी लोगों का यह भी मानना था कि दिव्य ज्ञानी एलिया अच्छे और

गुरु योहन ने कहा, “नहीं।”
“तो क्या आप वह दिव्य ज्ञानी हैं जिनका हम इंतज़ार कर रहे थे?”*
उन्होंने उत्तर दिया “नहीं।”
22 “तो फिर आप कौन हैं? हमें बताइए कि हम अपने भेजने वालों को
उत्तर दे सकें। आप अपने बारे में क्या कहते हैं?”
23 गुरु योहन बोले, “जैसा दिव्य ज्ञानी यशाया ने कहा था,
‘मैं बंजर स्थान में पुकारने वाले की आवाज़ हूँ, जो यह पुकारता है --
परमेश्वर के स्वागत के लिए अपने मनों को तैयार करो।’” *
24 फैरीसी धार्मिक पंथ* के कुछ लोग भी वहाँ भेजे गए थे। 25 उन्होंने
पूछा, “यदि आप राजा मसीहा नहीं हैं, दिव्य ज्ञानी एलिया नहीं हैं और न
वह दिव्य ज्ञानी जो आने वाले थे, तो फिर आप जल-संस्कार क्यों देते
हैं?”
26 गुरु योहन ने उत्तर दिया, “मैं केवल पानी में जल-संस्कार देता हूँ।
परंतु तुम्हारे बीच एक व्यक्ति आया है जिसे तुम नहीं पहचानते की वह
कौन हैं। 27 जो मेरे बाद आने वाले थे, वह आ गए हैं। मैं उनके चरणों की

बुरे कर्मों के अंतिम न्याय के दिन फिर आएँगे (मलाकी 4)। इसलिए लोगों ने गुरु योहन से पूछा कि वह एलिया हैं या नहीं।

*1:21 *जिनका हम इंतज़ार कर रहे थे* -- यहूदी लोग गुरु मोशे के समान एक दिव्य ज्ञानी का इंतज़ार कर रहे थे जिसकी भविष्वाणी उनके नोयम शास्त्र (उपदेश 18:15 में) की गई थी। यह दिव्य ज्ञानी यहूदियों में से होंगे, परमात्मा के शब्द बोलेंगे और सबको उनको सुननें की ज़रूरत है। प्रभु येशु ही वह दिव्य ज्ञानी थे (राजदूतों 3:22 देखें)।

*1:23 यशाया 40:3

*1:24 *फैरीसी धार्मिक पंथ* -- प्रभु येशु के काल में फैरीसी कट्टर यहूदी धार्मिक पंथ था। उनका मानना था कि वे आम यहूदी लोगों से अधिक धार्मिक हैं। फैरीसी गुरु मोशे द्वारा लिखे नियम-शास्त्र और अपनी परंपराओं का कट्टरता से पालन करते थे। वे आमतौर पर प्रभु येशु का विरोध करते थे।

धुल के बराबर भी नहीं हूँ।” 28 यह बातचीत यरदन नदी के पार बैतनिया
गाँव* में हुई, जहाँ गुरु योहन जल-संस्कार दे रहे थे।

पाप से शुद्धी

29 दूसरे दिन गुरु योहन ने जब प्रभु येशु को अपनी ओर आते देखा तो वे
बोले,

देखो, यह परमात्मा का विशेष भेड़* है जो संसार के लोगों को
उनके पापों से शुद्ध करता है! 30 यह वही हैं जिनके बारे में मैंने कहा
था, ‘मेरे बाद एक व्यक्ति आ रहे हैं जो मुझसे महान हैं, क्योंकि जब
मेरा जन्म भी नहीं हुआ था वह मौजूद थे।’ 31 पहले मैंने भी उन्हें नहीं
पहचाना था, परंतु अब पहचानता हूँ। मैं पानी द्वारा जल-संस्कार
देता हूँ ताकि इस्राएल के लोग उन्हें पहचान सकें।
32 मैंने परमात्मा की पवित्र आत्मा को परमात्मा-लोक से कबूतर
के जैसे उतरते देखा और पवित्र आत्मा उन पर ठहर गया। 33 मैं
उनको नहीं पहचानता था, परंतु जिन्होंने मुझे जल-संस्कार देने भेजा
था, उन्होंने मुझे बताया, “जिन पर तुम परमात्मा की पवित्र आत्मा
उतरते और ठहरते देखो, वह वही हैं जो तुमको पवित्र आत्मा देंगे।”
34 मैंने स्वयं ऐसा होते हुए देखा है और मेरी गवाही है कि यही
परमात्मा-पुत्र** हैं।

---

*1:28 ***बैतनिया गाँव*** -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “बैताबारा” गाँव लिखा है।

*1:29 ***विशेष भेड़*** -- (या “विशेष मेमना”) यरूशलेम महानगर मंदिर में लोग मुक्ति-उत्सव के अवसर पर पुरोहित के द्वारा निष्कलंक भेड़ (मेमना) बलि किया करते थे। गुरु येशु ने एक निष्पाप सिद्ध जीवन बिताया जिसके कारण वह न केवल यरूशलेम महानगर के लोगों के लिए बल्कि सब मानवजाति के लिए एक विशेष बलि सिद्ध हुए और उन्होंने संसार के पापों को हर लिया।

*1:34 ***परमात्मा-पुत्र*** -- यह परमात्मा के राजवंशी पुत्र की व्याख्या है जिसकी भविष्यवाणी

गुरु योहन से मुक्तिदाता येशु की ओर

35 अगले दिन फिर गुरु योहन अपने दो शिष्यों के साथ वहाँ थे। 36 गुरु
योहन ने प्रभु येशु को पास से जाते हुए देखकर कहा, “देखो, परमात्मा
की विशेष भेड़!” 37 उन दोनों शिष्यों ने गुरु योहन को यह कहते सुना तो
वे प्रभु येशु के पीछे हो लिए। 38 जब प्रभु येशु मुड़े और उनको अपने पीछे
आते देखा, तब उनसे पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”
उन्होंने कहा, “गुरुजी,* आप कहाँ रहते हैं?”
39 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “आओ और देखो।” तब उन्होंने जाकर गुरु
येशु का निवास स्थान देखा और उस दिन वे दोनों उनके साथ रहे। उस
समय शाम के लगभग चार बजे थे।
40 उन दोनों में से एक, जो गुरु योहन की बात सुनकर प्रभु येशु के पीछे
हो लिया था, शिमौन पतरस का भाई अन्द्रेयास था। 41 तब सबसे पहले
अन्द्रेयास ने अपने भाई शिमौन को खोजकर उसे बताया, “हमें राजा
मसीहा मुक्तिदाता* मिल गए हैं!”
42 फिर अन्द्रेयास शिमौन को प्रभु येशु के पास लाया। प्रभु येशु ने शिमौन
से देख कर कहा, “तुम योहन के पुत्र* शिमोन हो, तुम केफस-पतरस*
कहलाओगे।”
43 दूसरे दिन गुरु येशु ने गलील प्रदेश जाने का निश्चय किया। वहाँ वह

1000 साल पहले भजन शास्त्र में कर दी गई थी -- “तुम मेरे पुत्र हो...” (भजन शास्त्र 2:7-8)।

*1:34 *परमात्मा-पुत्र* -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “परमात्मा के चुने हुए जन” लिखा है।

*1:38 *गुरुजी* -- मूल ग्रन्थ के यथाशब्द अनुवाद में, “रब्बी, अर्थात् गुरुजी।”

*1:41 *राजा मसीहा, मुक्तिदाता* -- यथाशब्द अनुवाद में राजा मसीहा, अर्थात् मुक्तिदाता।

*1:42 *योहन के पुत्र* -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “योना के पुत्र” लिखा है।

*1:42 *केफस-पतरस* -- “केफस” और “पतरस” दोनों नाम का अर्थ “पत्थर” है

फिलिपस से मिले और उन्होंने उससे कहा, “मेरे पीछे चलकर मेरे शिष्य
बनो।” 44 फिलिपस बैतसैदा नगर का निवासी था जहाँ अन्द्रेयास और
पतरस भी रहते थे। 45 फिलिपस नतनएल से मिला और बोला, “जिनके
बारे में गुरु मोशे की नियम-शास्त्र में लिखा गया है और दिव्य ज्ञानीयों ने
भी लिखा है, योसफ के पुत्र नासरत-निवासी येशु, हमें मिल गए हैं!”
46 नतनएल ने उत्तर दिया, “क्या नासरत नगर से कुछ अच्छा मिल
सकता है?”
फिलिपस ने उत्तर दिया, “आओ, और स्वयं देख लो।”
47 जब गुरु येशु ने नतनएल को आते देखा, तो उन्होंने नतनएल के बारे
में कहा, “यह एक सच्चे इस्राएल देश का पुत्र है। इस व्यक्ति में कोई
छल-कपट नहीं है।”
48 नतनएल ने हैरान होकर पूछा, “आप मुझे कैसे जानते हैं?”
गुरु येशु ने कहा, “मैंने तुम्हें फिलिपस के बुलाने से कुछ समय पहले
दर्शन में देखा था जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे* बैठे थे।”
49 नतनएल बोल उठा, “गुरुजी! आप वास्तव में परमात्मा-पुत्र हैं! आप
इस्राएल के राजा हैं!”
50 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “क्या तुम मुझ पर आस्था सिर्फ़ इसलिए
रखना चाहते हो कि मैंने तुमसे कहा कि मैंने तुम्हें देख लिया था जब तुम
अंजीर के पेड़ के नीचे ही थे? तुम इससे भी अधिक बड़े-बड़े काम होते
देखोगे।” 51 प्रभु येशु ने यह भी कहा, “मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ,

---

*1:48 ***अंजीर के पेड़ के नीचे*** -- इस घटना के लगभग 500 साल पहले, यहूदी दिव्य ज्ञानी जकरया ने अंजीर के पेड़ के नीचे बैठकर यह भविष्यवाणी लिखी कि जब परमेश्वर अपने सेवक को भेजेंगे तो वह एक दिन उस देश के अधर्म को दूर करेगा (जकरया जकरया 3:8-10)। शायद नतनएल इस भविष्यवाणी को जानता था, इसलिए प्रभु येशु के शब्दों को सुनकर वह हैरान रह गया।

तुम सब परमात्मा-लोक को खुला हुआ और परमात्मा के दूतों* को
तेजस्वी मानव-पुत्र* पर से ऊपर जाते और उन पर से उतरते हुए
देखोगे।"*

2

शादी समारोह में चमत्कार

[1] दो दिन बाद गलील प्रदेश के काना नगर में शादी थी। गुरु येशु की माँ
वहाँ थीं। [2] गुरु येशु और उनके शिष्य भी शादी में निमंत्रित थे।

---

*1:51 ***परमात्मा के दूत*** -- (स्वर्ग-दूत, फरिश्ते, और परमेश्वर के दूत भी कहा जाता है) इसका अर्थ है परमात्मा-लोक में आत्माएँ (मनुष्य नहीं) जो कभी-कभी मानव का रूप धारण कर लेते हैं। उनके बहुत-से कार्यों में परमात्मा का संदेश लोगों तक पहुँचाना और अलग-अलग तरीके से लोगों की मदद करना भी शामिल है।

*1:51 ***तेजस्वी मानव-पुत्र*** -- गुरु येशु अपने लिए शीर्षक "मानव-पुत्र" का प्रयोग भी करते थे। भजन शास्त्र में इस शीर्षक का संबंध तेजस्वी अधिकार से है जो परमात्मा ने मानव को दिया है (भजन शास्त्र 8:4-5) और विशेषतः उन एक "मानव-पुत्र" के लिए जो परमात्मा-लोक से आएँगे और परमात्मा ने उन्हें आदर और तेज प्रदान किया है ताकि संसार के सब लोग उनकी आज्ञा का पालन करें (दानिएल 7:13-14)।

*1:51 ***परमात्मा-लोक को खुला हुआ और परमात्मा के दूतों को तेजस्वी मानव-पुत्र पर से उतरते और उन पर से ऊपर जाते हुए*** -- प्रभु येशु की यह बात कुलपिता अब्राहम के पोते याकोब के सपने के बारे में है। सपने में याकोब ने देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी से परमात्मा-लोक तक जा रही है जिस पर परमात्मा-दूत ऊपर नीचे आ-जा रहे हैं। फिर परमेश्वर ने याकोब से बात की कि उसके द्वारा उसका परिवार और संसार के सब परिवार आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 28:10-15 देखें)। नतनएल और जो लोग वहाँ पर थे उनसे प्रभु येशु व्याख्या कर रहे हैं कि तेजस्वी मानव-पुत्र स्वयं वह "सीढ़ी" हैं जो पृथ्वी से परमात्मा-लोक तक जा रही है। बाद के अध्यायों में प्रभु येशु यह बताएँगे कि जब वह उठाए जाएँगे (सूली पर चढ़ाए जाएँगे) वह बहुत-से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेंगे (योहन 12:32-33)। परमात्मा और परमात्मा-लोक तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग वही हैं (योहन 14:6)। (योहन 14:6)।

3 अंगूर-रस* खत्म होने पर गुरु येशु की माँ ने उनसे कहा, “उनके पास
अंगूर-रस नहीं है।”
4 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “माताजी, आप मुझे यह क्यों बता रही हैं?
अभी समय नहीं आया कि मैं अपनी शक्ति दिखाऊँ।”
5 उनकी माँ सेवकों से बोलीं, “जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।”
6 वहाँ यहूदी शुद्धिकरण रीति में इस्तेमाल लाने के लिए छः घड़े रखे थे।
हर एक घड़े में लगभाग 100 लीटर पानी रखा जा सकता था। 7 प्रभु येशु
ने सेवकों से कहा, “घड़ों में पानी भर दो।” सेवकों ने घड़ों को मुँह तक
पानी से भर दिया। 8 तब गुरु येशु बोले, “अब कुछ पानी निकालकर भोज
प्रबंधक के पास ले जाओ।” सेवकों ने वैसा ही किया। 9 जब प्रबंधक ने
वह पानी चखा तो वह पानी अंगूर-रस बन गया था। पर वह नहीं जानता
था कि यह रस कहाँ से आया है किंतु सेवक, जिन्होंने पानी निकाला था,
जानते थे। तब प्रबंधक ने दूल्हे को बुलाया 10 और उससे कहा, “सब
लोग अपने मेहमानों को शुरुआत में सबसे अच्छा रस परोसते हैं और
सबके अच्छी तरह रस पी लेने के बाद साधारण रस देते हैं। पर तुमने तो
अच्छा रस अब तक बचा रखा है!”
11 इस प्रकार गलील प्रदेश के काना नगर में गुरु येशु ने अपने
परमात्मा-पुत्र होने की चमत्कारी निशानियाँ और तेज दिखाने की शुरुआत
की। वहाँ उनके शिष्यों ने उन पर आस्था प्रकट की।
12 इसके बाद गुरु येशु, उनकी माता और उनके भाई और शिष्य
कफरनहूम नगर गए और उन्होंने वहाँ कुछ दिन निवास किया।

---

*2:3 ***अंगूर-रस*** -- उस समय यहूदी लोगों के लिए खुशी के अवसर पर अंगूर-रस (वाइन) को भोजन के साथ परोसना एक आम बात थी। परंतु अधिक मात्रा में इसको पीने और पियक्कड़पन के यहूदी लोग और प्रभु येशु खिलाफ थे (बुद्धि 23:30; लूकस 21:34)।

तीन दिन में मंदिर का निर्माण

मत्तिया 21:12-17; मरकस 11:15-19; लूकस 19:45-48

13 यहूदियों का मुक्ति-उत्सव* नज़दीक आने पर गुरु येशु यरूशलेम
महानगर को गए। 14 वहाँ उन्होंने यहूदी मंदिर* के आँगन में बलि के लिए
बैल, भेड़ और कबूतर बेचने वालों और मुद्रा व्यापारियों को बैठे देखा।
15 तब गुरु येशु ने रस्सियों का कोड़ा बनाया* और भेड़ों और बैलों सहित
सबको मंदिर से खदेड़ दिया। प्रभु येशु ने व्यापारियों की मुद्राएँ बिखेर दीं
और उनकी गद्दियाँ उलट दीं। 16 वह कबूतर बेचने वालों से बोले, "इन्हें
यहाँ से ले जाओ। मेरे पिता परमात्मा के भवन को व्यापार की मंडी मत
बनाओ।"

17 फिर शिष्यों को याद आया कि पवित्र शास्त्र में लिखा है, "मेरे लिए
आपका मंदिर बहुत महत्वपूर्ण है -- इसके आदर-सम्मान के लिए मैं कुछ
भी कर सकता हूँ।" *

18 वहाँ खड़े कुछ यहूदी धर्मगुरु बोले, "आप हमें ऐसा कौन-सा
चमत्कारी चिन्ह दिखाएँगे जिससे साबित हो जाए कि आप को ये सब

---

*2:13 *यहूदी मुक्ति-उत्सव* -- मुक्ति-उत्सव (जिसे "पासोवर" भी कहा जाता है) यहूदियों का सबसे प्रमुख उत्सव है। हर साल वे यह उत्सव इस बात को याद करके मनाते हैं कि किस तरह परमेश्वर ने उन्हें गुरु मोशे के माध्यम से मिस्र देश की गुलामी से आज़ाद कराया था।

*2:14 *यहूदी मंदिर* -- यरूशलेम महानगर में यहूदी मंदिर निराकार और अदृश्य परमात्मा की भक्ति के लिए समर्पित था। इसमें कोई मूर्ति नहीं होती थीं। केवल पुरोहितों को ही मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति थी। आम लोग वहां पुरोहित के पास पशु और भेंट अर्पण के लिए लाते थे। जो लोग परेशानी में होते थे या जिन्होंने पाप किया था, वे मंदिर प्रांगन में आ सकते थे और प्रार्थना कर सकते थे।

*2:15 *रस्सियों का कोड़ा बनाया*-- कुछ हस्तलिपियों में "रस्सियों के कोड़े जैसा बनाया" लिखा गया है

*2:17 भजन शास्त्र 69:9

काम करने का अधिकार है?”
19 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “इस मंदिर को गिरा दो और मैं इसे तीन दिन
में फिर खड़ा कर दूँगा।”
20 धर्मगुरु बोले, “इस मंदिर के निर्माण में छियालीस साल लगे हैं। क्या
आप इसको तोड़कर तीन दिन में फिर खड़ा कर देंगे?” 21 परंतु गुरु येशु
अपने शरीर-रूपी मंदिर के बारे में कह रहे थे। 22 बाद में, जब प्रभु येशु
मरकर जीवित हो उठे तब उनके शिष्यों को याद आया कि उन्होंने ऐसा
कहा था। तब शिष्यों ने पवित्र शास्त्र के लेख पर, और उन शब्दों पर जो
गुरु येशु ने कहे थे, विश्वास किया।

अंतरयामी प्रभु येशु

23 जब गुरु येशु यरूशलेम महानगर में थे, तब मुक्ति-उत्सव के समय पर
बहुत लोगों ने उन चमत्कारी चिन्हों को जिन्हें वह दिखाते थे देखकर
उनके नाम में विश्वास किया। 24 परंतु गुरु येशु ने उन पर भरोसा नहीं
किया, क्योंकि वह लोगों की नीयत को जानते और 25 उनको इसकी
जरूरत नहीं थी कि कोई उन्हें लोगों के बारे में बताए, क्योंकि उन्हें स्वयं
पता था कि लोगो के मन में क्या चल रहा है।

3

नए जन्म का रहस्य

1 निकोदेमस नामक एक व्यक्ति जो फैरीसी धार्मिक पंथ और यहूदी
धर्म-महासभा* का सदस्य था। 2 रात में गुरु येशु के पास आया और उनसे

*3:1 *यहूदी धर्म-महासभा* -- यहूदी धर्म-महासभा यहूदी लोगों की सर्वोच्च कानून बनाने और न्यायिक समिति थी।

बोला, “गुरुजी, हम जानते हैं कि आप परमात्मा की ओर से गुरु बन कर आए हैं, क्योंकि यदि परमात्मा साथ न हो तो जो चमत्कारी चिन्ह आप दिखाते हैं, उन्हें कोई नहीं दिखा सकता।”
3 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं आप पर सत्य प्रकट करता हूँ -- जब तक
किसी का परमात्मा द्वारा नया जन्म* न हो, तब तक वह परमात्मा के
साम्राज्य को पहचान ही नहीं सकता।”
4 निकोदेमस ने पूछा, “जब कोई बड़ा हो जाता है तो वह दोबारा कैसे
जन्म ले सकता है? क्या वह फिर अपनी माता के गर्भ में जाकर जन्म ले
सकता है?”
5 गुरु येशु ने उत्तर दिया,

मैं आप पर सत्य प्रकट करता हूँ कि जब तक किसी का पानी
और पवित्र-आत्मा से नया जन्म* न हो तब तक वह परमात्मा के
साम्राज्य में कोई स्थान नहीं प्राप्त कर सकता। 6 जो शरीर से जन्मा
है, वह शारीरिक है और जो पवित्र-आत्मा से जन्मा है, वह आत्मिक
है। 7 जब मैं कहता हूँ कि आप लोगों को इसी तरह के दोबारा जन्म
लेने की ज़रूरत है तो हैरान मत होइए। 8 हवा जिस ओर चाहती है

---

*3:3 *नया जन्म* -- नया जन्म एक आत्मिक जन्म है जो परमात्मा का अपने भक्तों को उपहार है। इंसान का पहला जन्म शारीरिक है। इसी जीवन में उसका दूसरा जन्म होता है जब भक्त मुक्तिदाता येशु पर आस्था रखता है (योहन 1:12-13 देखें)। आत्मिक जन्म लेने का अर्थ -- परमात्मा द्वारा एक परिवर्तित जीवन है और इसी संसार में रहते हुए मोक्ष के अनुभव की शुरुआत करना है।

*3:5 *पानी और पवित्र-आत्मा से नया जन्म न हो* -- प्रभु येशु उस भविष्यवाणी के बारे में कह रहे थे जो यहूदी दिव्य ज्ञानी यहेजकेल के द्वारा बहुत साल पहले की गई थी। इस में परमात्मा ने प्रतिज्ञा की थी कि वह एक दिन लोगों पर पानी की फुहार करेंगे और उन्हें उनके पापों से शुद्ध करेंगे तथा अपनी पवित्र-आत्मा उनमें भरेंगे (यहेजकेल 36:25-27)।

उस ओर बहती है। आप उसकी आवाज़ सुनते हैं, पर नहीं जानते
कि वह कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है। तो पवित्र-आत्मा
से जन्मा* हर व्यक्ति पवित्र-आत्मा का अनुभव हवा के समान
करता है।
9 निकोदेमस ने कहा, “यह कैसे हो सकता है?”
10 गुरु येशु ने उत्तर दिया,
आप इस्राएल के लोगों के धर्मगुरु हैं, फिर भी आप इन बातों को
नहीं समझते? 11 मैं आप पर सत्य प्रकट करता हूँ -- हमने उन बातों
को बताया जो हम जानते हैं और जो हमने देखी हैं, पर आप लोग
हमारी बातों पर विश्वास नहीं करते। 12 जब मैंने आपसे पृथ्वी की
बातें कहीं और आप उन पर विश्वास नहीं कर रहे हैं, तो फिर यदि
मैं परमात्मा-लोक की बातें कहूँ तो कैसे विश्वास करेंगे?
13 कोई परमात्मा-लोक नहीं गया है, केवल तेजस्वी मानव-पुत्र ही,
जो परमात्मा-लोक से उतरा है।* 14 “जैसे गुरु मोशे ने बंजर स्थान में
काँस्य का साँप* खंभे पर ऊँचा उठाया था, उसी प्रकार तेजस्वी

---

*3:8 *पवित्र-आत्मा से जन्मे* -- जैसे हम हवा को महसूस कर सकते हैं लेकिन उसके बारे में समझा नहीं सकते उसी तरह पवित्र-आत्मा से जन्म को अनुभव कर सकते हैं पर समझाना कठिन है। पवित्र-आत्मा से जन्मा व्यक्ति उसके फलों से पहचाना जा सकता है (गलातियों 5:21,22)।

*3:13 *जो परमात्मा-लोक से नीचे उतरा है* -- इस वाक्य के बाद कुछ हस्तलिपियों में “और जो परमात्मा-लोक में है” जोड़ा गया है।

*3:14 *काँस्य का साँप* -- कई सौ साल पहले, लोगों ने परमात्मा और गुरु मोशे के विरुद्ध पाप किया था। फिर भी गुरु मोशे ने परमात्मा से विनती की कि जो साँप परमात्मा ने उनके पाप के परिणाम स्वरूप भेजे हैं, उनसे लोगों की जान बचाएं। परमात्मा ने मोशे से कहा कि वह एक काँस्य का साँप बनाए और ऊँचे पर लटका दे ताकि जो उसे देखे वह बच जाए (जनगणना 21:8,9)।

मानव-पुत्र का ऊँचा उठाया जाना ज़रूरी है, 15 जो कोई उन पर
आस्था रखेगा मोक्ष पाएगा।*
16 तो परमात्मा ने संसार के लोगों से ऐसा प्रेम किया कि अपना
अनोखा दिव्य पुत्र* बलिदान के रूप में दे दिया ताकि जो कोई पुत्र
पर आस्था रखता है उसका विनाश नहीं होगा, परंतु वह मोक्ष
पाएगा। 17 परमात्मा ने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि पुत्र
संसार को दंड दें, परंतु इसलिए भेजा कि वह संसार के लोगों को
मोक्ष* दें। 18 जो कोई पुत्र पर आस्था रखता है, वह दंड का भागी
नहीं होगा। परंतु जो कोई आस्था नहीं रखता है उसपर दंड की
घोषणा हो चुकी है, क्योंकि उसने परमात्मा के अनोखे दिव्य पुत्र के
नाम पर आस्था नहीं रखी।
19 दोषी होने का कारण यह है -- ज्योति संसार में आई है, परंतु
लोगों ने ज्योति के मुकाबले अंधकार से अधिक प्रेम किया, क्योंकि
उनके काम बुरे थे। 20 हर एक व्यक्ति जो गलत काम करता है
ज्योति से नफरत करता है। वह ज्योति के निकट नहीं आता कि
कहीं उसके गलत काम प्रकट न हो जाएँ। 21 परंतु सच्चाई पर चलने
वाला व्यक्ति ज्योति की ओर आता है, जिससे दूसरे लोग देख सकें
कि वह परमात्मा की इच्छा के अनुसार जीवन बिता रहा है।

---

*3:15 *पाएगा* -- संभवतः प्रभु येशु की बातें यहाँ पर समाप्त होती हैं।

*3:16 *अनोखा दिव्य पुत्र* -- या “एकमात्र पुत्र”

*3:17 *मोक्ष* -- जिनकी आस्था मुक्तिदाता येशु में हैं, इस संसार में रहते हुए ही परमात्मा के साथ गहरा संबंध रखने से उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जाता है परंतु मोक्ष का सम्पूर्ण अनुभव मृत्यु के बाद होता है। यह पाप और मृत्यु के बंधन से आज़ाद जीवन है और जिसको परमात्मा हमें उपहार के रूप में देते हैं।

गुरु योहन की गवाही

22 इसके बाद गुरु येशु अपने शिष्यों के साथ यरूशलम महानगर
छोड़कर यहूदिया प्रदेश में आ गए और वहाँ शिष्यों के साथ रहकर लोगों
को जल-संस्कार* दिया। 23 गुरु योहन भी शालेम नगर के पास एनोन गाँव
में जल-संस्कार दे रहे थे, क्योंकि उस जगह पानी अधिक था। लोग वहाँ
आकर गुरु योहन से जल-संस्कार लेते थे 24 गुरु योहन अभी जेल में नहीं
डाले गए थे। 25 गुरु योहन के शिष्यों और एक यहूदी व्यक्ति में* पवित्र
स्नान को लेकर बहस हो गई। 26 उन्होंने गुरु योहन के पास जाकर कहा,
"गुरुजी, देखिए, यरदन नदी के पार जो आपके साथ थे, जिनके बारे में
आपने बताया था, वह जल-संस्कार देने लगे हैं और सब लोग उनके पास
जाने लगे हैं।"

27 गुरु योहन ने उत्तर दिया,
व्यक्ति को वही करना चाहिए जो परमात्मा* उसे करने को देते हैं।
28 तुम स्वयं गवाह हो कि मैंने कहा था, "मैं राजा मसीहा नहीं, किंतु
उनसे पहले भेजा गया हूँ कि उनके बारे में लोगों को बताऊँ।"

---

*3:22 *जल-संस्कार* -- गुरु योहन जल-संस्कार उन लोगों को दिया करते थे जो पाप करना छोड़कर परमात्मा का अनुसरण करना चाहते थे। गुरु येशु के शिष्य भी जल-संस्कार उन लोगों को दिया करते थे जो प्रभु येशु पर आस्था रखते थे। इस विधि के अनुसार नए शिष्य को पानी के अंदर डुबकी लेनी होती है जो इस बात का प्रतीक है कि उसने अपना पापी-स्वार्थी जीवन त्याग दिया है और जब शिष्य डुबकी लेकर पानी से बाहर आता है तो वह एक शुद्ध और नए जीवन को प्रदर्शित करता है।

*3:25 *एक यहूदी व्यक्ति में* -- कुछ हस्तलिपियों में इसके स्थान पर "कुछ यहूदियों में" लिखा है

*3:27 *परमात्मा* -- यथाशब्द "परमात्मा-लोक से" है, लेकिन इस संदर्भ का मतलब है "परमात्मा से।"।

29 दुल्हन दूल्हे की होती है। दूल्हे के दोस्त उसकी आवाज़ सुनने
का इंतज़ार करते हैं। जब वे उसकी आवाज़ सुनते हैं तो बहुत खुश
होते हैं, क्योंकि अब वे दूल्हे के साथ दुल्हन लेने जा सकते हैं।
इसलिए अब यह मेरी खुशी पूरी हो गई है कि दूल्हा आ गया है।
30 ज़रूरी है कि उनका महत्व बढ़ता जाए और मेरा घटता जाए!

जो परमात्मा-लोक से आया है

31 जो ऊपर से आए हैं, वह सबसे ऊपर हैं। जो पृथ्वी से है वह
पृथ्वी का है और पृथ्वी की बातें करता है। जो परमात्मा-लोक से
आए हैं वह औरों से सबसे ऊपर हैं।* 32 जो कुछ उन्होंने वहाँ देखा
और सुना है वे उसके बारे में बताते हैं, परंतु कोई भी उनकी बातों
पर विश्वास नहीं करता। 33 जो कोई उनकी बात का विश्वास
करता है, वह प्रमाणित करता है कि परमात्मा सत्य हैं। 34 वह,
जिन्हें परमात्मा ने भेजा है, परमात्मा के संदेश दूसरों को बताते हैं,
क्योंकि वह* भरपूरी से पवित्र-आत्मा देते हैं।
35 पिता परमात्मा पुत्र से प्रेम करते हैं और उन्होंने उनके हाथ में
सबकुछ दे दिया है। 36 जो कोई पुत्र पर आस्था रखता है उसे मोक्ष
प्राप्त होता है। परंतु जो पुत्र के आदेश का पालन नहीं करता, उसे
मोक्ष कभी नहीं मिलेगा, बल्कि परमात्मा का क्रोध उस पर बना
रहता है।

---

*3:31 ***औरों से सबसे ऊपर हैं***- कुछ हस्तलिपियों में यह वाक्य "औरों से सबसे ऊपर हैं"
नहीं लिखा है।

*3:34 ***वह*** -- ग्रीक व्याकरण में स्पष्ट नहीं है कि पवित्र-आत्मा के दाता कौन हैं -- पिता
परमात्मा या प्रभु येशु।

4

मोक्ष देने वाला पानी

1 प्रभु येशु को पता चला कि फैरीसियों ने सुना है कि वह गुरु योहन के
मुकाबले अधिक शिष्य बनाते और उन्हें जल-संस्कार देते हैं। 2 यद्यपि
स्वयं गुरु येशु नहीं, परंतु उनके शिष्य जल-संस्कार देते थे। 3 उस समय
प्रभु येशु ने यहूदिया प्रदेश* छोड़ दिया और फिर से गलील प्रदेश को चले
गए।
4 उनको समेरिया प्रदेश होकर जाना ही था, 5 तो वह समेरिया के सूखार
नगर में पहुँचे। यह नगर उस भूमि के पास था जो याकोब ने बहुत साल
पहले अपने पुत्र योसफ को दी थी। 6 वहाँ याकोब का कुआँ था और गुरु
येशु यात्रा से थककर कुएँ पर बैठ गए। यह दोपहर का समय था।
7 इतने में समेरिया प्रदेश की एक स्त्री जल भरने आई। गुरु येशु ने उससे
कहा, “मुझे पीने को पानी दो।” 8 गुरु येशु उस समय अकेले थे, क्योंकि
उनके शिष्य भोजन खरीदने के लिए नगर में गए हुए थे। 9 स्त्री ने उनसे
कहा, “आप यहूदी होकर मुझ समेरी स्त्री से पानी माँग रहे हैं?” उसने यह
इसलिए कहा, क्योंकि यहूदी लोग समेरी लोगों* से किसी प्रकार का

---

*4:3 *गलील, समेरिया और यहूदिया प्रदेश* -- इस्राएल देश के तीन प्रदेश थे। गलील प्रदेश उत्तरी भाग में स्थित था और यहूदिया प्रदेश दक्षिणी भाग में। दोनों के मध्य में समेरिया प्रदेश था (जिसे “सामरी” या “शोमरोन” प्रदेश भी कहा जाता है)। गुरु येशु का आमतौर पर गलील प्रदेश में अच्छा स्वागत होता था। उन्होंने अपने अधिकतर अद्‌भुत चमत्कार वहीं पर दिखाए। परंतु यहूदिया प्रदेश के यरूशलेम महानगर नगर में बहुत से धर्मगुरुओ ने गुरु येशु का विरोध किया था।

*4:9 *समेरी लोग* -- कई सौ सालों से समेरी और यहूदी लोगों में दुश्मनी चली आ रही थी। हालाँकि उनकी संस्कृति लगभग एक जैसी थी, यहूदी समेरियों को इसलिए भी नहीं पसंद

संबंध नहीं रखते थे।
10 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यदि तुम जानतीं कि परमात्मा तुम्हें क्या
वरदान देना चाहते हैं और यदि जानतीं कि जो तुमसे पानी माँग रहा है वह
कौन है, तो तुम उससे माँगतीं और वह तुम्हें मोक्ष देने वाला पानी देता!”
11 स्त्री ने कहा, “महाराज जी, आपके पास पानी निकालने के लिए कुछ
भी नहीं है, और कुआँ गहरा है, तो मोक्ष देने वाला पानी आपके पास
कहाँ से आएगा? 12 आप हमारे पूर्वज याकोब से महान तो हैं नहीं। उन्होंने
हमको यह कुआँ प्रदान किया और उसमें से स्वयं उन्होंने, उनके पुत्रों ने
और उनके पशुओं ने भी पानी पिया।”
13 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “जो इस कुएँ के पानी को पिएगा, वह फिर
प्यासा होगा, 14 किंतु जो व्यक्ति उस पानी को पिएगा जो मैं दूँगा, वह
कभी प्यासा न होगा। जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें वह झरना बन
जाएगा जो मोक्ष पाने के लिए उमड़ता रहता है।”
15 स्त्री ने कहा, “महाराज जी, मुझे वह पानी दीजिए कि मैं फिर प्यासी न
होऊँ और न यहाँ पानी भरने आऊँ!”

अंतर्यामी और राजा मसीहा

16 गुरु येशु ने कहा, “जाओ, अपने पति को बुला लाओ।”
17 स्त्री ने उत्तर दिया, “मेरा पति नहीं है।”
गुरु येशु ने कहा, “तुमने सच कहा, ‘मेरा पति नहीं है,’ 18 क्योंकि तुम
अब तक पाँच पति कर चुकी हो और इस समय जो तुम्हारे पास है वह
भी तुम्हारा पति नहीं। यह तुमने सच कहा है।”

करते थे, क्योंकि उनके वंशजों ने विदेशी लड़के-लड़कियों से शादी की थी। यहूदी समेरियों को यरूशलेम महानगर के मंदिर में भी नहीं आने दिया करते थे। जिस कारण, समेरी लोगों ने पहाड़ गिरिज्जीम पर अपना एक अलग मंदिर बना लिया था।

19 स्त्री बोली, “महाराज जी, अब मैं समझ गई हूँ कि आप दिव्य ज्ञानी
हैं! 20 हमारे पूर्वजों ने इस नज़दीक पहाड़* पर भक्ति की और आप यहूदी
लोग कहते हैं कि यरूशलेम महानगर ही वह स्थान है जहाँ भक्ति करनी
चाहिए।”
21 गुरु येशु ने कहा --
हे स्त्री! मेरा विश्वास करो। वह समय आ रहा है जब तुम लोग न
तो इस पहाड़ पर और न यरूशलेम महानगर में पिता परमात्मा की
भक्ति करोगे। 22 तुम समेरी लोग उसकी भक्ति करते हो जिस के बारे
में तुम्हें ज्ञान नहीं। हम यहूदी उसकी भक्ति करते हैं जिसे हम जानते
हैं, क्योंकि मोक्ष-मार्ग यहूदियों में से है। 23 फिर भी वह समय आ
रहा है, और आ ही गया है, जब सच्चे भक्त पिता परमात्मा की
भक्ति, आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता ऐसे ही भक्त
चाहता है। 24 परमात्मा आत्मा है, और यह ज़रूरी है कि उसके भक्त
आत्मा और सच्चाई से उसकी भक्ति करें।
25 स्त्री ने कहा, “मैं जानती हूँ कि राजा मसीहा मुक्तिदाता का हमसे वादा
किया था वह आने वाले हैं। जब वह आएंगे तब हम पर सारी सच्चाई
प्रकट कर देंगे।”
26 गुरु येशु बोले, “मैं, वही राजा मसीहा हूँ।”
27 उसी समय गुरु येशु के शिष्य आ गए और वे यह देखकर हैरान रह
गए कि गुरु एक स्त्री से बात कर रहे हैं, पर किसी ने नहीं पूछा, “आप
उस स्त्री से क्या जानना चाहते हैं,” या “आप उससे क्यों बात कर रहे
हैं?” 28 उस स्त्री ने अपना घड़ा वहीं छोड़ा और नगर में जाकर लोगों से
कहा, 29 “आओ, एक मनुष्य को देखो! वह मुझ से पहली बार मिला है,

---

*4:20 *इस नज़दीक पहाड़*-- इस पहाड़ का नाम गेरिज़िम है।

परंतु जो कुछ मैंने बीते समय में किया था, वह सब उसने मुझे बता दिया है। कहीं यह राजा मसीहा तो नहीं?” 30 वे लोग नगर से निकले और गुरु येशु की ओर जाने लगे।

31 इसी बीच शिष्यों ने उनसे निवेदन किया, “गुरुजी, भोजन कर लीजिए।”

32 उन्होंने उत्तर दिया, “मेरे पास खाने को वह भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।”

33 शिष्य आपस में कहने लगे, “कोई इनके लिए भोजन तो नहीं लाया?”

34 तब गुरु येशु ने उनसे कहा --

मेरे लिए असली भोजन यह है कि मैं अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उनका कार्य पूरा करूँ। 35 क्या तुम नहीं कहते, “चार महीने और बाकी हैं तब फसल काटने का समय आएगा?” मैं कहता हूँ कि आँखें उठाओ, और खेतों पर नज़र डालो। वे कटने के लिए पक चुके हैं।

36 काटने वाला मजदूरी प्राप्त कर रहा है और उनके द्वारा काटे गए फल मोक्ष प्राप्ति के लिए लाए गए लोग हैं, जिससे बोने वाला और काटने वाला दोनों खुशी मनाएँ। 37 तो यहाँ यह कहावत सच साबित होती है, “बोने वाला और है, काटने वाला और।” 38 जिसके लिए तुमने कोई मेहनत नहीं की, उसे काटने के लिए मैंने तुम्हें भेजा। दूसरों ने मेहनत की और उन की मेहनत का फल तुम्हें प्राप्त हुआ।

संसार का मोक्षदाता

39 उस नगर के अनेक समेरी लोगों ने उस औरत की इस गवाही के कारण गुरु येशु पर आस्था प्रकट की -- “जो कुछ मैंने बीते समय में

किया था, वह सब उसने मुझे बता दिया।” 40 इन समेरी लोगों ने आकर
गुरु येशु से विनती की, “हमारे साथ रहिए।” तो वह उनके साथ दो दिन
रहे 41 और उनके प्रवचन सुनकर और भी लोगों ने उन पर आस्था रखी।
42 समेरी लोग उस स्त्री से बोले, “हमने केवल तुम्हारे कहने पर ही
आस्था नहीं रखी, परंतु हमने स्वयं उनको सुना है और हम जानते हैं कि
वह वास्तव में संसार के मोक्षदाता हैं।”

मृत्यु के पंजों से बालक का छुटकारा

मत्तिया 8:5-13; लूकस 7:1-10

43 दो दिन के बाद गुरु येशु वहाँ से निकलकर गलील प्रदेश को गए
44 क्योंकि गुरु येशु ने स्वयं कहा था कि दिव्य ज्ञानी को, अपनी
जन्म-भूमि में आदर सम्मान नहीं दिया जाता। 45 जब वह गलील पहुँचे तब
गलील के निवासियों ने उनका स्वागत किया, क्योंकि वे लोग जो
मुक्ति-उत्सव मनाने वहाँ गए थे। वे उन सब चमत्कारी कामों को देख
चुके थे जो गुरु येशु ने उत्सव के अवसर पर यरूशलेम महानगर में किए
थे।

46 तब गुरु येशु फिर से गलील प्रदेश के काना नगर में आए जहाँ उन्होंने
पानी को अंगूर रस में बदल दिया था। वहाँ राज्य का एक अधिकारी था
जिसका पुत्र कफरनहूम नगर में बीमार था। 47 जब उसने सुना कि गुरु येशु
यहूदिया प्रदेश से गलील में आए हुए हैं तब वह उनके पास आया। उसने
गुरु येशु से विनती की कि वह उसके साथ चलें और उसके पुत्र को
स्वस्थ करें, क्योंकि उसका पुत्र मरने पर था।

48 गुरु येशु ने उससे कहा, “जब तक तुम लोग चमत्कारी चिन्ह और
अद्‌भुत काम नहीं देखोगे तब तक विश्वास नहीं करोगे।”

49 अधिकारी ने विनती की, “प्रभुजी, इससे पहले कि मेरे पुत्र की मृत्यु
हो, कृपया मेरे साथ चलिए।”
50 गुरु येशु ने उससे कहा, “घर जाओ, तुम्हारा पुत्र स्वस्थ हो गया है।”
अधिकारी ने प्रभु येशु की बात पर विश्वास किया और चला गया।
51 अभी वह रास्ते में ही था कि उसे उसके दास मिले और उन्होंने कहा,
“आपका पुत्र स्वस्थ हो गया है!”
52 उसने पूछा, “किस समय से वह ठीक होने लगा था?”
वे बोले, “कल दोपहर एक बजे उसका बुखार उतर गया।” 53 पिता
समझ गया कि यह ठीक उसी समय हुआ जब गुरु येशु ने कहा था,
“तुम्हारा पुत्र जीवित रहेगा।” इस पर स्वयं उसने और उसके पूरे परिवार
ने प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की।
54 यह उनका परमात्मा पुत्र होने का दूसरा चमत्कारी चिन्ह था जो प्रभु
येशु ने यहूदिया प्रदेश से आकर गलील प्रदेश में दिखाया।

5

चमत्कारी तालाब

1 इसके बाद यहूदियों के एक उत्सव पर प्रभु येशु यरूशलेम महानगर
गए। 2 यरूशलेम महानगर में भेड़ नामक द्वार के पास एक तालाब है जो
यहूदी भाषा में बैतसदा* कहलाता है। उसमें पाँच छतदार आँगन थे।
3 इनमें अनेक बीमार -- अंधे, लँगड़े और लकवा-पीड़ित – पड़े रहते थे।
4 [क्योंकि समय-समय पर परमेश्वर का एक दूत तालाब में उतरता और
पानी को हिलाता था। पानी हिलते ही जो व्यक्ति सबसे पहले डुबकी

*5:2 *बैतसदा*-- कुछ हस्तलिपियों में इसके स्थान पर “बेथज़था” लिखा है।

लगाता, वह स्वस्थ हो जाता था। चाहे वह किसी भी बीमारी से पीड़ित
क्यों न हो][*]। 5 वहाँ एक मनुष्य था जो अड़तीस साल से बीमार था। 6 प्रभु
येशु ने उसे पड़े हुए देखा। उन्हें मालूम हुआ कि वह बहुत समय से बीमार
है, इसलिए गुरु येशु ने उससे कहा, “क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो?”
7 बीमार ने उत्तर दिया, “प्रभुजी, मेरी सहायता करने वाला कोई नहीं है
जो जल के हिलने पर मुझे तालाब में उतारे। मेरे जाते-जाते मुझसे पहले
कोई अन्य बीमार पानी में उतर जाता है।”
8 प्रभु येशु ने कहा, “उठो, अपना बिस्तर उठाओ और चलो।” 9 वह
मनुष्य तुरंत स्वस्थ हो गया और बिस्तर उठाकर चलने-फिरने लगा!
परंतु उस दिन विश्राम-दिवस[*] था। 10 इसलिए यहूदियों के धर्मगुरुओं ने
स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा, “आज विश्राम-दिवस है, बिस्तर उठाना
तुम्हारे लिए मना है।”
11 उसने उत्तर दिया, “जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया, उन्होंने मुझसे कहा,
‘अपना बिस्तर उठाओ और चलो!’”
12 उन्होंने पूछा, “वह कौन मनुष्य है जिसने तुमसे कहा कि बिस्तर
उठाओ और चलो?” 13 स्वस्थ हुआ व्यक्ति नहीं जानता था कि गुरु येशु

---

[*]**5:4** ***[क्योंकि समय-समय पर... पीड़ित क्यों न हो]*** -- इन तीन वाक्यों को सर्वश्रेष्ठ ग्रीक हस्तलिपियों में स्थान नहीं मिला हैं।

[*]**5:9** ***विश्राम-दिवस*** -- (सब्त का दिन भी कहा जाता है) विश्राम-दिवस हफ्ते में एक दिन (शनिवार) होता था जिसमें यहूदी लोग अपने काम से आराम किया करते थे। उत्पत्ति की पुस्तक में यह लिखा है कि परमात्मा ने छः दिन तक संसार की रचना की और सातवें दिन आराम किया, क्योंकि उनका कार्य पूरा हो गया था। परमेश्वर ने कहा कि लोग छः दिन काम करें, फिर सातवें दिन आराम और परमेश्वर की भक्ति करें। प्रभु येशु के समय में, यहूदी धर्मगुरुओं ने बहुत-से नियमों को जोड़ दिया जिसको वे “काम” कहते थे। उन्होंने नियम बना दिए थे कि विश्राम-दिवस के दिन लोग क्या करें और क्या न करें।

कौन हैं, और उस स्थान पर भीड़ होने के कारण वह व्यक्ति उन्हें नहीं
ढूँढ पाया। 14 फिर कुछ समय बाद उसे प्रभु येशु मंदिर में मिले। उन्होंने
उससे कहा, “देखो, तुम स्वस्थ हो गए हो। आगे पाप न करना कहीं ऐसा
न हो कि तुम्हारा हाल इससे ज़्यादा बुरा हो जाए।” 15 उस मनुष्य ने जाकर
यहूदी धर्मगुरुओं से कहा, “जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया है, वह येशु हैं।”
16 इस कारण यहूदी धर्मगुरु गुरु येशु को सताने लगे कि वह
विश्राम-दिवस पर भी बीमारों को स्वस्थ करते थे। 17 गुरु येशु ने उत्तर
दिया, “मेरे पिता परमात्मा कभी विश्राम नहीं करते, इसलिए मैं भी काम
कर रहा हूँ।” 18 अब कुछ यहूदी लोग गुरु येशु को मार डालने की और
भी कोशिश करने लगे, क्योंकि वह विश्राम-दिवस के नियम ही नहीं
तोड़ते थे, परंतु परमात्मा को अपना पिता कहकर अपने आपको
परमात्मा के बराबर भी बताते थे।

परमात्मा ने पूरा अधिकार पुत्र को दिया

19 गुरु येशु ने लोगों से कहा --

मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, परमात्मा-पुत्र* अपने आप कुछ
नहीं करता। वह वही करता है जो अपने पिता परमात्मा को करते
हुए देखता है। जो कुछ पिता परमात्मा करते हैं वह पुत्र भी करता
है। 20 पिता परमात्मा अपने पुत्र से प्रेम करते हैं और पिता जो कुछ
करते हैं, वह सब उन्हें दिखाते हैं। पिता इनसे भी बड़े कार्य उन्हें
दिखाएंगे कि तुम्हें आश्चर्य हो, 21 क्योंकि जिस प्रकार पिता
परमात्मा अपने मरे हुओं भक्तों को जीवित करते और उन्हें जीवन

---

*5:19 *परमात्मा-पुत्र* -- गुरु येशु परमात्मा के अद्‌भुत राजवंशी पुत्र हैं जिन्होंने अपने पिता के प्रति एक पूरा समर्पित जीवन व्यतीत किया। वह अब परमात्मा-लोक में सिंहासन पर विराजमान हैं और भविष्य में हर एक व्यक्ति के अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करेंगे।

देते है, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहे उसको जीवन देता है।
22 वास्तव में, पिता स्वयं किसी के कर्मों का न्याय नहीं करते,
क्योंकि उसने न्याय करने का पूरा अधिकार अपने पुत्र को दे दिया
है 23 कि जिस प्रकार सब पिता परमात्मा का आदर करते हैं, उनके
पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता
परमात्मा का भी आदर नहीं करता, जिन्होंने पुत्र को भेजा है। 24 मैं
तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ कि जो मेरा संदेश सुनता और मेरे
भेजने वाले पर भरोसा करता है, उसे मोक्ष मिलता है और वह दंड
का भागी नहीं होगा, परंतु वह मृत्यु को पार कर मोक्ष प्राप्त कर
चूका है।
25 "मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, वह समय आ रहा है और अब
है, जब मरे हुए लोग परमात्मा-पुत्र की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे,
वे जीवित हो जाएँगे, 26 क्योंकि जैसे पिता परमात्मा के पास मोक्ष
देने की शक्ति हैं, वैसे ही उन्होंने पुत्र को भी मोक्ष प्रदान करने की
शक्ति दी है, 27 और परमात्मा ने उन्हें हर व्यक्ति का न्याय करने का
अधिकार दिया है, क्योंकि वह तेजस्वी मानव-पुत्र हैं।
28 मेरी इस बात से तुम्हें हैरान नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय आ
रहा है कि सब मृत लोग* उसकी आवाज़ सुनकर 29 जीवित हो
जाएँगे -- अच्छे काम करने वाले मोक्ष का पूरा अनुभव प्राप्त करने
के लिए जी उठेंगे और बुरे काम करने वाले दंड पाने के लिए जी
उठेंगे।

---

*5:28 *मृत लोग* -- मूल ग्रन्थ के यथाशब्द अनुवाद में, "जो कब्र और मृत्यु लोक में हैं"। इसका अर्थ यह है कि उनकी मृत्यु -- चाहे कहीं भी हो और उनका शव हो या नष्ट हो गया हो -- फिर भी वे जीवित नए शरीर के साथ जीवित किए जाएँगे।

30 मैं स्वयं अपने से कुछ भी नहीं करता। जैसे मैं सुनता हूँ वैसे ही
न्याय करता हूँ और मेरा न्याय एकदम सही होता है, क्योंकि मैं
अपने आप को खुश करने के लिए ऐसा नहीं करता परंतु मैं अपने
पिता को खुश करना चाहता हूँ जिन्होने मुझे भेजा है।

सनातन गुरु की प्रमाणिकता

31 यदि मैं स्वयं अपने बारे में गवाही दूँ तो मेरी गवाही मान्य नहीं।
32 एक और हैं जो मेरे बारे में गवाही देते हैं और मैं जानता हूँ कि मेरे
बारे में उनकी गवाही मान्य है। 33 तुमने गुरु योहन से पूछवाया और
सत्य के बारे में उन्होंने गवाही दी है। 34 यह नहीं कि मुझे मनुष्य की
गवाही की ज़रूरत है, किंतु मैं यह बात इसलिए कहता हूँ कि तुम्हें
मोक्ष प्राप्त हो। 35 गुरु योहन एक तेज रोशनी देने वाले दीपक के
समान थे। थोड़े समय तक तुम उनकी शिक्षा के प्रकाश में खुशी से
चलते रहे।
36 गुरु योहन से बढ़कर मेरे पास गवाही है। ये काम जो मेरे पिता
परमात्मा ने मुझे करने को कहे हैं, ये काम जो मैं अभी कर रहा हूँ
प्रमाणित करते हैं कि पिता ने मुझे भेजा है।
37 पिता ने भी, जिन्होंने मुझे भेजा है, मेरे बारे में गवाही दी है। तुम
लोगों ने कभी उसकी आवाज़ नहीं सुनी, न उनका स्वरूप देखा है
38 और न उनके संदेश तुममें वास करते हैं, क्योंकि जिसे उन्होंने
भेजा है, उस पर तुम विश्वास नहीं करते।
39 पवित्र शास्त्र का तुम अध्ययन करते हो, क्योंकि तुम्हारा मानना
है कि उससे तुम्हें मोक्ष प्राप्त होता है। परंतु ये शास्त्र मेरे बारे में
गवाही देते हैं। 40 फिर भी तुम मोक्ष प्राप्त करने के लिए मेरे पास नहीं

आना चाहते।
41 लोगों की प्रशंसा मैं स्वीकार नहीं करता, 42 क्योंकि मैं जानता हूँ
कि तुम अंदर से परमात्मा से प्रेम नहीं करते। 43 मैं अपने पिता
परमात्मा के अधिकार से आया हूँ परंतु तुम मुझे स्वीकार नहीं
करते। यदि कोई अन्य अपने अधिकार से आए तो उसको तुम
स्वीकार करोगे। 44 तुम मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो जबकि
तुम आपस में एक-दूसरे से प्रशंसा चाहते हो और तुम उस प्रशंसा
की खोज नहीं करते जो केवल एक मात्र परमात्मा से प्राप्त होती है।
45 यह मत सोचो कि पिता परमात्मा के सामने मैं तुम पर आरोप
लगाऊँगा। तुम पर आरोप लगाने वाले तो गुरु मोशे* हैं जिन पर
तुमने भरोसा किया हुआ है। 46 यदि तुम मोशे पर विश्वास करते तो
मुझ पर भी विश्वास करते, क्योंकि उन्होंने मेरे बारे में लिखा है।
47 परंतु यदि तुम उनके लेख पर विश्वास नहीं करते तो मेरे कहने
पर कैसे विश्वास करोगे?”

6

पाँच रोटियों से पाँच हज़ार से ज़्यादा लोगों को भोजन कराना

मत्तिया 14:13-21; मरकस 6:30-44; लूकस 9:10-17

1 इसके बाद प्रभु येशु तिबिरियस झील, अर्थात् गलील की झील, के उस

---

*5:45 ***गुरु मोशे और यहूदी नियम-शास्त्र*** -- गुरु मोशे बहुत सम्मानीय समझे जाते थे। उन्होंने यहूदियों को मिस्र देश की गुलामी से आज़ादी दिलाई। परमेश्वर ने गुरु मोशे के माध्यम से यहूदियों को नियम-शास्त्र दी। इसके द्वारा वे कई सौ सालों तक अपने जीवन को चलाते रहे। इसी कारण यहूदी मोशे को सर्वोच्च गुरु और परमेश्वर के बाद सबसे बड़ा मानकर आदर दिया करते हैं।

पार चले गए। 2 बड़ी भीड़ उनके पीछे चल रही थी, क्योंकि उन्होंने
बीमारों को ठीक करके परमात्मा पुत्र होने के चमत्कारी चिन्ह दिखाए थे।
3 तब गुरु येशु पहाड़ पर गए और वहाँ शिष्यों के साथ बैठ गए।
4 यहूदियों का मुक्ति-उत्सव निकट था। 5 गुरु येशु ने आँखें उठाईं और एक
बड़ी भीड़ को अपनी ओर आते देखा। उन्होंने फिलिपस से कहा, “हम
इनको खिलाने के लिए कहाँ से खाना खरीदें?” 6 प्रभु येशु ने यह उसको
परखने के लिए कहा था, क्योंकि वह जानते थे कि वह क्या करने वाले
हैं।
7 फिलिपस ने उन्हें उत्तर दिया, “दो सौ चाँदी के सिक्कों* से भी हम इन्हें
सिर्फ थोड़ा-सा खाना ही दिला पाएँगे।”
8 गुरु येशु का एक शिष्य अन्द्रेयास, जो शिमौन पतरस का भाई था,
बोला, 9 “यहाँ एक बालक है। उसके पास जौ के आटे की पाँच रोटियाँ
और दो मछलियाँ हैं। पर इनसे इतनों के लिए क्या होगा?”
10 गुरु येशु ने कहा, “लोगों को बैठाओ।”
उस स्थान पर बहुत घास थी तो सब लोग बैठ गए। उनमें पुरुषों की
संख्या लगभग पाँच हज़ार थी। 11 तब गुरु येशु ने रोटियाँ लीं और
परमात्मा को धन्यवाद देकर बैठे हुए लोगों में बाँट दीं। इसके बाद
उन्होंने मछलियाँ भी जितनी वे चाहते थे बाँट दीं।
12 जब लोगों के पेट भर गए तब गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, “बची
हुई रोटियाँ इकट्ठा करो और कुछ भी बरबाद न होने दो।” 13 शिष्यों ने
रोटियाँ इकट्ठा कीं। जौ की पाँच रोटियों से, जो भोजन करने वालों से बच
गईं थीं, बारह टोकरियाँ भर गईं।

---

*6:7 *दो सौ चाँदी के सिक्कों* -- उस समय में दो सौ चाँदी के सिक्के लगभग एक मजदूर का
सात महीने का वेतन होता था।

14 गुरु येशु का यह चमत्कारी चिन्ह देखने के बाद लोग कहने लगे, “यह
वास्तव में वही दिव्य ज्ञानी हैं जिनके संसार में आने का हम इंतज़ार कर
रहे थे!” 15 तब गुरु येशु पहाड़ पर थोड़ा और ऊपर चले गए, क्योंकि वह
जानते थे कि लोग उन्हें ज़बरदस्ती राजा बनाने के लिए ले जाना चाहते
हैं।

गुरु येशु पानी पर चले

16 जब शाम हुई तब गुरु येशु के शिष्य झील के किनारे पर आए। 17 वे
नाव पर चढ़कर झील की दूसरी ओर कफरनहूम नगर को जाने लगे।
अँधेरा हो चुका था, और गुरु येशु अभी तक उनके पास नहीं आए थे।
18 उसी समय तूफान आ गया और झील में लहरें उठने लगीं। 19 लगभग
पाँच किलोमीटर नाव खेने के बाद उन्होंने देखा कि गुरु येशु झील पर
चलते हुए नाव के पास आ रहें हैं, तो वे डर गए, 20 किंतु गुरु येशु ने उनसे
कहा, “मैं हूँ, डरो मत।” 21 तब वे प्रभु येशु को नाव में लेने को तैयार हुए
और नाव तुरंत उस किनारे पर पहुँच गई जहाँ उन्हें जाना था।

प्रभु येशु की खोज में

22 दूसरे दिन झील के पास जो लोग रह गए थे उन्होंने देखा कि यहाँ तो
केवल एक नाव थी। वे जानते थे कि गुरु येशु अपने शिष्यों के साथ नाव
पर नहीं चढ़े थे, केवल उनके शिष्य ही विदा हुए थे। 23 तब तिबिरियस
नगर से अन्य नावें उस स्थान के पास आ गईं जहाँ प्रभु येशु के परमात्मा
को धन्यवाद देने के बाद* लोगों ने रोटी खायी थी। 24 जब लोगों ने देखा
कि न तो गुरु येशु वहाँ हैं और न उनके शिष्य, तब वे नावों पर चढ़कर
गुरु येशु की खोज में कफरनहूम नगर गए। 25 लोगों ने झील की दूसरी

---

*6:23 *परमात्मा को धन्यवाद देने के बाद*- कुछ हस्तलिपियों में यह वाक्य नहीं लिखा है।

ओर गुरु येशु को पाया। लोगों ने उनसे पूछा, “गुरुजी, आप यहाँ कब से
हैं?”
26 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, तुम मुझे
इसलिए नहीं खोज रहे कि तुमने मेरे परमात्मा के पुत्र होने के चिन्ह देखे
हैं, परंतु इसलिए कि तुम्हें पेट भर रोटियाँ मिली हैं। 27 कुछ समय बाद
सड़ जाने वाले भोजन के लिए मेहनत न करो, परंतु मोक्ष प्राप्ति के लिए
मेहनत करो जिसे तेजस्वी मानव-पुत्र तुम्हें देगा। क्योंकि पिता परमात्मा ने
ऐसा करने की उसे अपनी मान्यता दी है।”
28 फिर लोगों ने उनसे पूछा, “परमात्मा को खुश करने के लिए क्या
करना चाहिए?”
29 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “परमात्मा को खुश करने के लिए तुम उन पर
आस्था रखो जिन्हें उन्होंने भेजा है।”
30 तब उन्होंने गुरु येशु से कहा, “आप कौनसा चमत्कारी चिन्ह
दिखाएँगे जिससे हम आप पर आस्था प्रकट करें? आप क्या करेंगे?
31 हमारे पूर्वजों ने बंजर स्थान में मन्ना नामक रोटी* खाई थी जैसे पवित्र
शास्त्र में लिखा है, ‘उसने उन्हें परमात्मा-लोक से रोटी दी।’”*
32 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, तुम्हें
परमात्मा-लोक से रोटी गुरु मोशे ने नहीं दी। मेरे पिता परमात्मा तुम्हें
परमात्मा-लोक से सच्ची रोटी देते हैं। 33 परमात्मा की सच्ची रोटी वह है जो
परमात्मा-लोक से उतरकर संसार के लोगों को मोक्ष देती है।”

---

*6:31 *मन्ना नामक रोटी*- कई साल पहले, जब इस्राएल देश के लोग मोशे के समय रेगिस्तान में थे, तो परमात्मा ने उन्हें खाने के लिए एक विशेष प्रकार का भोजन दिया। इसका स्वाद बहुत हलकी रोटी की तरह था और इसे "मन्ना" कहा जाता था।

*6:31 निर्गमन 16:14-15; भजन शास्त्र 78:24

34 लोगों ने कहा, “महाराज, हमें यह रोटी हमेशा दिया करें।”
35 प्रभु येशु ने उत्तर दिया --

मैं वह रोटी हूँ जिससे मोक्ष मिलता है। जो मेरे पास आता है,
उसकी मोक्ष की भूख मिट जाती है और जो मुझ पर आस्था रखता
है, उसे मोक्ष की संतुष्टि मिलेगी । 36 मैं तुमसे कह चुका हूँ कि तुमने
मुझे* देख लिया है, फिर भी मुझ पर आस्था नहीं रखी। 37 जिसको
मेरे पिता परमात्मा ने मेरे पास भेजा है, वह मेरे पास आएगा। और
जो कोई मेरे पास आएगा, उसको मैं अपने से कभी दूर नहीं करूँगा,
38 क्योंकि मैं अपनी नहीं, परंतु अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी
करने के लिए परमात्मा-लोक से उतरा हूँ 39 और मेरे भेजने वाले की
इच्छा यह है कि जिनको उन्होंने मेरे पास भेजा है, उनमें से किसी
को भी न खोऊँ, परंतु अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन उन
सबको जीवित करूँ। 40 मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो पुत्र को
देखे और उस पर आस्था रखे, वह मोक्ष पाएगा और बुरे और
अच्छे कर्मों के न्याय के दिन मैं उसे फिर से जीवित करके मोक्ष का
पूरा अनुभव दूँगा।”

41 “परमात्मा-लोक से उतरी हुई रोटी मैं हूँ,” प्रभु येशु का दावा सुनकर यहूदी जो वहाँ थे, आपस में बुड़बुड़ाने लगे। 42 वे कह रहे थे, “क्या यह योसफ का पुत्र येशु नहीं, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो यह कैसे कहता है कि मैं परमात्मा-लोक से उतरा हूँ?”
43 गुरु येशु ने उन्हें उत्तर दिया --

आपस में मत बुड़बुड़ाओ। 44 जब तक पिता परमात्मा, जिन्होंने
मुझे भेजा है, शक्ति न दे, कोई मेरे पास नहीं आ सकता, और मैं उसे

---

*6:36 ***मुझे, मुझ पर*** -- कुछ हस्तलिपियों में “मुझे” और “मुझ पर” नहीं लिखा है।

अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन फिर जीवित करूँगा।
45 पवित्र शास्त्र में दिव्य ज्ञानीयों ने लिखा है, 'वे सब परमात्मा द्वारा
सिखाए जाएँगे।'* जिस किसी ने पिता परमात्मा से सुना और सीखा
है, वह मेरे पास आता है।
46 यह नहीं कि किसी ने पिता परमात्मा को देखा है, केवल उसी
ने, जो परमात्मा की ओर से है, पिता परमात्मा को देखा है। 47 मैं तुम
पर सत्य प्रकट करता हूँ, जो आस्था रखता है, उसे मोक्ष प्राप्त होता
है।
48 मोक्ष देने वाली रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे पूर्वजों ने बंजर स्थान में
मन्ना खाया परंतु फिर भी वे मर गए। 50-51 परमात्मा-लोक से उतरी
मोक्ष देने वाली रोटी मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाएगा, वह
हमेशा जीवित रहेगा। मेरा शरीर मोक्ष देने वाली रोटी है जो मैं संसार
के लोगों के लिए देता हूँ।
52 इस पर यहूदी आपस में वाद-विवाद करने लगे, "यह हमें खाने के
लिए अपना शरीर कैसे दे सकता है?"
53 गुरु येशु ने कहा --
मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, जब तक तुम तेजस्वी मानव-पुत्र
का शरीर न खाओ और उसका खून न पियो,* तुममें मोक्ष नहीं।
54 जो मेरा शरीर खाता और मेरा खून पीता है, उसको मोक्ष प्राप्त
होता है और उसे मैं बुरे और अच्छे कर्मों के न्याय के दिन जीवित
करके मोक्ष का पूरा अनुभव दूँगा। 55 मेरा शरीर सच्चा आत्मिक

---

*6:45 यशाया 54:13

*6:53 ***शरीर और खून*** -- इन शब्दों को लेने का अर्थ प्रभु येशु के जीवन और उनकी पीड़ा में आत्मिक रूप से भाग लेना है (देखें 6:63)

भोजन है और मेरा खून सच्चा आत्मिक पेय है। 56 जो मेरा शरीर और
खून का सेवन करता है वह मुझमें वास करता है और मैं उसमें।
57 जैसे जीवित पिता परमात्मा ने मुझे भेजा और मैं पिता परमात्मा
के कारण जीवित हूँ, इसी प्रकार जो मेरा सेवन करता है वह मेरे
कारण जीवित रहेगा। 58 परमात्मा-लोक से उतरी हुई यह रोटी ऐसी
नहीं जैसी तुम्हारे पूर्वजों ने खाई परंतु फिर भी मर गए। जो इस रोटी
का सेवन करेगा, वह हमेशा जीवित रहेगा।
59 गुरु येशु ने कफरनहूम नगर के यहूदी समाज-भवन* में शिक्षा देते हूए
यह कहा।

गुरु की शिक्षा आत्मिक और जीवन दायक

60 यह सुनकर, बहुत से उनके शिष्यों ने कहा, “यह जो शिक्षा दे रहे हैं,
वह बहुत कठिन है। कोई व्यक्ति इन शिक्षाओं पर कैसे चल सकता है?”
61 परंतु गुरु येशु ने मन में जान लिया कि उनके शिष्य इस बारे में क्या
बुड़बुड़ा रहे हैं। तो उन्होंने कहा, “क्या इससे तुम्हें ठेस लग गई? 62 और
यदि तुम तेजस्वी मानव-पुत्र को, जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते हुए
देखोगे, तब क्या होगा! 63 पवित्र आत्मा जीवन-दाता है, मनुष्य की
कोशिशों से कुछ लाभ नहीं। जो शब्द मैंने तुमसे कहे हैं, वे आत्मिक और
मोक्ष देने वाले हैं। 64 फिर भी तुम में से अनेक हैं जो मुझ पर आस्था नहीं

---

*6:59 *यहूदी समाज-भवन* -- (मूल ग्रंथ में, “सिनागोग,” और अन्य हिंदी अनुवादों में इसे “आराधनालय” भी कहते है) वह स्थान था जहाँ दस या अधिक यहूदी पुरुष विश्राम-दिवस को इकट्ठा होते थे ताकि वे प्रार्थना और भक्ति-भजन करे। उसके बाद, उनमें से एक पुरुष पवित्र शास्त्र के किसी भाग को ऊँची आवाज़ से पढ़ता था, और समाज के बड़े व्यक्तियों द्वारा उस भाग को समझाया जाता था। यहूदी समाज-भवन केवल सत्संग के लिए ही नहीं परंतु यहूदी समुदाय के अन्य कार्यक्रमों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था।

रखते।” क्योंकि गुरु येशु को शुरू से पता था कि कौन उन पर आस्था
नहीं रखते और वह कौन है जो उनसे विश्वासघात करेगा। 65 वह बोले,
“इसी कारण मैंने तुमसे कहा था कि जब तक पिता परमात्मा मेरे पास
आने की शक्ति न दे, कोई व्यक्ति मेरे पास नहीं आ सकता।”
66 इसके बाद गुरु येशु के बहुत से शिष्य पीछे हट गए और उनका साथ
छोड़ दिया। 67 तब गुरु येशु ने बारह शिष्यों से पूछा, “क्या तुम भी मुझे
छोड़ना चाहते हो?”
68 शिमौन पतरस ने उत्तर दिया, “प्रभुजी, हम किसके पास जाएँ? आप
ही के पास मोक्ष का संदेश है। 69 हमने आप पर आस्था प्रकट की है और
हम जान चुके हैं कि आप परमात्मा के भेजे हुए पवित्र जन हैं।”
70 तब गुरु येशु ने कहा, “क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? फिर भी
तुममें से एक प्रेत सम्राट शैतान के वश में है।” 71 यह उन्होंने यहूदा
इसकरयोत, शिमौन इसकरयोत के बेटे के बारे में कहा था, जो बारह
राजदूतों में से एक था। वह बाद में प्रभु येशु के साथ विश्वासघात करने
वाला था।

7

प्रभु येशु के अविश्वासी भाई

1 इसके बाद प्रभु येशु गलील प्रदेश में घूमकर अपना कार्य करने लगे।
वह यहूदिया प्रदेश में जाना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहूदी धर्मगुरु उन्हें
मार डालने के उपाय सोच रहे थे। 2 यहूदियों का मंडप उत्सव* निकट

---

*7:2 ***मंडप उत्सव***- यहूदी लोग इस सात दिन के उत्सव को मनाया करते थे जब लोग अस्थायी रूप से रहने के लिए मंडपों का निर्माण करते थे। यह याद करने का समय था कि कैसे परमात्मा ने गुरु मोशे के समय जंगल में उनके लिए भोजन उपलब्ध कराया था। उत्सव

था। [3] इसलिए प्रभु येशु के भाइयों ने उनसे कहा, “यहाँ से निकलकर
यहूदिया प्रदेश चले जाओ कि जो कार्य तुम करते हो, उन्हें तुम्हारे शिष्य
भी देखें, [4] क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो प्रसिद्ध होना चाहे और गुप्त रहकर
कार्य करे। यदि तुम ऐसे कार्य करते हो तो अपने आपको संसार के सामने
प्रकट करो।” [5] वास्तव में, प्रभु येशु के भाइयों ने भी उन पर आस्था प्रकट
नहीं की थी।
[6] प्रभु येशु ने उनसे कहा, “मेरे लिए वहाँ जाना अभी ठीक नहीं है, पर
तुम्हारे लिए सब समय ठीक है। [7] यह संसार तुमसे बैर नहीं करेगा, परंतु
वे मुझसे बैर रखते हैं, क्योंकि मैं उनके बुरे कामों के विरुद्ध आवाज़
उठाता हूँ। [8] तुम उत्सव मनाने जाओ। मैं उत्सव मनाने अभी* नहीं जा रहा
हूँ, क्योंकि मेरे लिए वहाँ जाना अभी ठीक नहीं है।” [9] यह कहकर गुरु
येशु गलील प्रदेश में रह गए।

पारलौकिक ज्ञान

[10] जब गुरु येशु के भाई उत्सव मनाने चले गए तब गुरु येशु भी लोगों की
नज़र से बचकर वहाँ पहुँच गए। [11] उत्सव के समय कुछ यहूदी उनको
ढूँढ़ रहे थे और पूछ रहे थे, “वह कहाँ है?” [12] और लोगों में भी उनके

के एक भाग में एक बड़े कटोरे से पानी उंडेला जाता है। यह याद करते हुए कि किस तरह परमेश्वर ने एक चट्टान से पानी का झरना निकाला था (निर्गमन 17:1-7)। उत्सव के एक और भाग में मंदिर में एक बड़ी मशाल जलाई जाती थी। यह याद करते हुए कि कैसे परमात्मा ने आग का खंबा बनकर उन लोगों की अगुवाई की थी (जनगणना 14:14)। प्रभु येशु ने इस अवसर पर उन्हें बताया कि वह उसी चट्टान के समान है जिससे पानी निकला था। यहाँ प्रतीकात्मक रूप से पवित्र आत्मा को संदर्भित किया गया है जो प्यासे व्यक्ति के लिए उंडेला जाता है (योहन 7:37) और उस प्रकाश के समान भी है जो सबको मार्ग दिखाता है (योहन 8:12)।

*__7:8__ *अभी*-- कुछ हस्तलिपियों में यह शब्द “अभी” नहीं लिखा है

बारे में बड़ी चर्चा थी। कुछ कहते थे, “वह भला मनुष्य है,” और कुछ
कहते थे, “नहीं, वह लोगों को धोखा दे रहा है।” 13 तो भी यहूदी धर्म
गुरुओं के डर के मारे कोई भी व्यक्ति प्रभु येशु के बारे में खुलकर नहीं
बोलता था।

गुरु येशु परमात्मा की ओर से हैं

14 जब उत्सव आधा समाप्त हो चुका तब गुरु येशु यरूशलेम महानगर के
यहूदी मंदिर में गए और वहाँ प्रवचन देने लगे। 15 यहूदी धर्मगुरुओं ने
हैरान होकर कहा, “इस व्यक्ति को बिना अध्ययन किए यह ज्ञान* कहाँ
से प्राप्त हुआ?”
16 गुरु येशु ने उत्तर दिया --

जो शिक्षा मैं देता हूँ, वह मेरी ओर से नहीं परंतु परमात्मा की ओर
से है, जिन्होंने मुझे भेजा है। 17 यदि कोई परमात्मा की इच्छा पूरी
करना चाहता है तो वह इस शिक्षा के बारे में जान जाएगा कि यह
परमात्मा की ओर से है या मैं अपनी ओर से बोल रहा हूँ। 18 जो
अपने विचार रखता है, वह अपना आदर चाहता है, पर जो अपने
भेजने वाले का आदर चाहता है, वह सच्चा है, उसमें कोई छल
नहीं। 19 क्या गुरु मोशे ने तुम्हें नियम-शास्त्र नहीं दी है? पर तुम में से
कोई भी व्यक्ति उसके अनुसार आचरण नहीं करता। तुम मुझे मारना

---

*7:15 ***गुरु येशु का ज्ञान*** -- गुरु येशु को ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ? दूसरे यहूदी युवकों के समान उन्होंने भी समाज और अपने माता-पिता से काफी कुछ सीखा। छोटी उम्र में ही उन्होंने पवित्र शास्त्र को पढ़ लिया था। जैसे-जैसे वह बड़े होते गए उनका ज्ञान भी बढ़ता गया। जब वह 12 साल के ही थे तो उनके ज्ञानपूर्ण बातों को सुनकर लोग हैरान रह जाते थे (लूकस 2:41,52 देखें)। उन्होंने अन्य धर्मगुरुओं की तरह किसी शिक्षण संस्थान से शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। उनके ज्ञान का स्रोत पवित्र शास्त्र और परमात्मा थे।

क्यों चाहते हो?
20 लोगों ने कहा, “तुममें प्रेत आत्मा है! तुम्हें कौन मार डालना चाहता
है?”
21 गुरु येशु ने उनको उत्तर दिया --
मैंने एक चमत्कार किया है और इस पर तुम हैरान हो। 22 निश्चित
ही तुम गुरु मोशे के खतना-संस्कार* का पालन करते हो (यद्यपि
इसकी शुरुआत मोशे से नहीं परंतु कुलपिताओं* से हुई है) और
विश्राम-दिवस पर भी तुम मनुष्य का खतना-संस्कार करते हो।
23 यदि विश्राम-दिवस पर मनुष्य का खतना होता है कि गुरु मोशे
का आदेश न टूटे, तो तुम मुझसे नाराज़ क्यों हो कि मैंने
विश्राम-दिवस पर एक मनुष्य के पूरे शरीर को स्वस्थ किया?
24 बिना सोचे-समझे न्याय करना छोड़ो, सच्चाई से सही न्याय करो।

मुझे परमात्मा ने भेजा है

25 इस पर यरूशलेम महानगर के कुछ निवासी कहने लगे, “क्या यह
वही नहीं जिनको वे मार डालने की कोशिश कर रहे हैं? 26 परंतु देखो,
यह तो यहाँ खुलकर बोल रहा है, फिर भी कोई इसे रोकता नहीं। कहीं

---

*7:22 *यहूदी खतना-संस्कार* -- खतना-संस्कार कुलपिता अब्राहम के समय से होता चला आ रहा था। परमेश्वर (यहोवा) और उनके लोगों के साथ प्रतिबद्धता के चिन्ह के रूप में यह संस्कार किया जाता था। इस संस्कार में जन्म के आठवें दिन बालक शिशुओं के लिंग के अगले भाग की थोड़ी-सी खाल को काटकर निकाल दिया जाता था। यह सब यहूदी पुरुषों के लिए करवाना अनिवार्य था। परंतु, प्रभु येशु के शुभ संदेश में शारीरिक खतना-संस्कार अनिवार्य नहीं है। इसके बदले में, येशु के नए शिष्य को (चाहे वे पुरुष हों या स्त्रिया, यहूदी हो या नहीं) “मन का खतना” मिलता है। जब आस्था के द्वारा प्रभु येशु शिष्यों को पाप से अलग कर पवित्र और सत्य पर आधारित जीवन देते हैं (रोमियों 2:28-29; कोलासियों 2:11)

*7:22 *कुलपिताओं* -- अर्थात् अब्राहम, इसहाक और याकोब

ऐसा तो नहीं कि हमारे अधिकारियों ने सचमुच मान लिया है कि यह राजा
मसीहा है? 27 पर इसको तो हम जानते हैं कि यह कहाँ से है। किंतु जब
राजा मसीहा आएगा तो किसी को मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है।”
28 तब गुरु येशु ने मंदिर में प्रवचन देते हुए ऊँची आवाज़ से कहा, “तुम
मुझे जानते हो! और तुम जानते हो कि मैं कहाँ से आया हूँ। मैं अपनी
इच्छा से नहीं आया परंतु सच्चे परमात्मा ने मुझे भेजा है जिन्हें तुम नहीं
जानते। 29 लेकिन मैं उनको जानता हूँ, क्योंकि मैं उनकी ओर से हूँ, और
उन्होंने मुझे भेजा है।” 30 इस पर वे गुरु येशु को गिरफ्तार करने की
कोशिश करने लगे, परंतु कोई उन्हें हाथ नहीं लगा सका, क्योंकि उनकी
गिरफ्तारी का समय अभी नहीं आया था।
31 फिर भी जनता में से बहुत से लोगों ने उन पर आस्था प्रकट की और
कहा, “जब राजा मसीहा आएगा तब वह क्या इस व्यक्ति से ज़्यादा
अद्‌भुत निशानी दिखाएगा?”
32 फैरीसियों ने गुरु येशु के बारे में जनता को इस प्रकार बातें करते सुना
तो उन्होंने और प्रधान पुरोहितों ने मंदिर के सुरक्षा कर्मियों को भेजा कि वे
गुरु येशु को गिरफ्तार करें। 33 तब गुरु येशु बोले, “थोड़ी देर के लिए मैं
तुम्हारे साथ हूँ, फिर मैं उनके पास जाऊँगा जिन्होंने मुझे भेजा है। 34 तुम
मुझे ढूँढ़ोगे और न पाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।”
35 यहूदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाने को है कि हम इसे नहीं
पाएँगे? क्या यह ग्रीक भाषा बोलने वाले प्रवासी-यहूदियों* के पास जाने
को है और ग्रीक भाषियों को भी शिक्षा देगा? 36 यह क्या बात है जो इसने
कही कि ‘तुम मुझे ढूँढ़ोगे और न पाओगे’ और ‘जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ

---

*7:35 *प्रवासी-यहूदियों* -- इस समय में, हज़ारों यहूदी इस्राएल के बाहर रोम साम्राज्य की अलग-अलग जगहों (जैसे मिस्र, सीरिया, ग्रीस और रोम में) रहा करते थे।

तुम नहीं आ सकते?’”

जीवन-जल

37 उत्सव के अंतिम दिन, जो उत्सव का प्रमुख दिन माना जाता है, गुरु
येशु ने खड़े होकर ऊँची आवाज़ से कहा, “यदि कोई प्यासा है तो मेरे
पास आए और पिए। 38 जैसा पवित्र शास्त्र का कहना है, ‘जो मुझ पर
आस्था रखेगा उसके मन के भीतर से जीवन देने वाली नदियाँ फूट
पड़ेंगी।’”* 39 वह पवित्र आत्मा के बारे में बात कर रहे थे, इसे प्राप्त करने
वाले वे लोग होंगे जो उन पर आस्था रखते थे। उन्हें अभी तक पवित्र
आत्मा नहीं मिला था क्योंकि गुरु येशु को अभी तक उनकी पूरी महिमा
प्रदान नहीं की गई थी।
40 यह संदेश सुनकर कुछ लोग कहने लगे “सचमुच यह वही दिव्य
ज्ञानी हैं जो आने वाले थे” 41 कुछ अन्य कहने लगे, “यह राजा मसीहा
हैं।” परंतु कुछ ने कहा, “राजा मसीहा का आना गलील प्रदेश से तो होगा
नहीं। 42 क्या पवित्र शास्त्र में नहीं लिखा है कि राजा दाविद के वंश से
और दाविद के जन्म-स्थान बैतलहम* से राजा मसीहा का आना होगा?”
43 इस प्रकार गुरु येशु के कारण लोगों में मतभेद हो गया। 44 कुछ लोग

---

*7:38 ***यदि कोई प्यासा है*** -- इन पदों का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है -- “यदि कोई प्यासा है तो मेरे पास आए और जो मुझ पर आस्था रखता है पिए! जैसा पवित्र शास्त्र का कहना है, ‘उसके मन के भीतर से जीवन देने वाली जल की नदियाँ फूट पड़ेंगी।’”

*7:42 ***बैतलहम गाँव*** -- यहूदी दिव्य ज्ञानी मिकाह ने 600 साल पूर्व ही इस्राएल देश के होने वाले शासक के बारे में भविष्यवाणी कर दी थी कि उसका जन्म बैतलहम गाँव में होगा (मिकाह 5:2)। राजदूत मत्तिया ने गुरु येशु का राजा दाविद के परिवार से संबंध और उनके बैतलहम में जन्म लेने की पूरी कहाँनी बताई है। बालक येशु और उनके माता-पिता ने बैतलहम गाँव छोड़ दिया था और गलील के नाज़रत नामक नगर में बस गए थे। उस समय येशु बालक ही थे।

उन्हें गिरफ्तार करना चाहते थे, पर कोई उन्हें हाथ नहीं लगा सका।

गुरु येशु की बातें अनूठी हैं

45 तब मंदिर के सुरक्षा कर्मियों, प्रधान पुरोहितों और फैरीसियों के पास
लौट गए। उन्होंने सुरक्षा कर्मियों से पूछा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”
46 उन्होंने उत्तर दिया, “जिस प्रकार यह मनुष्य बातें करता है उस प्रकार
अब तक किसी ने नहीं की।”
47 फैरीसियों ने कहा, “क्या उसने तुम्हें भी धोखा दिया? 48 क्या
अधिकारियों या फैरीसियों में से किसी ने भी उसमें आस्था प्रकट की है?
49 नियम-शास्त्र से अनजान यह भीड़ तो वैसे ही शापित है।”
50 उनमें से एक व्यक्ति, निकोदेमस ने, जो पहले एक बार गुरु येशु के
पास आ चुका था, उनसे कहा, 51 “क्या हमारी नियम-शास्त्र मनुष्य को,
जब तक पहले उसका पक्ष सुन न ले और जान न ले कि उसने क्या
किया, उसे दोषी ठहराता है?”
52 उन्होंने उत्तर दिया, “क्या तुम भी गलील प्रदेश के निवासी हो? शास्त्र
का अध्ययन करो और देखो कि गलील में दिव्य ज्ञानी पैदा नहीं होते।”
53 [तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए।]*

8

पहला पत्थर कौन मारे?

1 [गुरु येशु जैतून नामक छोटे पहाड़ को चले गए* 2 और सुबह वह फिर

---

*7:53 *[तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए।]* -- यह अंश बहुत-सी प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं पाया जाता।

*8:1 *[गुरु येशु ...अब से फिर पाप न करना।]* -- यह अंश (योहन 8:1-11) बहुत-सी प्राचीन

मंदिर में आए। सारे लोग उनके पास आए और गुरु येशु बैठकर उन्हें शिक्षा देने लगे।
3 तब शास्त्र के ज्ञानी और फैरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार करते
हुए पकड़ी गई थी। वे उसे बीच में खड़ा करके बोले, 4 "गुरुजी, यह स्त्री
व्यभिचार-कर्म में पकड़ी गई है। 5 नियम-शास्त्र में गुरु मोशे ने हमें आज्ञा
दी है कि ऐसी स्त्रियों को पथराव कर मार डाला जाए। पर आप क्या
कहते हैं?"
6 उन्होंने यह प्रश्न गुरु येशु की परीक्षा करने के लिए पूछा था ताकि वे
उन पर आरोप लगा सकें। गुरु येशु नीचे झुककर अँगुली से भूमि पर
लिखने लगे। 7 पर जब वे लोग उनसे पूछते ही रहे, तब उन्होंने अपना सिर
उठाकर कहा, "तुममें से जिस व्यक्ति ने कभी पाप न किया हो, वह
पहला पत्थर मारे।" 8 और फिर नीचे झुककर भूमि पर लिखने लगे।
9 यह सुनकर पहले बड़े लोग और तब उसके बाद एक-एक करके सब
वहाँ से चले गए। केवल गुरु येशु और वह स्त्री, जो बीच में खड़ी थी,
वहाँ रह गए। 10 गुरु येशु ने सिर उठाकर उस स्त्री से पूछा, "बहन, वे
लोग कहाँ हैं? क्या किसी ने तुम्हें दंड के योग्य नहीं समझा?"
11 उसने कहा, "प्रभु जी, किसी ने नहीं।"
प्रभु येशु बोले, "मैं भी तुम्हें दंड की आज्ञा नहीं देता। जाओ, अब से
फिर पाप न करना।"]

गुरु येशु मंदिर परिसर में

12 फिर गुरु येशु ने लोगों से कहा, "मैं संसार के लिए ज्योति हूँ। मेरा
भक्त अंधकार में नहीं भटकेगा, परंतु वह ज्योति पाएगा जो उसे मोक्ष मार्ग

हस्तलिपियों में नहीं पाया जाता है।

पर ले जाएगी।”
13 फैरीसी बोले, “तुम अपने ही बारे में गवाही देते हो, तुम्हारी गवाही
सच नहीं।”
14 गुरु येशु ने उन्हें उत्तर दिया --
मैं अपने बारे में स्वयं गवाही दे रहा हूँ, तो भी मेरी गवाही मान्य है,
क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया और कहाँ जा रहा हूँ।
किंतु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया और कहाँ जा रहा हूँ।
15 तुम सांसारिक दृष्टि से न्याय करते हो, परंतु मैं किसी का ऐसा
न्याय नहीं करता 16 और यदि मैं न्याय करूँ तो वह सच्चा होगा,
क्योंकि न्याय मैं अकेला नहीं करता, परंतु मैं और मेरे भेजने वाले
पिता परमात्मा, दोनों साथ मिलकर न्याय करते हैं। 17 तुम्हारी
नियम-शास्त्र में भी लिखा है कि दो मनुष्यों की गवाही सच होती है।
18 मैं अपने बारे में स्वयं गवाह हूँ और मेरे भेजने वाले पिता भी मेरे
बारे में गवाही देते हैं।
19 तब उन्होंने पूछा, “तुम्हारा पिता कहाँ है?”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “तुम न तो मुझे जानते हो और न मेरे पिता को।
यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते।” 20 यह संदेश गुरु येशु ने
मंदिर के परिसर में प्रवचन करते समय उस जगह पर दिया था, जहाँ दान
लिया जाता था। परंतु किसी ने उनको गिरफ्तार नहीं किया, क्योंकि
उनकी गिरफ्तारी का समय अभी नहीं आया था।

आनेवाले दंड के बारे में चेतावनी

21 गुरु येशु ने फिर यहूदी अधिकारियों से कहा, “मैं जा रहा हूँ, तुम मुझे
ढूँढ़ते- ढूँढ़ते अपने ही पाप में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम

नहीं आ सकते।”
22 तब अधिकारी आपस में कहने लगे , “वह आत्महत्या तो नहीं कर
लेगा, क्योंकि कह रहा है, ‘जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।’”
23 परंतु गुरु येशु ने कहा, “तुम नीचे अर्थात् पृथ्वी से हो, पर मैं ऊपर
अर्थात् परमात्मा से आया हूँ। तुम इस संसार के हो, मैं इस संसार का नहीं
हूँ। 24 मैंने कहा था कि ‘तुम अपने पापों का लेखा मिटे बिना ही मरोगे।’
क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं ऊपर अर्थात् परमात्मा से
आया हूँ, तो तुम अपने पापों के बंधन में ही मरोगे।”
25 उन्होंने उनसे पूछा, “तुम कौन हो?”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हें शुरू से बता रहा हूँ कि मैं कौन हूँ।*
26 मुझे तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहना और न्याय करना है। जिन्होंने मुझे
भेजा है वे सच्चे हैं, और मैं वे बातें संसार को बताऊँगा जो उन्होंने मुझे
बताई हैं।” 27 लोग नहीं जानते थे कि गुरु येशु उनसे पिता परमात्मा के
बारे में कह रहे हैं। 28 तब गुरु येशु ने कहा, “जब तुम मुझे सूली पर
चढ़ाओगे तब जानोगे कि मैं वही तेजस्वी मानव-पुत्र हूँ और मैं अपने आप
कुछ नहीं करता, परंतु जैसा पिता परमात्मा ने मुझे सिखाया, वैसा ही मैं
बोलता हूँ। 29 जिन्होंने मुझे भेजा, वह मेरे साथ हैं और उन्होंने मुझे अकेला
नहीं छोड़ा है, क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ जिससे वह खुश होते हैं।”
30 गुरु येशु जब ये बातें कह रहे थे तब बहुत लोगों ने उन पर विश्वास
किया।

मुक्त कैसे हों?

---

*8:25 ***मैं तुम्हें शुरू से बता रहा हूँ कि मैं कौन हूँ*** -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “मैं तुमसे बात ही क्यों कर रहा हूँ” लिखा है

31 गुरु येशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन पर आस्था प्रकट की थी,
कहा, “यदि तुम मेरी शिक्षाओं पर चलते रहोगे तो तुम वास्तव में मेरे
शिष्य होगे 32 और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।”
33 उन्होंने उत्तर दिया, “हम कुलपिता अब्राहम* के वंशज हैं। हम कभी
किसी के गुलाम नहीं बने। तुम यह कैसे कहते हो कि ‘तुम मुक्त होगे?’”
34 गुरु येशु ने कहा --

मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, पाप करने वाला हर एक व्यक्ति
पाप का दास है। 35 दास हमेशा अपने मालिक के परिवार में नहीं
रहता, पर पुत्र हमेशा रहता है। 36 यदि पुत्र तुम्हें पापों से मुक्त करे तो
तुम वास्तव में मुक्त होगे। 37 मैं जानता हूँ कि तुम कुलपिता अब्राहम
के वंशज हो, पर तुम मुझे मार डालने के उपाय कर रहे हो, क्योंकि
मेरे संदेश के लिए तुम्हारे मन में कोई स्थान नहीं है। 38 जो कुछ मैंने
अपने पिता परमात्मा के यहाँ देखा है, वही कहता हूँ। उसी प्रकार
तुमने जो अपने पिता* से सुना, वही तुम करते हो।

39 उन्होंने गुरु येशु से कहा, “हमारे पिता अब्राहम हैं।”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यदि तुम कुलपिता अब्राहम के वंशज होते तो
अब्राहम के समान जीवन बिताते।* 40 मैंने वह सत्य तुम पर प्रकट किया
है जो परमात्मा ने मुझे बताया था पर तुम मुझे मारना चाहते हो। कुलपिता
अब्राहम ने ऐसे काम नहीं किए। 41 वास्तव में तुम्हारा पिता कोई और है

---

*8:33 *कुलपिता अब्राहम* -- कुलपिता अब्राहम और उनकी पत्नी साराह सब यहूदी लोगों के पूर्वज माने जाते हैं। अब्राहम 4000 साल पहले पृथ्वी पर थे (गुरु येशु से 2000 साल पहले)।

*8:38 -- *जो कुछ अपने पिता से सुना* कुछ हस्तलिपियों में इसके स्थान पर “जो कुछ पिता (परमात्मा) से सुना” लिखा है।

*8:39 *तो अब्राहम के समान जीवन बिताते*-- कुछ हस्तलिपियों में इसके स्थान पर “तो अब्राहाम के समान व्यवहार भी करो” लिखा है।

और तुम अपने पिता के समान जीवन बिताते हो।”
वे बोले, “हम नाजायज़ संतान नहीं हैं और हमारे पिता एक हैं, अर्थात् परमात्मा।”
42 गुरु येशु ने कहा --
यदि परमात्मा तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझसे प्रेम करते, क्योंकि मैं परमात्मा की ओर से आया हूँ। मैं स्वयं नहीं आया परंतु उन्होंने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम मेरे संदेश स्वीकार नहीं कर सकते। 44 तुम तो अपने पिता प्रेत सम्राट शैतान से हो और उसकी इच्छा पूरी करना चाहते हो। वह शुरू से ही हत्यारा था। वह सत्य पर नहीं चला, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, अपने स्वभाव के अनुसार ही बोलता है, क्योंकि उसने झूठ की शुरुआत की और झूठ का बाप है।
45 परंतु मैं सच ही बोलता हूँ, इसलिए तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। 46 तुममें से कौन मुझ पर पाप का दोष लगाता है? यदि मैं सत्य कहता हूँ तो तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते? 47 जो परमात्मा का है, वह परमात्मा का संदेश सुनता है और उनकी आज्ञा मानता है। तुम परमात्मा के नहीं हो, इसलिए उनका संदेश नहीं सुनते और न उनकी आज्ञा मानते।

मृत्यु से कैसे बचें

48 यहूदियों ने कहा, “क्या हमारा यह कहना ठीक नहीं कि तुम समेरी हो और तुम में प्रेत आत्मा है?”
49 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं किसी प्रेत आत्मा के पंजे में नहीं, क्योंकि

मैं अपने पिता परमात्मा का आदर करता हूँ, पर तुम मेरा अनादर कर रहे
हो। 50 मैं अपना सम्मान नहीं चाहता। परमात्मा मेरा सम्मान करेंगे और
वही सच्चा न्याय करते हैं। 51 मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, यदि कोई
व्यक्ति मेरे संदेश का पालन करता है, तो वह कभी नहीं मरेगा।"
52 तब लोगों ने कहा, "अब हम जान गए हैं कि तुममें प्रेत आत्मा है।
अब्राहम मर गए और दिव्य ज्ञानी भी। पर तुम कहते हो, 'यदि कोई
व्यक्ति मेरे संदेश का पालन करता है, तो वह कभी नहीं मरेगा।' 53 हमारे
पूर्वज अब्राहम तो मर गए। क्या तुम उनसे महान हो? दिव्य ज्ञानी भी मर
गए। तुम अपने को समझते क्या हो?"

सनातन गुरु येशु और कुलपिता अब्राहम

54 गुरु येशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं स्वयं अपना सम्मान करूँ तो इसका
कोई अर्थ नहीं। मुझे सम्मानित करने वाले मेरे पिता हैं जिन्हें तुम कहते हो
कि वह तुम्हारा परमात्मा हैं। 55 तुम उन्हें नहीं जानते पर मैं उन्हें जानता
हूँ। यदि मैं कहूँ कि मैं उन्हें नहीं जानता तो तुम्हारे समान झूठा ठहरूँगा।
पर मैं उन्हें जानता हूँ और उनके संदेश का पालन करता हूँ। 56 तुम्हारे
पूर्वज अब्राहम खुश हुए जब उन्होंने सोचा कि मैं भविष्य में क्या करने
वाला हूँ। उन्होंने दर्शन देखा और आनंदित हुए।"
57 तब यहूदी बोले, "अभी तुम पचास साल के भी नहीं, और तुम
अब्राहम को देख चुके हो?"*
58 गुरु येशु ने उनसे कहा, "मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, अब्राहम के
जन्म के पहले से मैं हूँ!" 59 तब लोगों ने गुरु येशु को मारने के लिए पत्थर

---

*8:57 *और तुम अब्राहम को देख चुके हो?*-- कुछ हस्तलिपियों में इसके स्थान पर "और
अब्राहम ने तुम्हें देखा है?" लिखा है।

उठाए, परंतु वह छिपकर मंदिर के आँगन से बाहर निकल गए।

9

जन्म से अंधे मनुष्य को दृष्टिदान

1 मार्ग में गुरु येशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा था। 2 उनके
शिष्यों ने उनसे पूछा, “गुरुजी, किसने पाप किया? इसने या इसके
माता-पिता ने, जिसके कारण यह मनुष्य अंधा पैदा हुआ?”
3 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “न तो इसने पाप किया और न इसके
माता-पिता ने। परंतु यह अंधा पैदा हुआ ताकि इसे स्वस्थ करने से
परमात्मा की शक्ति प्रकट हो जाए। 4 जिन्होंने मुझे भेजा है उनका काम
दिन बीतने से पहले हमें* खत्म कर लेना चाहिए। रात होने पर है, जब
कोई व्यक्ति काम नहीं कर सकता। 5 जब तक मैं संसार में हूँ, मैं संसार
की ज्योति हूँ।”
6-7 यह कहकर गुरु येशु ने भूमि पर थूका। थूक से मिट्टी का लेप बनाया
और यह लेप अंधे की आँखों पर लगाकर कहा, “जाओ और इसे सिलोम
के तालाब में धो लो।” सिलोम का अर्थ है, भेजा हुआ। तो अंधा मनुष्य
गया। उसने वहाँ आँखें धोईं और देखने लगा।
8 उसके पड़ोसी और वे लोग जो पहले उसे भीख माँगते हुए देखा करते
थे, बोले, “क्या यह वही नहीं जो बैठा हुआ भीख माँगा करता था?”
9 कुछ ने कहा, “हाँ, वही है।”
अन्य बोले, “नहीं, उस जैसा है।”
वह भिखारी कहता रहा “मैं वही हूँ।”

---

*__9:4__ ***हमें*** -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “मुझे” लिखा है

10 उन्होंने पूछा, “तुम्हारी आँखें कैसे ठीक हुईं?”
11 उसने उत्तर दिया, “येशु नामक एक मनुष्य ने मिट्टी का लेप बनाया
और उसे मेरी आँखों पर लगाया और कहा, ‘सिलोम के कुंड पर जाओ
और अपनी आँखें धो लो।’ इसलिए मैं वहाँ गया और आँखें धोने के बाद
मैं देखने लगा।”
12 उन्होंने उससे पूछा, “वह कहाँ है?”
उसने उत्तर दिया, “मैं नहीं जानता।”

फैरीसियों द्वारा जाँच-पड़ताल

13 लोग उस मनुष्य को जो पहले अंधा था, फैरीसियों के पास लाए।
14 विश्राम-दिवस पर ही गुरु येशु ने मिट्टी का लेप बनाकर उसकी आँखें
ठीक की थीं। 15 इसलिए फैरीसियों ने उससे फिर पूछा, “तुम्हारी आँखें
कैसे ठीक हो गईं?”
उसने कहा, “उन्होंने मिट्टी का लेप मेरी आँखों पर लगाया। मैंने आँखों
को धोया, और अब मैं देख सकता हूँ।”
16 कुछ फैरीसी कहने लगे, “वह मनुष्य परमात्मा की ओर से नहीं,
क्योंकि उसने विश्राम-दिवस के नियम को तोड़ा है।” पर दूसरों ने कहा,
“ऐसे चमत्कारी चिन्ह एक पापी मनुष्य कैसे दिखा सकता है?” इस
कारण उनमें मतभेद हो गया।
17 उन्होंने उससे जो पहले अंधा था, फिर पूछा, “तुम उस मनुष्य के बारे
में क्या कहते हो जिसने तुम्हारी आँखें ठीक कर दी हैं?”
उसने कहा, “वह एक दिव्य ज्ञानी हैं।”
18 यहूदी धर्मगुरुओं को विश्वास नहीं हुआ कि वह, जो पहले अंधा था,
अब देख सकता है। इसलिए उन्होंने उसके माता-पिता को बुलवाया,

19 और उनसे पूछा “क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अंधा
पैदा हुआ था? फिर यह देख कैसे रहा है?”
20 उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है,
और यह अंधा पैदा हुआ था। 21 पर अब कैसे देखने लगा, यह हम नहीं
जानते, और न हम यह जानते हैं कि किसने इसकी आँखें ठीक कर दीं।
उसी से पूछिए -- वह बच्चा नहीं है। वह अपने बारे में स्वयं बता सकता
है।” 22 उसके माता-पिता ने यह बात इसलिए कही कि वे यहूदी
धर्मगुरुओं से डरते थे। यहूदी धर्मगुरुओं ने एका कर लिया था कि यदि
कोई व्यक्ति गुरु येशु को राजा मसीहा मानकर स्वीकार करेगा, उसको
यहूदी समाज-भवन से निकाल दिया जाएगा। 23 इसी कारण उसके
माता-पिता ने कहा था, “वह बच्चा नहीं है, उससे पूछिए।”
24 तो फैरीसियों ने उसे जो पहले अंधा था दूसरी बार बुलाया और उससे
कहा, “परमात्मा की शपथ खाओ और सच बोलो! हम जानते हैं कि वह
मनुष्य अधर्मी है।”
25 उसने उत्तर दिया, “वह अधर्मी है या नहीं, यह मैं नहीं जानता, किंतु
एक बात मैं जानता हूँ कि पहले मैं अंधा था और अब देख सकता हूँ।”
26 फैरीसियों ने पूछा, “उसने तुम्हारे साथ क्या किया? कैसे तुम्हारी
आँखें ठीक कर दीं?”
27 उसने उत्तर दिया, “मैंने आपको बता दिया है, पर आपने सुना ही
नहीं। आप फिर क्यों सुनना चाहते हैं? क्या आप भी उनके शिष्य बनना
चाहते हैं?”
28 इस पर वे उसे गाली देकर बोले, “तू होगा उसका शिष्य, हम तो गुरु
मोशे के शिष्य हैं। 29 हम जानते हैं कि परमात्मा ने गुरु मोशे से बातें कीं,
पर हम नहीं जानते कि यह व्यक्ति कहाँ से है।”

30 उस मनुष्य ने उत्तर दिया, “हैरानी की बात है कि आप नहीं जानते कि
वह कहाँ से आए हैं, फिर भी उन्होंने मेरी आँखें ठीक कर दीं। 31 हम
जानते हैं कि परमात्मा अधर्मियों की नहीं सुनते, परंतु यदि कोई व्यक्ति
उनका आदर सम्मान करता हो और उनकी इच्छा के अनुसार चले तो
वह उसकी सुनते हैं। 32 इतिहास में इससे पहले अब तक यह सुनने में
नहीं आया कि किसी ने जन्म से अंधे की आँखें ठीक की हों। 33 यदि वह
परमात्मा की ओर से नहीं होते तो वह कुछ भी नहीं कर पाते।”
34 उन्होंने उत्तर दिया, “तू अधर्मी है और पाप में पैदा हुआ है। तेरी
औकात क्या कि तू हमें कुछ सिखाए?” और फैरीसियों ने उसे यहूदी
समाज-भवन से निकाल दिया।
35 जब गुरु येशु ने यह सुना कि उन्होंने उस व्यक्ति को यहूदी
समाज-भवन से बाहर निकाल दिया है, तो उससे मिलने पर उन्होंने पूछा,
“क्या तुम तेजस्वी मानव-पुत्र* पर आस्था रखते हो?”
36 उसने पूछा, “प्रभुजी, वह कौन है? उनके बारे में मुझे और बताइए
ताकि मैं उस पर आस्था रख सकूँ!”
37 गुरु येशु ने उससे कहा, “तुमने उसे देखा है और जो तुमसे बात कर
रहा है, वह वही है।”
38 वह गुरु येशु* के चरणों पर झुक गया और बोला, “हाँ प्रभुजी, मैं
आस्था रखता हूँ!”
39 प्रभु येशु ने कहा, “मैं संसार में न्याय करने के लिए आया हूँ कि जो
नहीं देखते, वे देखें और जो देखते हैं, वे अंधे हो जाएँ।”

---

*9:35 ***तेजस्वी मानव-पुत्र*** -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “परमात्मा-पुत्र” लिखा है।

*9:38 ***वह गुरु येशु...*** -- “वह गुरु येशु के चरणों पर झुक गया और बोला ‘हाँ प्रभुजी, मैं आस्था रखता हूँ!’ प्रभु येशु ने कहा” -- कुछ हस्तलिपियों में यह वाक्य नहीं लिखा है।

40 उनके साथ कुछ फैरीसी थे। वे यह सुनकर बोले, “क्या हम भी अंधे
हैं?”
41 प्रभु येशु ने कहा, “यदि तुम अंधे होते तो दोषी न होते। पर तुम कहते
हो कि तुम्हें दिखाई देता है, इसलिए तुम्हारा दोष बना रहता है।”

10

मुक्ति द्वार

1 प्रभु येशु ने कहा --

मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, वह जो दरवाज़े से भेड़शाला के
अंदर नहीं आता किंतु दूसरी ओर से चढ़कर आता है, वह चोर और
लुटेरा है। 2 जो दरवाज़े से अंदर आता है, वह भेड़ों का चरवाहा है।
3 चरवाहे के लिए द्वारपाल दरवाज़ा खोल देता है। जब चरवाहा
अपनी भेड़ों को घास चराने के लिए उनका नाम लेकर बुलाता है तो
भेड़ें चरवाहे की आवाज़ पहचान लेती हैं।

4 अपनी सब भेड़ों को निकाल लेने पर वह उनके आगे-आगे
चलता है और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती हैं, क्योंकि वे उसकी
आवाज़ पहचानती हैं। 5 वे किसी अजनबी के पीछे नहीं जाएँगी
परन्तु उससे दूर भागेंगी क्योंकि वे अजनबी की आवाज़ नहीं
पहचानतीं।

6 गुरु येशु ने यह उदाहरण उन्हें बताया, परंतु वे समझ ही नहीं पाए कि
वह क्या कहना चाह रहे थे। 7 इसलिए गुरु येशु ने फिर कहा --

मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, भेड़ों का प्रवेश-द्वार मैं हूँ। 8 जो

मुझसे* पहले आए, वे सब चोर और लुटेरे थे। भेड़ों ने उनकी
आवाज़ नहीं सुनी। 9 द्वार मैं हूँ। जो मुझ-द्वार से प्रवेश करेगा, वह
मोक्ष पाएगा और बिना किसी डर के अंदर और बाहर
आएगा-जाएगा और उसको अच्छा भोजन प्राप्त होगा।
10 चोर केवल चुराने, हत्या करने और नष्ट करने आता है। मैं
इसलिए आया हूँ कि लोग मोक्ष का लाभ पाएँ। 11 आदर्श चरवाहा मैं
हूँ। आदर्श चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन तक देने को
तैयार रहता है। 12 मज़दूर, जो न चरवाहा है और न भेड़ों का
मालिक, जब भेड़िए को आते देखता है तो भेड़ों को छोड़कर भाग
जाता है। भेड़िया भेड़ो पर हमलाकर उनको तितर-बितर कर देता
है। 13 मज़दूर इस कारण भाग जाता है कि वह मज़दूर है, और उसे
भेड़ों की कोई चिंता नहीं होती।"
14-15 "आदर्श चरवाहा मैं हूँ। जैसे पिता परमात्मा मुझे जानते हैं और
मैं पिता को जानता हूँ, वैसे ही मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वे
मुझे जानती हैं। मैं अपनी भेड़ों के लिए मरने को भी तैयार हूँ। 16 मेरी
और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं हैं। मुझे उनको भी लाना
है और वे मेरी आवाज़ सुनेंगी। तब एक ही रेवड़ और एक ही
चरवाहा होगा।*
17 पिता परमात्मा मुझसे इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि मैं अपना
जीवन अर्पित करता हूँ कि मैं मरने के बाद दोबारा जीवित हो जाऊँ।
18 कोई मुझसे मेरा जीवन नहीं छीन सकता। मैं स्वयं अपना जीवन
अर्पित करता हूँ। मुझे अधिकार है कि मैं अपना जीवन अर्पित करूँ

---

*10:8 ***मुझसे*** -- कुछ हस्तलिपियों में यह शब्द नहीं लिखा है।

*10:16 यहेजकेल 34:23

और मुझे यह भी अधिकार है कि मैं मरने के बाद दोबारा जीवित हो
जाऊँ। मुझे अपने पिता की ओर से यह आदेश मिला है।
19 इन शब्दों के कारण वहाँ पर खड़े यहूदियों में फिर मतभेद हो गया।
20 बहुत से कहने लगे, “उसमें प्रेत आत्मा है, वह पागल है -- उसकी क्यों
सुनते हो?”
21 अन्य बोले, “ये बातें भूत से जकड़े हुए व्यक्ति की-सी नहीं हैं। क्या
भूत अंधों की आँखें खोल सकता है?”

भेड़ों की आवाज़ पहचानना

22 ठंड का मौसम था और यरूशलेम महानगर में मंदिर का समर्पण
उत्सव* मनाया जा रहा था। 23 गुरु येशु मंदिर परिसर के राजा शलोमो
नामक बरामदे में टहल रहे थे। 24 यहूदी लोग गुरु येशु के चारों ओर
इकट्ठा हो गए और पूछने लगे, “आप कब तक हमें दुविधा में डाले रहेंगे?
यदि आप राजा मसीहा हैं, तो हमसे स्पष्ट कह दीजिए।”
25 गुरु येशु ने उत्तर दिया --
मैं तुमसे कह चुका हूँ, पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो काम मैं
अपने पिता परमात्मा के नाम से करता हूँ, वे मेरी गवाही देते हैं।
26 पर तुम विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो
जैसा मैंने तुम्हें कहा था।* 27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें
जानता हूँ, और वे मेरे पीछे चलती हैं। 28 मैं उन्हें मोक्ष देता हूँ और
वे परमात्मा से कभी अलग नहीं होंगी। उन्हें मेरे हाथ से कोई कभी
छीन नहीं सकता। 29 मेरे पिता, जिन्होंने उनको मुझे दिया है, वह

---

*10:22 *मंदिर समर्पण उत्सव*-- यह ज्योति उत्सव यहूदी भाषा में “हनुका” कहलाता है। यह 164 ईसा पूर्व में यहूदी मंदिर के पुनःसमर्पण को याद करते हुए मनाया जाता है

*10:26 *जैसा मैंने तुम्हें कहा था* -- कुछ हस्तलिपियों में यह वाक्य नहीं लिखा है।

सबसे महान हैं, और उन्हें मेरे पिता परमात्मा के हाथ से कोई नहीं
छीन सकता। 30 मैं और मेरे पिता परमात्मा, हम एक हैं।

परमात्मा-पुत्र के विरोध

31 जो यहूदी वहाँ थे, उन्होंने फिर से गुरु येशु को मारने के लिए पत्थर
उठाए। 32 इस पर गुरु येशु ने उनसे पूछा, “पिता परमात्मा की ओर से मैंने
अनेक अच्छे काम तुम्हें दिखाए। उनमें से किस काम के लिए तुम मुझे
पत्थरों से मारना चाह रहे हो?”
33 यहूदियों ने कहा, “अच्छे कामों के लिए हम तुम्हें पत्थरों से नहीं
मारना चाहते। परंतु परमेश्वर की निंदा के लिए, क्योंकि तुम मनुष्य होकर
स्वयं के परमात्मा होने का दावा करते हो।”
34 गुरु येशु ने कहा --
क्या तुम्हारे शास्त्र में नहीं लिखा है, “मैंने कहा, तुम दिव्य हो?” **
35 जो पवित्र शास्त्र में लिखा है, टल नहीं सकता। यदि परमात्मा ने
उनको “दिव्य” कहा जिनके लिए परमात्मा का वचन कहा गया,
36 तो जिसे पिता परमात्मा ने पवित्र बनाकर संसार में भेजा, उसे तुम
कैसे कहते हो कि तुम परमात्मा की निंदा करते हो, क्योंकि मैंने
कहा, “मैं परमात्मा-पुत्र हूँ?” 37 यदि मैं अपने पिता के काम नहीं
कर रहा हूँ, तो मुझ पर विश्वास मत करो। 38 परंतु मैं अपने पिता

---

*__10:34__ ***तुम दिव्य हो*** -- यह संदर्भ भजन शास्त्र 82:6 में मिलता है जिसमें परमात्मा-लोक में स्थित परिषद् के शासकों को “दिव्य पुत्र” कहा गया है। ऐसा लगता है कि इन शक्तिशाली अदृश्य शासकों को उन देशों पर शासन करने के लिए परमात्मा द्वारा अधिकार दिया गया है जो यहूदी देश नहीं हैं, परंतु ये “दिव्य पुत्र” अन्याय से शासन कर रहे थे और मनुष्यों से निर्दयता से व्यवहार करते थे। इसके विपरीत, प्रभु येशु “दिव्य” होने का दावा नहीं कर रहे, परंतु यह कि परमात्मा ने उन्हें अपने पवित्र पुत्र के रूप में भेजा है।

*__10:34__ भजन शास्त्र 82:6

परमात्मा के काम कर रहा हूँ, तो तुमको मुझ पर विश्वास करना
चाहिए, लेकिन यदि तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते हो, तो
कम-से-कम मेरे कामों पर विश्वास करो ताकि तुम जान और समझ*
सको कि पिता परमात्मा मुझमें हैं और मैं पिता में।
39 इस पर उन्होंने फिर से गुरु येशु को गिरफ्तार करने की कोशिश की,
परंतु वह उनके हाथ से निकल गए। 40 गुरु येशु फिर यरदन नदी के पास
उस स्थान पर चले गए, जहाँ गुरु योहन पहले जल-संस्कार दिया करते
थे। वह वहीं रहे और 41 बहुत लोग उनके पास आने लगे। वे कहते थे,
“गुरु योहन ने कोई अद्‌भुत निशानी नहीं दिखाई, परंतु जो कुछ योहन ने
गुरु येशु बारे में कहा था, वह सब सच था।” 42 और वहाँ बहुत लोगों ने
गुरु येशु पर आस्था प्रकट की।

11

गुरु येशु के मित्र लाज़रस की मृत्यु

1 लाज़रस नामक एक मनुष्य बीमार था। वह अपनी बहनों मरियम तथा
मार्था के साथ बैतनिया गाँव में रहता था 2 यह वही मरियम थी जिसने प्रभु
येशु पर खुशबूदार तेल लगाया था और उनके चरणों को अपने बालों से
पोंछा था। इसी का भाई लाज़रस बीमार था। 3 दोनों बहनों ने गुरु येशु को
खबर भेजी, “हे प्रभु, आपका प्रिय मित्र बीमार है।”
4 गुरु येशु यह सुनकर बोले, “इस बीमारी का अंत मृत्यु नहीं। यह
बीमारी परमात्मा की महिमा को प्रकट करेगी। इसके द्वारा परमात्मा का
पुत्र महिमा प्राप्त करेंगे।” 5 हालाँकि गुरु येशु मार्था तथा उसकी बहन और

---

*10:38 ***और समझ*** -- कुछ हस्तलिपियों में इन शब्दों को नहीं लिखा है

लाज़रस से प्रेम करते थे, 6 फिर भी जब उन्होंने सुना कि लाज़रस बीमार
है, तब जहाँ वह थे, दो दिन और वहीं ठहरे रहे। 7 इसके बाद गुरु येशु ने
अपने शिष्यों से कहा, “आओ, हम फिर यहूदिया प्रदेश चलें।”
8 शिष्य बोले, “गुरुजी, कुछ समय पहले यरूशलेम महानगर के यहूदी
लोग पथराव करके आपको मार डालना चाहते थे। इस पर भी आप वहीं
जा रहे हैं?”
9 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “क्या दिन में बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई
दिन में चले तो ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह इस संसार में सूरज के
प्रकाश द्वारा देखता है। 10 परंतु यदि कोई रात में चले तो ठोकर खाता है,
क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं होता।” 11 इसके बाद गुरु येशु ने उनसे कहा,
“हमारा मित्र लाज़रस सो गया है। मैं उसे जगाने जाता हूँ।”
12 शिष्यों ने कहा, “प्रभु, यदि वह सो गया है तो ठीक हो जाएगा।”
13 (यह गुरु येशु ने उसकी मृत्यु के बारे में कहा था, परंतु शिष्य समझे कि
वह स्वाभाविक नींद के बारे में कह रहे हैं।)
14 तब गुरु येशु ने उनसे स्पष्ट कहा, “लाज़रस मर गया है। 15 तुम्हारे लिए
यह अच्छा हुआ कि मैं वहाँ नहीं था, ताकि तुम लोग विश्वास कर
सको। आओ, हम उसके पास चलें।”
16 थोमस न, जो जुडवाँ भी कहलाता था, अपने साथी शिष्यों से कहा,
“आओ, हम भी गुरुजी के साथ मरने चलें।”

गुरु येशु की मृत्यु पर विजय

17 गुरु येशु को बैतनिया गाँव पहुँचने पर पता चला कि लाज़रस के शव
को गुफा में रखे चार दिन हो चुके हैं। 18 बैतनिया यरूशलेम महानगर के
नज़दीक था, लगभग तीन किलोमीटर दूर। 19 अनेक यहूदी लोग मार्था

और मरियम के पास उनके भाई की मृत्यु पर उन्हें तसल्ली देने आए थे।
20 ज्योंही मार्था ने सुना कि गुरु येशु आ रहे हैं वह उनसे भेंट करने निकल
गई, पर मरियम घर में ही बैठी रही। 21 मार्था ने गुरु येशु से कहा, “प्रभु,
यदि आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। 22 किंतु अब भी मैं जानती हूँ
कि आप जो कुछ परमात्मा से माँगेंगे, परमात्मा आपको देंगे।”
23 गुरु येशु ने उससे कहा, “तुम्हारा भाई फिर जीवित होगा।”
24 उस पर मार्था बोली, “मैं जानती हूँ कि वह जीवित हो जाएगा जब
सब मृत लोग अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन जीवित किए
जाएँगे।”*
25 गुरु येशु ने कहा, “मृत को जीवित करने वाला और मोक्ष देने वाला मैं
हूँ। जो कोई मुझ पर आस्था रखता है, यदि वह मर भी जाए तो भी दुबारा
जीवित हो जाएगा, 26 और जो आस्थावान जीवित होगा वह कभी नहीं
मरेगा। क्या तुम यह विश्वास करती हो?”
27 उसने कहा, “हाँ प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि आप राजा मसीहा
और परमात्मा-पुत्र हैं जो संसार में आने वाले थे।”
28 इतना कहकर वह चली गई और अपनी बहन मरियम को बुलाकर
उससे चुपचाप बोली, “गुरुजी यहीं हैं और तुम्हें बुला रहे हैं।”
29 यह सुनते ही मरियम तुरंत उठी और गुरु येशु के पास आई।
30 गुरु येशु अभी गाँव में नहीं पहुँचे थे, परंतु उसी जगह पर थे जहाँ मार्था

---

*11:24 *अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन* - मार्था और यहूदी लोग पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते थे, परंतु इस बात पर कि मरने के बाद दोबारा जीवित होंगे ताकि इस शरीर में रहते हुए जो कर्म किए है परमात्मा उसका न्याय करे। यह दिन उन लोगों के लिए बहुत भयानक होगा जिन्होंने अपने पापों को नहीं छोड़ा और प्रभु येशु के शुभ संदेश पर विश्वास नहीं किया। परंतु येशु के शिष्य इस दिन से नहीं डरते, क्योंकि न केवल उन्होंने पापों को छोड़ दिया है बल्कि उन्हें गुरु येशु से माफी और अ-मृत जीवन प्राप्त हो चुका है।

उनसे मिली थी। 31 जब उन यहूदी लोगों ने जो मरियम को तसल्ली देने आए
थे, यह देखा कि वह जल्दी से उठी और घर से बाहर निकली है, तो वे
उसके पीछे-पीछे गए, क्योंकि वे समझे कि वह कब्र पर रोने जा रही है।
32 मरियम वहाँ आई जहाँ गुरु येशु थे। उनको देखते ही वह उनके चरणों
पर गिर पड़ी और बोली, "प्रभु! यदि आप यहाँ होते तो मेरा भाई नहीं
मरता।"
33 जब गुरु येशु ने उसे और उसके साथ यहूदी लोगों को रोते हुए देखा
तब वह मन में दुखी और बहुत परेशान हुए 34 और उनसे पूछा, "तुमने
उसको कहाँ रखा है?"
उन्होंने कहा, "प्रभु, आइए और देखिए।"
35 तब गुरु येशु रो पड़े।
36 यह देखकर कुछ यहूदियों ने कहा, "देखो, वह उनका कितना प्रिय
था।" 37 परंतु उनमें से कुछ बोले, "यह हैं, जिन्होंने अंधे की आँखें खोल
दीं, क्या वह लाज़रस को मरने से बचा नहीं सकते थे?"

लाज़रस को जीवनदान

38 गुरु येशु फिर मन में दुखी थे और वह गुफा पर आए। वह उस पत्थर
के पास आए जिससे शव रखने वाली गुफा का मुख बंद था। 39 गुरु येशु
ने कहा, "पत्थर हटाओ।"
मृत लाज़र की बहन मार्था बोली, "प्रभु, अब उसमें से बदबू आ रही
होगी, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।"
40 किंतु गुरु येशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि
तुम आस्था रखोगी तो परमात्मा की महिमा देखोगी?"
41 तब लोगों ने पत्थर हटा दिया। गुरु येशु ने आँखें ऊपर उठाईं और

कहा, “हे पिता परमात्मा, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मेरी
प्रार्थना सुन ली है। 42 मैं जानता हूँ कि आप हमेशा मेरी प्रार्थना सुनते हैं,
पर चारों ओर खड़े लोगों के कारण मैंने यह कहा था जिससे वे विश्वास
करें कि आपने मुझे भेजा है।” 43 यह कहकर गुरु येशु ने ऊँची आवाज़ से
पुकारा, “लाज़रस, बाहर निकल आ!” 44 तब लाज़रस जो मर गया था
जीवित बाहर निकल आया। उसके हाथ-पैर पट्टियों से लिपटे हुए थे और
उसका मुँह बड़े रूमाल से बंधा हुआ था। प्रभु येशु ने लोगों से कहा, “इसे
खोल दो और जाने दो।”

गुरु येशु की हत्या का षडयंत्र

45 यह सब देखकर मरियम के पास दुख प्रकट करने आए बहुत से
यहूदी लोगों ने गुरु येशु पर आस्था प्रकट की, 46 पर कुछ ने फैरीसियों के
पास जाकर बता दिया कि गुरु येशु ने क्या-क्या किया था। 47 इस पर
प्रधान पुरोहितों और फैरीसियों ने यहूदी धर्म-महासभा के सदस्यों को
इकट्ठा कर कहा, “हमें क्या करना चाहिए? यह तो बहुत चमत्कारी चिन्ह
दिखा रहा है। 48 यदि हम इसको यों ही छोड़ देंगे तो सब लोग इस पर
आस्था रखने लगेंगे और रोम शासक हमारे विरुद्ध कार्यवाई करके हमारे
मंदिर और हमारे लोगों दोनों को नष्ट कर देंगे।”
49 तब उनमें से एक व्यक्ति, काइफस, जो उस साल महापुरोहित था,
बोला, “आप कुछ जानते तो हैं नहीं 50 और न आप सोचते हैं कि आपकी
भलाई* इसमें है कि एक व्यक्ति जनता के लिए मरे और हमारा देश नष्ट न
हो।”
51 यह बात उसने अपनी ओर से नहीं कही, परंतु उस साल का

---

*11:50 *आपकी भलाई*-- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “हमारी भलाई” लिखा है।

महापुरोहित होने के कारण भविष्यवाणी की थी कि गुरु येशु यहूदी लोगों
के लिए मरेंगे, 52 और न केवल यहूदी लोगों के लिए , परंतु वह पूरे संसार
में परमात्मा के बिखरे हुए लोगों को, जो यहूदी नहीं हैं, इकट्ठा करके उन
सब को एक करेंगे।
53 तो यहूदी धर्मगुरु उस दिन से गुरु येशु को मार डालने की योजना
बनाने लगे। 54 इस कारण उस समय से गुरु येशु ने यहूदियों के बीच खुले
रूप से घूमना बंद कर दिया। वह एफ्राईम गाँव चले गए जो बंजर स्थान
के नज़दीक था और अपने शिष्यों के साथ वहीं रहने लगे।
55 यहूदियों का मुक्ति-उत्सव नज़दीक था और अनेक गाँवों से बहुत लोग
यरूशलेम महानगर में आए थे कि अपने आप को यहूदी रीति के अनुसार
शुद्ध करें। 56 वे गुरु येशु की खोज में थे और मंदिर के आँगन में खड़े हुए
आपस में पूछ रहे थे, “तुम्हारा क्या विचार है? क्या वह उत्सव पर नहीं
आएँगे?” 57 उधर प्रधान पुरोहितों और फैरीसियों ने आदेश दे रखा था कि
यदि किसी को यह पता हो जाए कि गुरु येशु कहाँ हैं तो वह व्यक्ति उन्हें
सूचना दे जिससे वे उन को गिरफ्तार कर सकें।

12

बहुमूल्य भक्ति

मत्तिया 26:6-13; मरकस 14:3-9

1 तब मुक्ति-उत्सव के छः दिन पहले गुरु येशु बैतनिया गाँव में आए,
जहाँ लाज़रस रहता था जिसे गुरु येशु ने मरे हुओं में से जीवित किया था।
2 वहाँ गुरु येशु के सम्मान में भोज दिया गया था । मार्था सेवा-कार्य कर
रही थी और गुरु येशु के साथ भोजन करने वालों में लाज़रस भी शामिल

था। [3] तब मरियम ने बहुमूल्य शुद्ध जटामांसी जड़ी-बूटी* का लगभग तीन
सौ ग्राम खुशबूदार तेल लिया और उसको गुरु येशु के चरणों पर मला
और उनके चरणों को अपने बालों से पोंछने लगी। उस तेल की खुशबू से
सारा घर महक उठा। [4] इस पर गुरु येशु का एक शिष्य, यहूदा इसकरयोत
जो उनसे विश्वासघात करने वाला था, बोला, [5] "इस तेल का मूल्य चाँदी
के तीन सौ सिक्कों के बराबर था, इसे बेचकर गरीबों को क्यों नहीं दिया
गया?" [6] उसने यह बात इसलिए नहीं कही थी कि उसे गरीबों की चिंता
थी, परन्तु वह चोर था। उसके पास उनके पैसों की थैली रहती थी और
जो कुछ दान उसमें डाला जाता था वह उसे चुरा लेता था।
[7] गुरु येशु ने कहा, "उसे रहने दो। उसने यह मेरे अंतिम संस्कार की
तैयारी के लिए किया है। [8] सहायता करने के लिए गरीब तो हमेशा तुम्हारे
साथ रहेंगे, पर मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूँगा।"
[9] बहुत से यहूदी लोगों को पता चला कि गुरु येशु वहाँ हैं, इसलिए लोग
केवल उन्हीं को देखने नहीं, परंतु लाज़रस को भी देखने आए जिसे गुरु
येशु ने मरे हुओं में से जीवित किया था। [10] इस पर प्रधान पुरोहित
लाज़रस की भी हत्या करने की योजना बनाने लगे, [11] क्योंकि लाज़रस के
कारण अनेक यहूदी अपने धर्मगुरुओं को छोड़कर गुरु येशु पर आस्था
रखने लगे थे।

यरूशलेम महानगर में प्रवेश

मत्तिया 21:1-11; मरकस 11:1-11; लूकस 19:28-44

[12] दूसरे दिन उत्सव मनाने आई बड़ी भीड़ ने सुना कि गुरु येशु यरूशलेम

---

*12:3 ***बहुमूल्य जटामांसी जड़ी-बूटी*** -- एक महँगी जड़ी-बूटी, जिसके द्वारा मरियम ने प्रभु येशु
के चरणों को मला था, हिमालय पर्वत में पाई जाती है।

महानगर आ रहे हैं। 13 लोगों ने खजूर के पेड़ की शाखाएँ लीं और वे गुरु
येशु से भेंट करने निकले। वे ऊँची आवाज़ में कह रहे थे,
"हमारे मसीहा का गुणगान हो!
परमेश्वर के नाम से आने वाले को आशीर्वाद मिले!
इस्राएल के राजा को आशीर्वाद मिले!"*
14 गुरु येशु को एक गधे का बच्चा मिला और उस पर वह बैठ गए, जैसा
पवित्र शास्त्र का लेख है,
15 "ओ यरूशलेम महानगर के लोगो! डरो नहीं।
देखो, तुम्हारा राजा कम उम्र के गधे पर बैठा आ रहा है!"*
16 उनके शिष्य पहले तो यह नहीं समझे कि प्रभु येशु ने ऐसा क्यों किया
परंतु जब वह पूरे तेज में आए तब शिष्यों को याद आया कि प्रभु येशु के
बारे में यह पवित्र शास्त्र में लिखे हुए के अनुसार पूरा हुआ है।
17 जो लोग उस समय गुरु येशु के साथ थे, उन लोगों ने यह बात सबको
बताईं कि गुरु येशु ने लाज़रस को कब्र से बाहर बुलाकर मरे हुओं में से
जीवित किया है, 18 तो लोग गुरु येशु से इस कारण भेंट करने गए,
क्योंकि उन्होंने सुना था कि यह अद्‌भुत निशानी दिखाया है। 19 इस पर
फैरीसियों ने एक-दूसरे से कहा, "हमारा षडयंत्र विफल हो गया, सारा
संसार उसके पीछे हो लिया है।"

विदेशी लोगों का निवेदन

20 जो लोग उत्सव पर भक्ति करने आए थे उनमें से कुछ ग्रीस देश के
निवासी थे। 21 वे गुरु येशु के शिष्य फिलिपस के पास गए, जो गलील

---

*12:13 भजन शास्त्र 118:25-26

*12:15 जकरया 9:9

प्रदेश के बैतसैदा नगर का रहने वाला था। उन्होंने उससे निवेदन किया,
“श्रीमान जी, हम गुरु येशु से मिलना चाहते हैं।”
22 फिलिपस ने जाकर अन्द्रेयास से कहा और दोनों ने जाकर गुरु येशु
से। 23 गुरु येशु ने उत्तर में कहा --

मानव-पुत्र का तेज प्रकट करने का समय आ पहुंचा है! 24 मैं तुम
पर सत्य प्रकट करता हूँ, जब तक गेहूँ का दाना बोया नहीं जाता है,
तब तक वह अकेला रहता है। लेकिन ज़मीन में गेहूँ का दाना बोने
के बाद, मर जाने के समान है, फिर वह अंकुरित होता है, और
अकेला बीज बहुत सा फल लाता है। 25 जो कोई भी इस संसार में
केवल अपने जीवन के बारे में सोचता है, वह सच्चा जीवन खो देता
है। पर जो इस संसार में अपने स्वार्थी जीवन से नफरत करता है,
वह मोक्ष पाता है। 26 यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे तो वह मेरा
अनुसरण करे। जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी
सेवा करे तो मेरा पिता परमात्मा उसका सम्मान करेगा।

27 अब मेरा मन परेशान है। मैं क्या कहूँ, “हे पिता परमात्मा, इस
कठिन समय से मुझे बचा लीजिए?” नहीं। मैं इसी कारण से तो
आया हूँ। 28 हे पिता, अपने नाम का तेज प्रकट कीजिए।

तब आकाश से यह आवाज़ सुनाई दी, “मैंने अपने नाम का तेज प्रकट
किया है और फिर करूँगा।” 29 पास खड़े हुए लोगों ने यह आवाज़ सुनी
तो कुछ ने कहा, “बादल गरजा” और कुछ ने कहा, “एक परमात्मा-दूत
उनसे बोला है।”
30 इस पर गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यह आवाज़ मेरे लिए नहीं, तुम्हारे
लिए है। 31 अब इस संसार के लोगों का न्याय होता है और अब उनका
शासक अर्थात् प्रेत सम्राट शैतान निकाला जाएगा। 32 मैं, जब पृथ्वी से

ऊँचा उठाया जाऊँगा तो सभी देशों के लोगों को अपने पास आने की
शक्ति दूँगा।” 33 गुरु येशु ने यह कहकर संकेत कर दिया कि उनकी मृत्यु
किस प्रकार होगी।
34 लोग बोले, “हमने नियम-शास्त्र का यह वचन सुना है कि राजा मसीहा
कभी नहीं मरेंगे। फिर आप कैसे कहते हैं कि तेजस्वी मानव-पुत्र का ऊँचा
उठाया जाना और मारा जाना ज़रूरी है? यह तेजस्वी मानव-पुत्र कौन
है?”
35 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “ज्योति, अर्थात मैं, कुछ ही समय तक और
तुम्हारे साथ हूँ। जब तक ज्योति है, चलते रहो, ऐसा न हो कि अंधकार
तुम्हें आ घेरे। जो अंधकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जा
रहा है। 36 जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर आस्था रखो तो तुम
ज्योति की संतान बनोगे।”
ये शब्द कहकर गुरु येशु कुछ समय के लिए एकांत जगह में चले गए।

अपने लोगों द्वारा तिरस्कार

37 यद्यपि गुरु येशु ने उनके सामने इतनी अद्‌भुत निशानियाँ दिखाई तो
भी लोगों ने उन पर आस्था प्रकट नहीं की, 38 जिससे यहूदी दिव्य ज्ञानी
यशाया का वह वचन पूरा हो,

“हे परमेश्वर, हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया?
परमेश्वर का बाहु-बल किस पर प्रकट हुआ?”*

39 वे विश्वास नहीं कर सके, क्योंकि दिव्य ज्ञानी यशाया ने यह भी
कहा,

40 “उसने उनकी आँखें अंधी कर दीं

---

*12:38 यशाया 53:1

और उनका मन कठोर कर दिया है,
कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें,
मन से समझें और पाप करना छोड़ दें --
और मैं उनको स्वस्थ कर दूँ।"*
41 दिव्य ज्ञानी यशाया ने यह कहा, क्योंकि* उन्होंने स्वयं परमेश्वर का
तेज देखा और राजा मसीहा के बारे में वर्णन किया। 42 फिर भी अनेक
लोगों ने उन पर आस्था प्रकट की और उनमें से कुछ यहूदी अधिकारी भी
थे, परंतु फैरीसियों के डर के कारण उन्होंने दूसरों के सामने यह स्वीकार
नहीं किया कि कहीं ऐसा न हो कि वे यहूदी समाज-भवन से निकाल दिए
जाएँ, 43 क्योंकि उन्हें परमात्मा से प्राप्त सम्मान के मुकाबले मनुष्यों से
प्राप्त सम्मान अधिक पसंद आया।

शिक्षा का सारांश

44 गुरु येशु ने ऊँची आवाज़ से कहा --
जो मुझ पर आस्था रखता है, वह केवल मुझ पर नहीं, परंतु मेरे
भेजने वाले पर आस्था रखता है। 45 जो मुझे देखता है, वह मेरे
भेजने वाले को देखता है। 46 मैं संसार में ज्योति स्वरूप होकर आया
हूँ कि जो कोई मुझ पर आस्था रखे, वह अंधकार में न रहे।
47 यदि कोई मेरे शब्दों को सुने और उसके अनुसार आचरण न करे
तो मैं उस पर दोष नहीं लगाता, क्योंकि मैं संसार पर दोष लगाने
नहीं, परंतु संसार के लोगों को मोक्ष देने आया हूँ। 48 जो मेरा
तिरस्कार करता है और मेरे संदेश को स्वीकार नहीं करता, उसका

---

*12:40 यशाया 6:10

*12:41 *क्योंकि*-- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में "जब" लिखा है

एक ही आरोपी है -- मेरा संदेश। वही संदेश अच्छे और बुरे कर्मों के
न्याय के दिन उसे दोषी साबित करेगा। 49 मैंने अपनी ओर से कुछ
नहीं कहा, परंतु पिता परमात्मा ने, जिन्होंने मुझे भेजा है, आदेश
दिया है कि क्या कहूँ और क्या बोलूँ। 50 मैं जानता हूँ कि जो पिता
परमात्मा ने मुझे बताने के लिए कहा है उसमे मोक्ष देने की शक्ति है।
इसलिए जो कुछ मैं कहता हूँ, वैसा ही कहता हूँ, जैसा पिता ने
मुझसे कहा है।

13

गुरु येशु ने शिष्यों के पैर धोये

1 मुक्ति-उत्सव से पहले गुरु येशु ने यह जानकर कि वह समय आ पहुंचा
है, जब उन्हें इस संसार को छोड़कर पिता परमात्मा के पास जाना है, गुरु
येशु अपने शिष्यों से इस संसार में अंत तक प्रेम करते रहे। 2 गुरु येशु
अपने शिष्यों के साथ भोजन कर रहे थे। प्रेत सम्राट शैतान शिमौन के पुत्र
यहूदा इसकरयोत के मन में यह विचार डाल चुका था कि वह गुरु येशु से
विश्वासघात करे। 3 गुरु येशु यह जानते थे कि पिता परमात्मा ने सारा
अधिकार उनके हाथ में दे दिया है और यह कि वह परमात्मा के पास से
आए थे और अब परमात्मा के पास जा रहे हैं। 4 वह भोजन से उठे और
उन्होंने अपने बाहरी कपड़े उतारे और अपनी कमर में अँगोछा बाँध
लिया। 5 तब एक बर्तन में पानी उँड़ेलकर वह अपने शिष्यों के पैर धोने
और कमर में बँधे अँगोछे से पोंछने लगे।

6 जब गुरु येशु शिष्य शिमौन पतरस के पास आए तब पतरस बोला,
“प्रभुजी, आप मेरे भी पैर धोएँगे?”

7 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “जो मैं कर रहा हूँ, उसे तुम अभी नहीं समझते,

पर बाद में समझोगे।”
8 पतरस ने कहा, “आप मेरे पैर कभी नहीं धोने पाएँगे!”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यदि तुम मुझे ऐसा नहीं करने दोगे, तो मेरा
तुम्हारे साथ कोई संबंध नहीं।”
9 पतरस बोला, “तब तो प्रभुजी, मेरे पैर ही नहीं, बल्कि हाथ और सिर
भी धो दीजिए!”
10 प्रभु येशु ने कहा, “जो नहा चुका है, उसे पैर के अलावा और कुछ
धोने की ज़रूरत नहीं, वह पूरी तरह शुद्ध है। तुम शुद्ध हो, परंतु
सब-के-सब नहीं।” 11 प्रभु येशु जानते थे कि कौन उनके साथ विश्वासघात
कर रहा है, इस कारण उन्होंने कहा, “तुम सब-के-सब शुद्ध नहीं हो।”
12 जब गुरु येशु उन सबके पैर धो चुके और अपने कपड़े पहनकर फिर
से बैठ गए तब वह बोले --

क्या तुम्हें समझ आया कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? 13 तुम
मुझे ‘गुरु’ और ‘प्रभु’ कहते हो, और ठीक कहते हो, क्योंकि मैं वह
हूँ। 14 जब मैंने तुम्हारा प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पैर धोए हैं, तो
तुम्हें भी चाहिए कि एक-दूसरे के पैर धोओ। 15 मैंने तुम्हारे सामने
अपना उदाहरण दिखाया है ताकि तुम भी वैसे ही करो जैसा मैंने
तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, दास अपने
मालिक से बड़ा नहीं होता और न भेजा हुआ अपने भेजने वाले से।
17 यदि तुम यह जानते हो और इसका पालन करते हो तो यह तुम्हारे
लिए अच्छा है।

18 मैं तुम सबके बारे में नहीं बोल रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि किन
व्यक्तियों को मैंने चुना है, किंतु पवित्र शास्त्र में लिखित यह वचन

पूरा होना है, “जो मेरी रोटी मेरे साथ खाता है,* उसी ने मेरी पीठ में
छुरा भोंका है।” * 19 इस घटना के घटने से पहले मैं तुम्हें बता रहा हूँ
कि ऐसा होगा जिससे जब यह घटित हो तो तुम विश्वास करो कि
मैं वही हूँ जिसे परमात्मा ने भेजा है। 20 मैं तुम पर सत्य प्रकट करता
हूँ, जो मेरे भेजे हुए व्यक्तियों को स्वीकार करता है, वह मुझे
स्वीकार करता है, और जो मुझे स्वीकार करता है, वह मेरे भेजने
वाले पिता परमात्मा को स्वीकार करता है।

कैसे एक शिष्य ने अपने गुरु को धोखा दिया

21 जब गुरु येशु यह कह चुके तब वह मन में बहुत दुखी हुए और उन्होंने
कहा, “मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, तुममें से एक व्यक्ति मुझे धोखा
देगा।”
22 यह सुनकर शिष्य सोच में पड़ गए और एक-दूसरे की ओर देखने लगे
कि गुरु येशु ने यह किसके बारे में कहा है। 23 वह शिष्य, जो गुरु येशु का
प्रिय था, उनके पास बैठा था। 24 शिमौन पतरस ने इशारा करके उससे
कहा, “गुरु येशु से पूछो, कि वह किसके बारे में कह रहे हैं।” 25 उनके
पास बैठे शिष्य ने गुरु येशु से पूछा, “प्रभु, कौन आपसे विश्वासघात
करेगा?”
26 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “जिसको मैं रोटी का टुकड़ा थाली में डुबाकर
खाने को दूँगा, वही है।”
उन्होंने रोटी का टुकड़ा थाली में डुबाया और उसे शिमौन इसकरयोत के
पुत्र यहूदा को दिया। 27 रोटी का टुकड़ा लेते ही प्रेत सम्राट शैतान उसमें

---

*13:18 *जो मेरी रोटी मेरे साथ खाता है* -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “जिसने मेरी रोटी खाई है” लिखा है

*13:18 भजन शास्त्र 41:9

समा गया।

तब गुरु येशु उससे बोले, “जो कुछ तुम्हें करना है, जल्दी करो।”

28 भोजन करने वालों में से कोई नहीं समझ पाया कि गुरु येशु ने यहूदा
से यह क्यों कहा। 29 कुछ ने सोचा कि यहूदा के पास रुपयों की थैली
रहती है, इसलिए गुरु येशु कह रहे हैं कि जो कुछ उन्हें उत्सव के लिए
चाहिए वह खरीदकर ले आओ, या फिर गरीबों को कुछ दान दे दो।
30 यहूदा इसकरयोत रोटी के टुकड़े को लेकर तुरंत बाहर चला गया। उस
समय रात थी।

नया आदेश

31 जब यहूदा बाहर चला गया तो गुरु येशु बोले --

अब तेजस्वी मानव-पुत्र का तेज प्रकट हुआ और इसके द्वारा
परमात्मा का तेज प्रकट हुआ। 32 यदि उसके द्वारा परमात्मा का तेज
प्रकट हुआ है,* तो परमात्मा भी प्रभु येशु में अपना तेज प्रकट करेंगे
और वह इसे तुरंत ही करेंगे।

33 बालको! थोड़ी देर के लिए मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे ढूँढ़ोगे
और जैसा मैंने यहूदी धर्मगुरुओं से कहा वैसा ही अब तुमसे कहता
हूँ, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।” 34 मैं तुम्हें एक
नया आदेश देता हूँ, एक-दूसरे से प्रेम करो। जैसे मैंने तुमसे प्रेम
किया है, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो। 35 यदि तुम
एक-दूसरे से प्रेम करोगे तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे
शिष्य हो।

---

*13:32 *जबकि उसके द्वारा परमात्मा का तेज प्रकट हुआ है*-- कुछ हस्तलिपियों में यह वाक्य नहीं लिखा है

पतरस के पतन का संकेत

36 शिमौन पतरस ने प्रभु येशु से पूछा, “प्रभु, आप कहाँ जा रहे हैं?”
प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ अभी तुम मेरे पीछे नहीं
आ सकते, पर बाद में, तुम मेरे पीछे आओगे।”
37 पतरस ने कहा, “प्रभु, अभी मैं आपके पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं
आपके लिए अपनी जान भी दे दूँगा।”
38 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “क्या तुम मेरे लिए अपना जीवन दे दोगे? मैं
तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, मुर्गे के बाँग देने से पहले तुम तीन बार मेरा
इंकार करोगे कि तुम मुझे जानते हो।”

14

परमात्मा के पास जाने का मार्ग -- सद्गुरु येशु

1 “परेशान मत हो। परमात्मा पर आस्था रखो और मुझ पर भी आस्था
रखो। 2 मेरे पिता परमात्मा के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं। यदि न
होते तो मैं तुमसे कह देता, क्योकि मैं तुम्हारे लिए एक स्थान तैयार करने
जा रहा हूँ। 3 जब सबकुछ तैयार हो जाएगा, तब मैं फिर वापस आऊँगा
और तुमको अपने साथ ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।
4 तुम उस मार्ग को जानते हो जिस जगह मैं जा रहा हूँ*।”
5 शिष्य थोमस ने प्रभु येशु से कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते कि आप
कहाँ जा रहे हैं, तो फिर मार्ग कैसे जानेंगे?”
6 गुरु येशु ने कहा, “मैं ही मार्ग हूँ, मैं ही सत्य और मोक्ष हूँ -- मेरे बिना

---

*14:4 *तुम उस मार्ग को जानते हो जिस जगह मैं जा रहा हूँ*-- इसके स्थान पर कुछ
हस्तलिपियों में “तुम जानते हो कि मैं कहां जा रहा हूं और तुमको मार्ग पता है” लिखा है

कोई पिता परमात्मा के पास नहीं आ सकता। 7 यदि तुम वास्तव में मुझे
जानते तो मेरे पिता को भी जानते। अब से तुम उन्हें जानते हो और तुमने
उनका दर्शन कर लिया है।"
8 शिष्य फिलिपस ने कहा, "प्रभु, हमें पिता परमात्मा का दर्शन कराइए,
इतने से ही हम संतुष्ट हो जाएँगे।"
9 गुरु येशु ने कहा --
फिलिपस! मैं इतने समय तुम्हारे साथ रहा, तो भी तुम अब तक
मुझे नहीं जानते? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता परमात्मा को देख
लिया है। फिर तुम कैसे कहते हो, "हमें पिता के दर्शन कराइए?"
10 क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता
परमात्मा मुझमें? जो संदेश मैं तुम्हें देता हूँ, वह अपनी ओर से नहीं
देता, परंतु मुझमें निवास करने वाले पिता मेरे द्वारा अपने कार्य कर
रहें हैं।
11 मेरा विश्वास करो कि मैं पिता परमात्मा में हूँ और पिता मुझमें
-- और नहीं तो इन चमत्कारी कामों के कारण ही विश्वास करो।
12 मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, जो मुझ में आस्था रखता है वह
वही काम करेगा जिन्हें मैं कर रहा हूँ परन्तु इनसे भी बड़े काम
करेगा, क्योंकि मैं पिता परमात्मा के पास जा रहा हूँ। 13 जो कुछ
तुम मेरे नाम से माँगोगे, मैं उसे पूरा करूँगा जिससे पिता परमात्मा
की महिमा अपने पुत्र में प्रकट हो। 14 यदि तुम मेरे नाम में परमात्मा
से कुछ भी माँगोगे तो मैं* उसे पूरा करूँगा।
15 यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरे आदेशों का पालन करो*।

---

*14:14 *मैं*-- यह शब्द कुछ हस्तलिपियों में नहीं लिखा है।

*14:15 *करो*-- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में "करोगे" लिखा है।

16-17 तब मैं पिता परमात्मा से निवेदन करूँगा और वह तुम्हें एक
और सहायक देंगे, जो सत्य का आत्मा है, कि वह हमेशा तुम्हारे
साथ रहे। इस संसार के लोग उसको स्वीकार नहीं कर सकते,
क्योंकि न तो वह उसे देखते हैं और न उसे जानते हैं। पर तुम उसे
जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुममें वास
करेगा*।
18 मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूँगा, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। 19 थोड़े
समय बाद इस संसार के लोग मुझे नहीं देखेंगे, पर तुम मुझे देखोगे।
मैं जीवित हूँ इसलिए तुम भी जीवित रहोगे। 20 उस दिन तुम जानोगे
कि मैं अपने पिता में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें। 21 जो मेरे
आदेशों को स्वीकार करता और उनका पालन करता है, वही मुझसे
प्रेम करता है। जो मुझसे प्रेम करता है उससे मेरे पिता प्रेम करेंगे
और मैं उससे प्रेम करूँगा और उसको अपना दर्शन दूँगा।
22 शिष्य यहूदा, इसकरयोत नहीं परंतु दूसरे यहूदा ने पूछा, “प्रभु, यह
क्या कि आप हमें दर्शन देंगे और संसार को नहीं?”
23 प्रभु येशु ने उत्तर दिया --
यदि कोई मुझसे प्रेम करे, तो मेरी शिक्षा का पालन करे और उस
व्यक्ति से मेरे पिता परमात्मा प्रेम करेंगे और हम उसके पास आएँगे
और उसके साथ निवास करेंगे। 24 परंतु जो मुझसे प्रेम नहीं करता,
वह मेरी शिक्षा का पालन नहीं करता। यह शिक्षा जो तुम सुनते हो,
मेरी नहीं, परंतु मेरे पिता परमात्मा की है जिन्होंने मुझे भेजा है।
25 तुम्हारे साथ रहते हुए ही मैंने तुमसे ये बातें कह दी हैं, 26 परंतु
सहायक, अर्थात् पवित्र आत्मा , जिसे पिता परमात्मा मेरे नाम में

---

*14:16-17 *वास करेगा* -- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “वास करता है” लिखा है।

भेजेंगे, तुम्हें सब बातें सिखाएगा और सबकुछ जो मैंने तुमसे कहा है, तुमको याद दिलाएगा।
27 शांति मैं तुमको दिए जाता हूँ, अपनी शांति मैं तुम्हें प्रदान करता हूँ। जैसी यह संसार देता है वैसी शांति मैं तुम्हें नहीं देता। अपने मन को दुखी न होने दो और डरने न दो!
28 तुमने सुना कि मैंने तुमसे क्या कहा, "मैं जा रहा हूँ और फिर तुम्हारे पास आऊँगा।" यदि तुम मुझसे प्रेम करते तो आनंद मनाते कि मैं पिता परमात्मा के पास जा रहा हूँ, क्योंकि पिता मुझसे महान् हैं।
29 जो होने वाला है, उसे मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है, ताकि जब वह हो, तो तुम विश्वास करो। 30 अब मैं तुमसे और नहीं बोलूँगा, क्योंकि इस संसार का शासक आ रहा है। उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं। 31 पर पिता परमात्मा ने मुझे जो आदेश दिया है, मैं उसका पालन करता हूँ ताकि संसार के लोग यह जान लें कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ।
उठो, यहाँ से चलें।

15

जीवन कैसे फलवंत हो सकता है?

1 मैं अच्छे अंगूर की बेल के समान हूँ और मेरा पिता परमात्मा किसान के समान जो अंगूर की बेल लगाता है। 2 मेरे किसान पिता उन फलहीन शाखाओं को, जो मुझसे जुड़ी हैं उठाकर संभालते हैं, और हर एक शाखा को जिनमें फल हैं, छांटकर साफ करते हैं ताकि वह और भी फले। 3 जो संदेश मैंने तुमसे कहा है, उसके कारण तुम

साफ हो चुके हो।
4 मुझ में बने रहो, जैसे मैं तुममें बना रहता हूँ। जिस प्रकार शाखा,
यदि अंगूर की बेल में जुड़ी न रहे तो अपने आप नहीं फल सकती।
उसी प्रकार तुम भी यदि मुझमें जुड़े न रहो तो फल नहीं सकते। 5 मैं
अंगूर की बेल हूँ और तुम शाखाएँ हो। जो मुझमें जुड़ा रहता है और
मैं उसमें, वह बहुत फलता है, क्योंकि मुझसे अलग रहकर तुम कुछ
नहीं कर सकते। 6 यदि कोई मुझमें जुड़ा नहीं रहता तो वह कटी हुई
शाखा के समान फेंक दिया जाता है और वह सूख जाता है। सूखी
शाखाओं को इकट्ठा किया जाता है, और वे आग में झोंक दी जाती
हैं तथा जला दी जाती हैं।
7 यदि तुम मुझमें जुड़े रहो और मेरा संदेश तुम्हारे मन में रहे, तो जो
चाहो परमात्मा से, माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। 8 मेरे
पिता परमात्मा की महिमा इसी में है कि तुम बहुत फलो *। यही
तुम्हारा मेरे शिष्य होने का सबूत है। 9 जैसे मेरे पिता ने मुझसे प्रेम
किया उसी प्रकार मैंने तुमसे प्रेम किया। मेरे प्रेम की छाया में बने
रहो। 10 यदि तुम मेरे आदेशों को मानो तो मेरे प्रेम की छाया में बने
रहोगे, जैसे मैंने अपने पिता के आदेशों को माना है और उनके प्रेम
में बना रहता हूँ। 11 मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कही हैं कि मेरी खुशी
तुममें हो और तुम्हारी खुशी पूरी हो जाए। 12 मेरा आदेश यह है कि
जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो।

---

*15:8 *फलो*-- शिष्य फलदार शाखाएँ हैं। यह फल शिष्यों के प्रयास से पैदा नहीं होते हैं, परंतु गुरु येशु से एकात्म होने से यह फल फलते हैं। इसका अर्थ है कि गुरु अपने शिष्यों के द्वारा और भी शिष्य बनवा रहे हैं ताकि अधिक-से-अधिक लोग परमात्मा द्वारा परिवर्तित जीवन का अनुभव कर सकें।

13 इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई व्यक्ति अपने मित्रों के
लिए अपनी जान दे। 14 जो आदेश मैं देता हूँ, उसका यदि तुम पालन
करो तो तुम मेरे मित्र हो। 15 अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहूँगा,
क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका मालिक क्या योजना बना रहा
है। परंतु मैंने तुमको मित्र कहा है, क्योंकि जो कुछ मैंने अपने पिता
परमात्मा से सुना, वह सब तुमको बता दिया।
16 तुमने मुझे नहीं चुना, पर मैंने तुमको चुना और नियुक्त किया है
इसलिए तुम संसार में जाओ और फलो और हमेशा फलों से भरे रहो
और इस नियुक्ति के कारण जो कुछ तुम मेरे नाम से पिता परमात्मा
से माँगोगे, वह तुमको देंगे । 17 मैं तुमको यह आदेश देता हूँ --
एक-दूसरे से प्रेम करो।

भ्रष्ट संसार

18 यदि इस संसार के लोग तुमसे बैर रखते हैं, तो ध्यान रखो कि
उन्होंने पहले मुझसे बैर रखा। 19 यदि तुम इस संसार के मार्ग पर
चलते, तब वे तुम से प्रेम करते। पर तुम उनके नहीं हो। मैंने तुम्हें
उनमें से चुना है। इसलिए संसार के लोग तुमसे नफरत करते हैं।
20 जो शब्द मैंने तुमसे कहे, उन्हें याद रखना -- “दास अपने मालिक
से बड़ा नहीं होता।” यदि उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी
सताएँगे। यदि उन्होंने मेरी बात मानी है तो तुम्हारी भी मानेंगे।
21 परंतु वे तुम्हें मेरे कारण सताएँगे, क्योंकि वे मेरे भेजने वाले को
नहीं जानते। 22 यदि मैं न आता और उन्हें परमात्मा का सत्य मार्ग न
बताता तो वे पाप के दोषी न होते। परंतु अब उनके पास पाप करते
रहने का कोई बहाना नहीं है।

23 जो मुझसे नफरत करता है वह मेरे पिता से नफरत करता है।
24 यदि मैं उनके बीच वे चमत्कारी काम नहीं करता जो और किसी
ने नहीं किए हैं, तो वे पाप के दोषी न होते, परंतु अब तो उन्होंने जो
कुछ मैंने किया देख लिया है और फिर भी मुझसे और मेरे पिता से
नफरत करते हैं। 25 यह इसलिए हुआ कि उनकी नियम-शास्त्र में
लिखी यह बात पूरी हो, "उन्होंने बिना कारण मुझसे नफरत की।" *
26 परंतु जब सहायक, अर्थात् सत्य-आत्मा जो पिता परमात्मा से
है, आएँगे जिसे मैं पिता परमात्मा के पास से तुम्हारे पास भेजूँगा, तो
वह तुम्हें मेरे बारे में बताएँगे। 27 शिष्यो, तुम भी मेरे बारे में
बताओगे, क्योंकि शुरू से तुम मेरे साथ रहे हो।

16

मुक्तिदाता येशु की चेतावनी

1 मैंने तुमसे यह सब इसलिए कहा कि जब लोग तुम्हें सताएँ तब
तुम मार्ग से भटक न जाओ। 2 वे तुम्हें यहूदी समाज-भवन से निकाल
देंगे। इतना ही नहीं, वह समय आ रहा है जब तुम्हारी हत्या करने
वाला समझेगा कि वे ऐसा करने से परमात्मा की सेवा कर रहा है।
3 वे इस तरह के कार्य करेंगे, क्योंकि वे न तो पिता परमात्मा को
जानते हैं और न मुझे। 4 मैंने तुमसे ये बातें इसलिए कही हैं कि जब
ये सब होने लगे तो तुम्हें याद आए कि मैंने तुमको पहले ही
सावधान कर दिया था।

परमात्मा-लोक की ओर प्रस्थान

---

*15:25 भजन शास्त्र 69:4

मैंने तुमको शुरू में ये बातें नहीं बताईं, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।
5 परंतु अब मैं अपने भेजने वाले के पास जा रहा हूँ और तुममें से
कोई मुझसे नहीं पूछता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। 6 मैंने तुम्हें ये बातें
बताई हैं, इसलिए तुम्हारा मन दुख से भर गया है। 7 तुमसे मैं सच
कहता हूँ, यह तुम्हारे हित में है कि मैं जा रहा हूँ, क्योंकि यदि मैं न
जाऊँ तो तुम्हारी सहायता करने वाला तुम्हारे पास नहीं आएगा।
परंतु यदि मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा।
8 वह आएँगे और अधर्म, परमात्मा के साथ संगती और न्याय के
बारे में संसार के लोगों को दोषी ठहराएंगे। 9 अधर्म के बारे में,
क्योंकि वे मुझ पर आस्था नहीं रखते। 10 परमात्मा के साथ संगती
के बारे में, क्योंकि मैं पिता परमात्मा के पास जा रहा हूँ और तुम
मुझे फिर न देखोगे। 11 न्याय के बारे में, क्योंकि इस संसार का
शासक प्रेत सम्राट शैतान दोषी साबित हुआ है।
12 मुझे तुमसे और बहुत कुछ कहना है, परंतु अभी तुम इनको सह
नहीं सकते। 13 जब सत्य-आत्मा आएँगे, तब वह पूरे सत्य में तुम्हारा
मार्गदर्शन करेंगे, क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न कहेंगे, परंतु जो
कुछ सुनेंगे, वही कहेंगे और भविष्य में होने वाली बातें तुम्हें
बताएँगे। 14 सत्य-आत्मा मेरी महिमा प्रकट करेंगे, क्योंकि उन्हें मेरी
ओर से जो मिला है, वह वही बताएँगे। 15 सब जो पिता परमात्मा
का है, वह मेरा है। इस कारण मैंने कहा कि जो मेरा है, पवित्र
आत्मा मुझसे प्राप्त करेंगे और तुमको बताएँगे। 16
थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़े समय बाद ही
तुम मुझे देखोगे।”
17 इस पर उनके कुछ शिष्य आपस में कहने लगे, “इसका क्या मतलब

है कि जो यह हमसे कह रहे हैं, 'थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं देखोगे,' और 'फिर थोड़े समय बाद ही तुम मुझे देखोगे,' और 'क्योंकि मैं पिता परमात्मा के पास जा रहा हूँ'?" 18 वे कहने लगे, "यह 'थोड़े समय बाद' क्या है जिसके बारे में यह कह रहे हैं? हम नहीं जानते कि यह क्या बोल रहे हैं।"

19 प्रभु येशु जानते थे कि वे उनसे कुछ पूछना चाहते हैं, इसलिए उसने उनसे कहा --

क्या तुम आपस में इस बात पर विचार कर रहे हो कि मैंने कहा, "थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़े समय बाद ही तुम मुझे देखोगे?" 20 मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, तुम रोओगे और विलाप करोगे, परंतु इस संसार के लोग खुशियाँ मनाएँगे। तुम शोक मनाओगे, किंतु तुम्हारा शोक खुशी में बदल जाएगा।

21 जब स्त्री प्रसव-पीड़ा में होती है तब उसे दर्द होता है, क्योंकि उसके प्रसव का समय आ पहुंचा है। पर जब वह बच्चे को जन्म दे देती है तब संसार में बच्चे के आने की खुशी को देखकर अपना दर्द भूल जाती है। 22 इसी प्रकार तुम अब शोक में हो,* परंतु तुम मुझे फिर से देखोगे और तुम्हारा मन खुश होगा और तुमसे तुम्हारी खुशी कोई नहीं छीन सकेगा। 23 जब मैं नहीं रहूँगा तो तुम मुझसे कुछ नहीं माँगोगे। मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, यदि तुम मेरे नाम में पिता परमात्मा से कुछ माँगोगे तो वह तुम्हें देंगे । 24 अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा। माँगो, और तुम पाओगे ताकि तुम पूरी तरह से खुश होओ।

---

*16:22 ***अब शोक में हो***-- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में "शोक में होगे," लिखा है।

भ्रष्ट संसार पर विजय

25 मैंने तुमसे साफ-साफ शब्दों में नहीं कहा है, परंतु समय आ रहा
है कि मैं तुमसे ऐसे न बोलूँगा, परंतु पिता परमात्मा के बारे में स्पष्ट
कहूँगा। 26 उस दिन तुम मेरे नाम से पिता परमात्मा से माँगोगे। मैं यह
नहीं कह रहा हूँ, कि मुझे ही तुम्हारी ओर से पिता से निवेदन करना
पड़ेगा। 27 पिता परमात्मा स्वयं तुमसे प्रेम करता है, क्योंकि तुमने
मुझसे प्रेम किया है और विश्वास किया है कि मैं पिता परमात्मा से
आया हूँ। 28 मैं पिता के पास से संसार में आया हूँ। मैं फिर संसार
को छोड़कर पिता परमात्मा के पास वापस जा रहा हूँ।
29 उनके शिष्यों ने कहा, "अब आप कहावतों में नहीं, साफ शब्दों में
समझा रहे हैं। 30 अब हम जान गए हैं कि आप सबकुछ जानते हैं और
आपको ज़रूरत नहीं कि कोई आपसे किसी बात के बारे में प्रश्न करे।
इस कारण हम विश्वास करते हैं कि आप परमात्मा से हैं।"
31 प्रभु येशु ने उत्तर दिया --
क्या अब मुझ पर आस्था रखते हो? 32 देखो, समय आ रहा है,
यह बहुत जल्दी होगा, जब तुम तितर-बितर हो जाओगे और तुम
मुझे अकेला छोड़कर अपने-अपने घर भाग जाओगे। फिर भी मैं
अकेला नहीं हूँ, क्योंकि पिता परमात्मा मेरे साथ हैं। 33 ये बातें मैंने
तुमसे इसलिए कहीं कि तुम मुझ में शांति पाओ। इस संसार में तुम्हें
बहुत कष्ट मिलेगा, परंतु हिम्मत बाँधे रखना, क्योंकि मैं इस संसार
पर विजयी हुआ हूँ।

17

मुक्तिदाता येशु की प्रार्थना

[1] इन बातों को कहने के बाद, गुरु येशु ने आकाश की ओर आँखें उठाईं
और यह प्रार्थना की --
मेरे पिता परमात्मा, अब समय आ गया है। अपने पुत्र को तेजस्वी
बनाएँ, ताकि पुत्र आपका तेज प्रकट करे, [2] क्योंकि आपने उसे सब
लोगों पर अधिकार दिया है कि वह उन सबको, जिन्हें आपने
उसको दिया है, मोक्ष प्रदान करें। [3] मोक्ष यह है कि वे आप,
एकमात्र सच्चे परमात्मा और मुक्तिदाता येशु के साथ जिन्हें आपने
भेजा है, गहरा संबंध रखें। [4] जो कार्य आपने मुझे करने को दिया
था, इसके द्वारा मैंने पृथ्वी पर आपका तेज प्रकट किया है। [5] अब,
हे पिता परमात्मा, संसार की रचना से पहले मेरा आपके साथ जो
तेज था, वही तेज मुझको फिर से दें।
[6] मैंने आपके बारे में उन लोगों को बताया जिन्हें आपने संसार में
से मुझे दिया। वे आपके थे, आपने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने
आपकी शिक्षाओं का पालन किया। [7] अब वे जानते हैं कि जो कुछ
आपने मुझे दिया है वह आपसे है, [8] क्योंकि जो संदेश आपने मुझे
दिया था, मैंने उनको दे दिया। उन्होंने उसे स्वीकार किया है और
अब वे सचमुच जानते हैं कि मैं आप से आया हूँ और उन्होंने
विश्वास किया है कि आपने मुझे भेजा है। [9] मैं उनके लिए प्रार्थना
कर रहा हूँ। संसार के सब लोगों के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा, परंतु
उनके लिए जो आपने मुझे दिए हैं, क्योंकि वे आपके हैं। [10] मेरा सब
आपका है और आपका सब मेरा है, और उन शिष्यों द्वारा मेरा तेज
प्रकट हुआ है।
[11] मैं अब संसार में नहीं रहूँगा, पर वे संसार में रहेंगे और मैं आपके
पास आ रहा हूँ। पावन पिता, उस नाम में जो आपने मुझे दिया है

उन्हें सुरक्षित रखें कि वे एक हों, जैसे हम एक हैं। 12 जब तक मैं
उनके साथ रहा, आपके उस नाम में, जो आपने मुझे दिया था, मैंने
उनको सुरक्षित रखा और उनकी रक्षा की। विनाश के पुत्र यहूदा को
छोड़कर उनमें से कोई नहीं भटका कि पवित्र शास्त्र का लेख पूरा
हो।
13 अब मैं आपके पास आ रहा हूँ। मैं संसार में ये बातें कह रहा हूँ
कि वे पूरी तरह से मेरी खुशी का अनुभव करें। 14 मैंने उन्हें आपका
संदेश दे दिया है और संसार उनसे नफरत करता है क्योंकि वे संसार
के नहीं हैं, जैसे मैं भी नहीं हूँ।
15 फिर भी, मैं यह प्रार्थना नहीं करता कि आप मेरे शिष्यों को
संसार से बाहर निकाल लें, परंतु यह कि उनको प्रेत सम्राट शैतान से
सुरक्षित रखें। 16 वे संसार के नहीं हैं, जैसे मैं भी नहीं हूँ। 17 आप
उन्हें सत्य से शुद्ध करें। आपके संदेश ही सत्य हैं। 18 जैसे आपने
मुझे संसार में भेजा उसी प्रकार मैंने उन्हें संसार में भेजा है। 19 उनके
लिए मैं अपने को अर्पित करता हूँ कि वे भी सच्चाई को अर्पित हो
जाएँ।
20 मैं केवल उनके लिए ही नहीं, परंतु उन सबके लिए प्रार्थना
करता हूँ जो इन शिष्यों के संदेश द्वारा मुझ में आस्था रखेंगे। 21 हे
पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे सब एक हों जैसे मैं आप में हूँ और
आप मुझमें। उसी प्रकार वे हममें हों* जिससे संसार के लोग
विश्वास करें कि आपने मुझे भेजा है।
22 जो तेज आपने मुझे दिया है, वह मैंने उन्हें दे दिया है कि जैसे
हम एक हैं, वे भी एक हों। 23 मैं उनमें और आप मुझमें जिससे वे

*17:21 *हममें हों*-- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में "हममें एक हो" लिखा है।

पूरी एकता को प्राप्त करें, तब संसार के सब लोग जानें कि आपने
मुझे भेजा है और जैसे आपने मुझसे प्रेम किया है, वैसे ही आपने
उनसे भी प्रेम किया है।
24 हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें आपने मुझे दिया है, वे भी, जहाँ
मैं हूँ, मेरे साथ हों जिससे वे मेरे तेज को देख सकें जो आपने मुझे
दिया है, क्योंकि आपने संसार की रचना से पहले ही मुझसे प्रेम
किया है। 25 हे न्याय करने वाले पिता परमात्मा, संसार के लोग
आपको नहीं जानते, किंतु मैं आपको जानता हूँ और ये शिष्य जानते
हैं कि आपने ही मुझे भेजा है। 26 मैंने आपके बारे में इन्हें बताया है
और बताता रहूँगा कि जो प्रेम आपने मुझे दिया है वही उनमें हो
और मैं उनमें होऊँ।

18

प्रभु येशु का बंदी बनना

मत्तिया 26:47-56; मरकस 14:43-52; लूकस 22:47-53

1 ये शब्द कहने के बाद गुरु येशु अपने शिष्यों के साथ किद्रोन घाटी के
पार गए। वहाँ जैतून के पेड़ों का बगीचा था जिसमें उन्होंने शिष्यों के
साथ प्रवेश किया। 2 गुरु येशु से विश्वासघात करनेवाला यहूदा उस स्थान
को जानता था, क्योंकि अक्सर अपने शिष्यों के साथ गुरु येशु वहाँ जाते
थे। 3 यहूदा सैनिकों, प्रधान पुरोहितों और फैरीसियों के कुछ मंदिर के
सुरक्षा कर्मियों को लेकर लालटेन, मशालों और अस्त्र-शस्त्रों के साथ
वहाँ आया।
4 प्रभु येशु जानते थे कि उनके साथ कौन-सी घटना घटने वाली है। वह

आगे बढ़े और पूछा, “आप लोग किसको ढूँढ़ रहे हैं?”
5 उन्होंने उत्तर दिया, “नासरत निवासी येशु को।”
गुरु येशु ने उनसे कहा, “वह मैं हूँ।” उनसे विश्वासघात करनेवाला यहूदा
वहाँ साथ खड़ा था। 6 ज्योंही गुरु येशु ने कहा, “वह मैं हूँ” वे लोग बिना
किसी के छुए पीछे हटे और भूमि पर गिर पड़े।
7 प्रभु येशु ने फिर पूछा, “आप लोग किसको ढूँढ़ रहे हैं?”
वे फिर बोले, “नासरत निवासी येशु को।”
8 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुमसे कह चुका कि वह मैं ही हूँ, इसलिए
यदि तुम मुझे ढूँढ़ते हो तो मेरे शिष्यों को जाने दो।” 9 जिससे उनका कहा
हुआ यह वचन पूरा हो, “आपने जिन्हें मुझे दिया, मैंने उनमें से एक को भी
नहीं खोया।”
10 शिमौन पतरस ने अपनी तलवार खींची और महापुरोहित के एक दास
मलखस का दायाँ कान काट डाला। 11 किंतु गुरु येशु ने पतरस से कहा,
“तलवार म्यान में रखो। क्या तुम सोचते हो कि मैं वह दुख का प्याला न
पिऊँ, जो पिता परमात्मा ने मुझे दिया है?”
12 तब सैनिकों के दल, उनके सेनानायक और मंदिर के सुरक्षा कर्मियों ने
प्रभु येशु को गिरफ्तार कर बाँध लिया। 13 वे उन्हें पहले महापुरोहित
काइफस के ससुर हन्नस के पास ले गए। 14 काइफस ने ही यहूदी
धर्मगुरुओं को सलाह दी थी कि जनता की भलाई के लिए एक व्यक्ति
का मरना ज़रूरी और बेहतर है।

शिष्य पतरस का गुरु को कठिनाइयों में अकेला छोड़ना

मत्तिया 26:69-75; मरकस 14:66-72; लूकस 22:54-62

15 शिमौन पतरस तथा एक और शिष्य गुरु येशु के पीछे-पीछे गए। यह

शिष्य महापुरोहित की जान-पहचान का था। वह गुरु येशु के साथ महापुरोहित के आँगन में चला गया, 16 जबकि पतरस दरवाज़े के बाहर ही खड़ा रहा। तब वह शिष्य जो महापुरोहित से परिचित था, बाहर आया और दरवाजे पर खड़ी सेविका से कहकर पतरस को अंदर ले गया।
17 सेविका ने पतरस से कहा, “कहीं तुम भी उस मनुष्य के शिष्य तो नहीं हो?”

उसने उत्तर दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

18 ठंड के कारण दासों और मंदिर के सुरक्षा कर्मियों ने कोयले की आग जला रखी थी और वे खड़े-खड़े आग ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा हो गया और आग तापने लगा।

महापुरोहित द्वारा पूछताछ

मत्तिया 26:59-66; मरकस 14:55-64; लूकस 22:63-23:25

19 महापुरोहित ने गुरु येशु से उनके शिष्यों और उनकी शिक्षाओं के बारे में पूछताछ की। 20 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैंने संसार से खुले आम बात की है। मैंने हमेशा यहूदी समाज-भवनों और मंदिर के आंगनों में, जहाँ सब यहूदी लोग इकट्ठा होते हैं, शिक्षा दी है और गुप्त रूप से कुछ नहीं कहा।
21 तब आप मुझसे क्यों पूछताछ करते हैं? सुनने वालों से पूछ लीजिए कि मैंने उनसे क्या कहा है। वे जानते हैं कि मैंने उनसे क्या बातें की हैं।”

22 गुरु येशु के यह कहने पर एक सुरक्षा कर्मी ने जो पास खड़ा था, उनको थप्पड़ मारा और कहा, “तू महापुरोहित को इस प्रकार उत्तर देता है?”

23 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यदि मैंने कुछ गलत कहा है तो साबित करो, परंतु यदि ठीक कहा है तो फिर मुझे क्यों मारते हो?”

24 तब हन्नस ने गुरु येशु को जो अभी भी बँधे हुए ही थे, महापुरोहित
काइफस के पास भेज दिया।
25 जिस समय शिमौन पतरस आँगन में खड़ा हुआ आग ताप रहा था,
लोगों ने उससे पूछा, “कहीं तुम भी तो उसके शिष्यों में से नहीं हो?”
पतरस ने मना करते हुए कहा, “मैं नहीं हूँ।”
26 महापुरोहित के दासों में से एक ने, जो उस व्यक्ति का रिश्तेदार था
जिसका पतरस ने कान काट दिया था, उससे पूछा, “क्या मैंने तुम्हें उसके
साथ बगीचे में नहीं देखा था?” 27 पतरस ने फिर मना किया और तुरंत
मुर्गे ने बाँग दी।

राज्यपाल पिलातस के सामने गुरु येशु

28 तब गुरु येशु को काइफस के पास राज्यपाल के भवन में ले गए।
सुबह-सुबह का समय था। यहूदी धर्मगुरु स्वयं राजभवन में नहीं गए,
इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि वे अशुद्ध हो जाएँ और मुक्ति-उत्सव का
भोज न खा पाएँ। 29 राज्यपाल पिलातस बाहर उनके पास आया और
बोला, “इस मनुष्य पर तुम क्या आरोप लगाते हो?”
30 उन्होंने उत्तर दिया, “यदि यह मनुष्य अपराधी न होता तो हम इसे
आपके हाथ न सौंपते।”
31 पिलातस ने उनसे कहा, “तुम लोग इसे ले जाओ और अपने
नियम-शास्त्र के अनुसार इसका न्याय करो।”
यहूदी धर्मगुरु बोले, “किसी को मृत्यु-दंड देना हमारे अधिकार में नहीं
है।”
32 यह इसलिए हुआ कि प्रभु येशु के वे वचन पूरे हों जिनका उन्होंने
संकेत किया था कि उनकी मृत्यु कैसे होने वाली है।

सद्‌गुरु के जन्म लेने का कारण

33 पिलातस अपने राजभवन में फिर गया। उसने गुरु येशु को अंदर
बुलाया और उनसे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के राजा हो?”
34 गुरु येशु ने कहा, “क्या आप स्वयं यह कह रहे हैं, या दूसरों ने आपसे
मेरे बारे में यह कहा है?”
35 पिलातस ने उत्तर दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? नहीं। फिर भी, तुम्हारे ही
लोगों ने और प्रधान पुरोहितों ने तुम्हें मेरे हाथ में सौंपा है। तुमने ऐसा क्या
किया है?”
36 गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मेरा साम्राज्य इस संसार की ओर से नहीं है।
यदि मेरा साम्राज्य इस संसार की ओर से होता, तो मेरे सेवक मेरी ओर से
लड़ते और मैं यहूदी आधिकारियों के हाथ न आता। पर मेरा साम्राज्य इस
संसार की ओर से नहीं है।”
37 तब पिलातस बोला, “तो तुम राजा हो?”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “आप ही कह रहे हैं कि मैं राजा हूँ। मैंने इसलिए
जन्म लिया और इसीलिए संसार में आया हूँ कि सत्य को प्रकट करूँ। जो
सत्य जान जाता है वह मेरे संदेश स्वीकार करता है।”
38 पिलातस ने गुरु येशु से पूछा, “सत्य क्या है?”

गुरु येशु को मृत्यु-दंड

यह कहकर पिलातस भवन के बाहर इकट्ठे यहूदी लोगों के पास गया
और उनसे बोला, “मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता। 39 तुम्हारी एक प्रथा है
जिसके अनुसार मुक्ति-उत्सव पर मैं तुम्हारे लिए एक कैदी को छोड़ता हूँ।
तो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए ‘यहूदियों के राजा’ को छोड़
दूँ?”

40 वे फिर से चिल्लाकर बोले, “इसे नहीं, बल्कि बरअब्बा* को छोड़ो।”
जबकि बरअब्बा जेल में बंद एक विद्रोही था।

19

निर्दोष को दंड

1 तब राज्यपाल पिलातस ने गुरु येशु को कोड़े लगवाए। 2 सैनिकों ने
काँटों का ताज गूँथकर प्रभु येशु के सिर पर रखा और उन्हें बैंजनी शाही
पौशाक पहनाई। 3 फिर वे उनके पास आकर उनकी हंसी उड़ाते हुए
कहने लगे, “यहूदियों के राजा, आप की जय हो!” और उनको थप्पड़
मारे।
4 पिलातस फिर राजभवन के बाहर गया और यहूदी लोगों से बोला,
“देखो, मैं उसे बाहर ला रहा हूँ जिससे तुम जान लो कि मैं उसमें कोई
दोष नहीं पाता।” 5 तब गुरु येशु बैंजनी शाही पौशाक और सिर पर काँटों
का ताज पहने बाहर आए। पिलातस ने कहा, “देखो, यह मनुष्य!”
6 जब प्रधान पुरोहितों और मंदिर के सुरक्षा कर्मियों ने गुरु येशु को देखा
तो चिल्लाकर बोले, “सूली-दंड दे दो! सूली-दंड दे दो!”*

---

*18:40 *विद्रोही बरअब्बा* -- यहूदी विद्रोही वे लोग होते थे जो रोम साम्राज्य के विरुद्ध दंगा भड़काते थे ताकि यहूदी लोगों को आज़ादी मिल सके। गुरु येशु के स्थान पर लोग बरअब्बा की तरह हिंसक नेता को चाहते थे। प्रभु येशु के परमात्मा-लोक जाने के लगभग तीस साल बाद यहूदी विद्रोहियों ने रोम शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप यहूदियों का मंदिर नष्ट हो गया, यरूशलेम महानगर नगर खंडहर हो गया और हज़ारों यहूदी विद्रोहियों को रोम के सैनिकों ने शहर के बाहर सूली पर लटका दिया (सी.ई. 70)।

*19:6 *सूली-दंड* -- ऐसा मृत्यु-दंड है जिसमें बहुत दर्द और प्रताड़ना होती थी। रोम के शासक अपने लोगों को सूली पर नहीं चढ़ाया करते थे। यह केवल उनके लिए होता था जो गुलाम थे और रोम शासन के विरुद्ध राजविद्रोह करने वाले विद्रोही थे। हालाँकि गुरु येशु पूरी तरह से

पिलातस ने उनसे कहा, “तुम्हीं इसे ले जाओ और सूली पर मृत्यु-दंड दे
दो, क्योंकि मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता।”
7 यहूदी धर्मगुरुओं ने उत्तर दिया, “हमारे नियम-शास्त्र के अनुसार इसे
मृत्यु-दंड मिलना चाहिए, क्योंकि यह अपने को परमात्मा का पुत्र कहता
है।”
8 जब पिलातस ने यह बात सुनी तो वह और भी डर गया। 9 उसने फिर
राजभवन में जाकर प्रभु येशु से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”
परंतु प्रभु येशु ने कुछ उत्तर न दिया। 10 तब पिलातस ने कहा, “तुम मुझे
भी जवाब नहीं देते। क्या तुम नहीं जानते कि मुझे तुमको छोड़ देने का
अधिकार है और सूली पर मृत्यु-दंड देने का भी अधिकार है?”
11 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “यदि आपको परमात्मा से अधिकार न दिया
जाता तो आपको मुझ पर अधिकार न होता। इस कारण जिस मनुष्य ने
मुझे आपके हाथ सौंपा है उसने आप से भी अधिक पाप किया है।”
12 इस पर पिलातस उनको छोड़ देने की और भी कोशिश करने लगा,
पर यहूदी धर्मगुरुओं ने चिल्लाकर कहा, “यदि आपने इसको छोड़ा तो
आप रोम के सम्राट् के प्रति वफादार नहीं। जो अपने को राजा बताता है
वह सम्राट का विरोधी है।”
13 पिलातस ये सब बातें सुनकर प्रभु येशु को बाहर लाया और उस
स्थान पर बैठ गया, जहाँ बैठकर वह लोगों का न्याय करता था। वह
स्थान “चबूतरा” कहलाता था, और यहूदी भाषा में, “गब्बाथा”। 14 वह
मुक्ति-उत्सव की तैयारी का दिन था और लगभग बारह बजे थे। पिलातस
प्रभु येशु को यहूदियों के सामने लाए और कहा, “देखो, तुम्हारा राजा।”
15 वे चिल्लाकर बोले, “इसे ले जाओ! ले जाओ! इसे सूली पर मृत्यु-दंड

निर्दोष थे, फिर भी रोम की सरकार ने उन्हें सूली पर चढ़ाकर मार डाला।

दो!”
पिलातस ने उनसे कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को सूली पर मृत्यु-दंड दूँ?”
प्रधान पुरोहितों ने उत्तर दिया, “रोम सम्राट के अलावा हमारा कोई राजा नहीं!”
16 तब पिलातस ने सूली पर मृत्यु-दंड देने के लिए गुरु येशु को उनके हाथ सौंप दिया और सैनिक उनको बाहर ले गए।

हमारे स्थान पर प्रभु येशु की मृत्यु

मत्तिया 27:32-44; मरकस 15:21-32; लूकस 23:26-43

17 गुरु येशु लकड़ी के सूली के ऊपरी भाग को अकेले ही उठाकर बाहर निकले और उस स्थान को गए जो “कपाल-स्थल” कहलाता है, और यहूदी भाषा में, “गोलगोथा”। 18 वहाँ उन्होंने गुरु येशु को दो अलग-अलग सूली पर लटके व्यक्तियों के बीच कीलों से लकड़ी के सूली पर ठोका। 19 पिलातस ने एक दोष-सूचना सूली पर लगवा दिया। जिसपर लिखा हुआ था, “नासरत निवासी येशु, यहूदियों का राजा।”
20 अनेक यहूदियों ने इस दोष-सूचना को पढ़ा, क्योंकि वह स्थान जहाँ गुरु येशु को सूली पर मृत्यु-दंड दिया जाना था, नगर के पास ही था और सूचनापत्र यहूदी, लातीनी और ग्रीक भाषाओं में लिखा था।
21 इस पर यहूदियों के प्रधान पुरोहितों ने पिलातस से कहा, “‘यहूदियों का राजा’ ऐसा न लिखिए, परंतु यह कि ‘इसने कहा था, “मैं यहूदियों का राजा हूँ”’।”
22 पिलातस ने उत्तर दिया, “मैंने जो लिख दिया सो लिख दिया।”
23 गुरु येशु को कीलों द्वारा सूली पर मृत्यु-दंड देने के बाद सैनिकों ने

उनके कपड़ों को लेकर चार भाग किए, सबने अपना-अपना भाग ले
लिया। इसी प्रकार कुर्ता भी लिया। वह कुर्ता सिला हुआ नहीं था परन्तु
ऊपर से नीचे तक केवल बुना हुआ था। 24 इसलिए उन्होंने आपस में
कहा, “इसे फाड़ें नहीं, परंतु चिट्ठी डालकर यह फैसला करें कि यह
किसको मिलना चाहिए।” यह इसलिए हुआ कि पवित्र शास्त्र का लेख
पूरा हो,

“उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे कुर्ते को पाने अपने
नाम लिखकर चिट डाली।” *

तो इसलिए सैनिकों ने ऐसा ही किया।

25 गुरु येशु के सूली के पास उनकी माँ, मौसी, क्लोपस की पत्नी मरियम
और मगदलावासी मरियम खड़ी थीं। 26 गुरु येशु ने अपनी माँ और उस
शिष्य को, जो उनका प्रिय था, पास खड़े देखा तो माँ से बोले, “माताजी,
देखिए, अब से यह शिष्य आपका पुत्र होगा।” 27 और उस शिष्य से बोले,
“देखो, अब से यह तुम्हारी माँ होंगी।” उसी समय से वह शिष्य गुरु येशु
की माँ को अपने घर ले गया।

राजा मसीहा की मृत्यु

मत्तिया 27:45-56; मरकस 15:33-41; लूकस 23:44-49

28 गुरु येशु यह जानते थे कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है, इसलिए
उन्होंने पवित्र शास्त्र का लेख पूरा करने के लिए कहा, “मैं प्यासा हूँ।” *
29 वहाँ खट्टे अंगूर के रस से भरा हुआ एक घड़ा रखा हुआ था। सैनिकों ने
स्पंज को उस रस में भिगोया और उसे हीस्सोप पौधे की टहनी पर

---

*19:24 भजन शास्त्र 22:18

*19:28 भजन शास्त्र 22:15; 69:21

रखकर उनके मुँह पर लगाया। 30 जब गुरु येशु ने रस चख लिया तब
कहा, “मेरा काम पूरा हुआ।” और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

भाले से घायल होना

31 वह दिन विश्राम दिवस के लिए तैयारी का दिन था और यह
मुक्ति-उत्सव की शुरुआत थी। इसलिए यहूदी धर्मगुरुओं ने पिलातस से
निवेदन किया, “उन लोगों की टाँगें तोड़ दी जाएँ ताकि वे जल्दी मर जाएँ
और सूली से उतार लिए जाएँ जिससे उनके शव विश्राम-दिवस के दिन
सूली पर न रहें।” 32 सैनिक गए और गुरु येशु के साथ जो व्यक्ति पहले
लटकाया गया था, उसकी टाँगें तोड़ीं और फिर दूसरे की। 33 किंतु जब
उन्होंने गुरु येशु के पास आकर देखा कि वह पहले ही मर चुके हैं, तब
उन्होंने उनकी टाँगे नहीं तोड़ीं। 34 पर एक सैनिक ने उनकी पसली में
भाला मारा और तुरंत उसमें से खून और पानी बहने लगा। 35 जिसने यह
अपनी आँखों से देखा उसने गवाही दी है कि यह सच में हुआ है। वह
अपनी गवाही देता है जिससे तुम भी विश्वास करो सको। 36 यह इसलिए
हुआ कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो, “उसकी कोई भी हड्डी नहीं
तोड़ी जाएगी।” * 37 फिर से पवित्र शास्त्र का कहना है, “जिसे उन्होंने
बेधा है, उसे वे देखेंगे।” *

प्रभु येशु के शव का गुफा में रखा जाना

मत्तिया 27:57-61; मरकस 15:42-47; लूकस 23:50-56

38 इसके बाद अरिमतेया नगर के योसफ ने, जो यहूदी धर्मगुरुओं के डर
के कारण गुरु येशु का गुप्त शिष्य था, पिलातस से गुरु येशु के शव को

---

*19:36 निर्गमन 12:46; जनगणना 9:2; भजन शास्त्र 34:20

*19:37 जकरया 12:10

सूली पर से उतार के ले जाने की आज्ञा माँगी। पिलातस ने आज्ञा दे दी।
योसफ आया और उनके शव को ले गया। 39 निकोदेमस, जो पहले रात में
गुरु येशु से मिलने आया था, योसफ के साथ था। निकोदेमस, लगभग
तेंतीस किलो मिश्रित गंधरस और खुशबूदार पौधे का तेल लेकर आया
था। 40 इन दोनों ने गुरु येशु का शव लिया, यहूदियों की शव गाड़ने की
प्रथा के अनुसार उस पर खुशबूदार मिश्रण लगाया और उसे सन के कपड़े
की पट्टियों से लपेट दिया। 41 जहाँ गुरु येशु को सूली पर मृत्यु दंड दिया
था, उस स्थान पर एक बगीचा था और बगीचे में शव रखने के लिए एक
नई गुफा थी जिसमें कभी कोई शव नहीं रखा गया था। 42 यहूदियों के
विश्राम-दिवस की तैयारी का दिन होने के कारण और क्योंकि शव रखने
वाली गुफा निकट थी, उन्होंने गुरु येशु के शव को उसी में रख दिया।

20

सनातन गुरु ने मृत्यु को पराजय किया

मत्तिया 28:1-10; मरकस 16:1-11; लूकस 24:1-12

1 हफ्ते के पहले दिन रविवार को सुबह-सुबह जबकि अँधेरा ही था,
मरियम मगदलावासी गुफा पर आई जहाँ शव रखा हुआ था और देखा
कि गुफा से पत्थर हटा हुआ है। 2 यह देखकर वह दौड़ती हुई शिमौन
पतरस और दूसरे शिष्य के पास गई जो गुरु येशु का प्रिय था। मरियम ने
उनसे कहा, “वे गुफा से प्रभु के शव को उठा ले गए हैं और हम नहीं
जानते कि उन्होंने उन्हें कहाँ रखा है।”
3 तब पतरस और दूसरा शिष्य दोनों घर से निकले और गुफा की ओर
चले। 4 वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, पर दूसरा शिष्य दौड़कर पतरस से

आगे निकल गया और गुफा पर पहले पहुँच गए । 5 उसने गुफा में झांका,
तो देखा कि सन के कपड़े से बने कफन की पट्टियों का ढेर लगा है, पर
वह गुफा के अंदर नहीं गया। 6 शिमौन पतरस उसके पीछे-पीछे पहुंचा।
वह गुफा के अंदर गया और उसने भी कपड़े की पट्टियों को पड़े हुए
देखा। 7 परंतु वह अँगोछा जो गुरु येशु के सिर पर बंधा था, पट्टियों के
साथ नहीं था, परंतु अलग वैसा ही लपेटा हुआ रखा था। 8 दूसरे शिष्य ने,
जो गुफा पर पहले पहुंचा था, अंदर जाकर देखा और विश्वास किया।
9 अब तक वे पवित्र शास्त्र का लेख नहीं समझे थे कि प्रभु येशु का मरकर
जी उठना अनिवार्य है। 10 तब वे शिष्य अपने घर लौट गए।

परमात्मा-दूत, मरियम मगदालावासी और सनातन गुरु

11 परंतु मरियम गुफा के बाहर रोती हुई खड़ी रही। रोते हुए उसने गुफा
में झाँका। 12 उसने दो परमात्मा-दूतों को सफेद कपड़े पहने और उस
स्थान पर, जहाँ पहले गुरु येशु का शरीर रखा था, बैठे देखा -- एक सिर
की तरफ और दूसरा पैर की तरफ। 13 परमात्मा-दूत बोले, “बहन, तुम
क्यों रो रही हो?”

मरियम ने उत्तर दिया, “वे मेरे प्रभु को ले गए और मैं नहीं जानती कि
उन्हें कहाँ रखा है।” 14 यह कहकर वह पीछे मुड़ी और प्रभु येशु को खड़े
हुए देखा, पर उसने उन्हें नहीं पहचाना कि वह प्रभु येशु हैं। 15 प्रभु येशु ने
उससे कहा, “नारी, तुम क्यों रो रही हो? तुम किसे ढूँढ़ रही हो?”

वह प्रभु येशु को माली समझ कर बोली, “भैयाजी, तुम यदि उन्हें ले गए
हो तो मुझे बता दो कि उन्हें कहाँ रखा है। मैं उस स्थान पर जाकर उनको
उठा ले आऊँगी।”

16 प्रभु येशु ने उससे कहा, “मरियम!” वह मुड़ी और यहूदी भाषा में

बोली, “रब्बूनी!” अर्थात् “हे मेरे गुरु!”।
17 प्रभु येशु ने कहा, “मुझे मत रोको, क्योंकि मैं अब तक अपने पिता
परमात्मा के पास ऊपर नहीं गया हूँ। मेरे भाइयों के पास जाओ और उनसे
कहो कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने परमात्मा और तुम्हारे
परमात्मा के पास ऊपर जा रहा हूँ।”
18 मगदलावासी मरियम ने जाकर शिष्यों से कहा, “मैंने प्रभु को देखा है,
और उन्होंने मुझसे ये बातें की हैं!”

शिष्यों को दर्शन

मत्तिया 28:16-20; मरकस 16:14-18; लूकस 24:36-49

19 उसी दिन अर्थात् हफ्ते के पहले दिन शाम को जब शिष्य यहूदी
धर्मगुरुओं के डर के कारण घर के दरवाजे बंदकर अंदर बैठे हुए थे, तब
प्रभु येशु आए और उनके बीच खड़े हो गए। उन्होंने शिष्यों से कहा,
“प्रणाम!” 20 यह कहकर प्रभु येशु ने उन्हें अपने हाथ और अपनी पसली
दिखाई। शिष्य अपने प्रभु को देखकर खुशी से भर गए। 21 प्रभु येशु ने
उन्हें शांति का आशीर्वाद दिया और कहा, “जैसे पिता परमात्मा ने मुझे
भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूँ।” 22 तब उन्होंने उन पर श्वास फूँका
और कहा, “पवित्र आत्मा प्राप्त करो! 23 जिनके पाप तुम माफ करोगे वे
माफ किए जाएँगे और जिनके पाप तुम माफ नहीं करोगे, वे माफ नहीं
होंगे।”

एक शिष्य की आशंका

24 जब प्रभु येशु आए तब बारह राजदूतों में से एक अर्थात् थोमस, जो
जुड़वाँ भी कहलाता था, वहाँ नहीं था। 25 अन्य शिष्यों ने उससे कहा,
“हमने प्रभु को देखा है।”

वह बोला, “जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और कीलों के स्थान में अपनी अँगुली न डालूँ और उनकी पसली में अपना हाथ न डालूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।”
26 आठ दिन के बाद शिष्य फिर घर में थे और थोमस उनके साथ था। दरवाज़े बंद थे फिर भी प्रभु येशु अंदर आ गए और उनके बीच खड़े होकर उन्होंने कहा, “प्रणाम!” 27 तब उन्होंने थोमस से कहा, जहाँ कील ठोकी गईं थी “अपनी अँगुली मेरे हाथों में डालो , अपना हाथ लाओ और मेरी पसली में डालो जहाँ भाला मारा गया था। शक करना छोड़ो और विश्वास करो।”
28 थोमस बोल उठा, “हे मेरे प्रभु! हे मेरे परमात्मा!”
29 प्रभु येशु ने उससे कहा, “तुमने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, किंतु यह उनके लिए भला है जिन्होंने मुझे कभी नहीं देखा तो भी आस्था रखते हैं।”
30 प्रभु येशु ने शिष्यों के सामने अपने परमात्मा पुत्र होने के बहुत से चमत्कारी चिन्ह दिखाए थे जो इस पुस्तक में शामिल नहीं हैं। 31 परंतु जिन चमत्कारी चिन्हों को शामिल किया गया है उसका कारण यह है कि तुम विश्वास करो* कि प्रभु येशु राजा मसीहा और परमात्मा-पुत्र हैं और उनमें आस्था रखने के द्वारा तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा।

21

समुद्र के किनारे पर शिष्यों को दर्शन

*20:31 *तुम विश्वास करो*- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “तुम विश्वास करते रहो” लिखा है।

[1] इसके बाद प्रभु येशु तिबिरियस झील के किनारे पर अपने शिष्यों को
फिर दिखाई दिए। यह इस प्रकार हुआ -- [2] शिमौन पतरस, थोमस जो
जुड़वाँ भी कहलाता था, नतनएल जो गलील प्रदेश के काना नगर का
निवासी था, ज़बदियस के दो पुत्र और अन्य दो शिष्य एक साथ थे।
[3] शिमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं मछली पकड़ने जाता हूँ।"
वे बोले, "हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं।" वे चल पड़े और नाव पर चढ़े,
पर वे उस रात कुछ न पकड़ सके।
[4] सुबह हो ही रही थी और प्रभु येशु झील के किनारे पर खड़े हुए थे,
परंतु शिष्यों ने नहीं पहचाना कि वह येशु हैं। [5] प्रभु येशु ने उनसे कहा,
"बच्चो! क्या तुम्हारे पास कुछ मछलियाँ हैं?"
उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं।"
[6] वह बोले, "नाव की दाईं ओर जाल डालो तो मछलियाँ पाओगे।"
उन्होंने जाल डाला और जाल में इतनी अधिक मछलियाँ फँस गईं कि वे
जाल को खींच न पाए।
[7] तब वह शिष्य जो प्रभु येशु का प्रिय था, पतरस से बोला, "यह तो प्रभु
हैं!" यह सुनते ही कि वह प्रभु हैं उसने अपने कपड़े को कमर पर बांध
लिया क्योंकि उसने इसे काम करते समय उतार दिया था, और फिर वह
झील में कूद गया। [8] परंतु अन्य शिष्य मछलियों से भरे जाल को खींचते
हुए नाव में किनारे पर आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, केवल
सौ मीटर दूर थे। [9] जब वे झील के किनारे पर आए तब उन्होंने कोयले
की आग पर रखी हुई मछली और रोटी देखी।
[10] प्रभु येशु ने उनसे कहा, "जो मछलियाँ तुमने अभी पकड़ी हैं उनमें से
कुछ लाओ।" [11] शिमौन पतरस ने नाव पर चढ़कर एक सौ तिरपन
बड़ी-बड़ी मछलियों से भरा जाल किनारे पर खींचा और इतनी मछलियाँ

होने पर भी जाल न फटा।
12 प्रभु येशु ने कहा, “आओ, भोजन करो।” शिष्यों में से किसी की
हिम्मत नहीं हुई कि उनसे पूछे, “आप कौन हैं?” क्योंकि वे जानते थे कि
वह प्रभु हैं। 13 प्रभु येशु ने उन्हें रोटी और मछली दी। 14 मरकर जी उठने
के बाद यह तीसरी बार प्रभु येशु ने शिष्यों को दर्शन दिया था।

पतरस को अंतिम आदेश

15 भोजन के बाद प्रभु येशु ने शिमौन पतरस से कहा, “शिमौन, योहन के
पुत्र,* क्या इनके मुकाबले में तुम मुझसे अधिक प्रेम करते हो?”
वह बोला, “जी हाँ प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।”
प्रभु येशु ने कहा, “तो मेरे शिष्यों की देखभाल करो जो भेड़ों के समान
हैं।” 16 प्रभु येशु ने दूसरी बार फिर कहा, “शिमौन, योहन के पुत्र, क्या तुम
मुझसे प्रेम करते हो?”
उसने उत्तर दिया, “जी हाँ प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता
हूँ।”
प्रभु येशु बोले, “तो मेरे शिष्यों कि देखभाल करो जो भेड़ों के समान हैं।”
17 उन्होंने तीसरी बार कहा, “शिमौन, योहन के पुत्र, क्या तुम मुझसे प्रेम
करते हो?”
पतरस दुखी हुआ, क्योंकि प्रभु येशु ने तीसरी बार पूछा कि क्या तुम
मुझसे प्रेम करते हो। वह बोला, “प्रभु, आप सबकुछ जानते हैं। आप
जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।”
प्रभु येशु ने कहा, “तो मेरे शिष्यों की देखभाल करो जो भेड़ों के समान

---

*__21:15__ ***योहन के पुत्र***- इसके स्थान पर कुछ हस्तलिपियों में “योना के पुत्र” लिखा
है--21:16, 17 ऐसे भी।

हैं।
18 “मैं तुम पर सत्य प्रकट करता हूँ, जब तुम जवान थे तब तैयार होकर
जहाँ चाहते, स्वयं जाते थे। पर जब तुम बूढ़े होगे तब अपने हाथ
फैलाओगे और कोई दूसरा, तुम्हें बांधेगा और जहाँ तुम न चाहोगे, वहाँ
तुम्हें ले जाएगा।” 19 ऐसा प्रभु येशु ने यह सूचित करने के लिए कहा कि
पतरस किस प्रकार की मृत्यु से परमात्मा का तेज प्रकट करेगा।

गुरु येशु और उनका प्रिय शिष्य

इतना कहकर गुरु येशु बोले, “तुम मेरे पीछे आओ।”
20 पतरस ने मुड़कर उस शिष्य को पीछे आते हुए देखा जो प्रभु का प्रिय
था और जो भोजन करते समय प्रभु येशु के पास बैठा हुआ था और
जिसने पूछा था, “प्रभु, वह कौन है जो आपको पकड़वाएगा?” 21 उसे
देखकर पतरस ने प्रभु येशु से पूछा, “प्रभु, इसका क्या होगा?”
22 प्रभु येशु ने कहा, “यदि मेरी इच्छा हो कि वह मेरे आने तक जीवित
रहे तो इससे तुम्हें क्या? तुम मेरे पीछे आओ।” 23 यह बात गुरु-भाइयों
और बहनों में फैल गई कि वह शिष्य कभी नहीं मरेगा। परंतु प्रभु येशु ने
यह नहीं कहा था कि वह नही मरेगा, परंतु यह कि “यदि मेरी इच्छा हो
कि वह मेरे आने तक जीवित रहे, तो इससे तुम्हें क्या?”
24 यही वह शिष्य है, जो इन बातों के बारे में गवाही दे रहा है और
जिसने इन बातों को लिखा है। और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच
है।
25 और भी अनेक कार्य हैं जो प्रभु येशु ने किए। उनमें से यदि हर एक के
बारे में लिखा जाता तो मैं सोचता हूँ कि जितनी पुस्तकें लिखी जातीं, वे
संसार भर में भी न समातीं।